राजभाषा ई-गृह पत्रिका

रेल सुधा

अंक: 39

सितंबर 2023

दक्षिण मध्य रेलवे

रेल सुधा

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक

श्री अरुण कुमार जैन
महाप्रबंधक

मार्गदर्शक

श्री जी.के. द्विवेदी
मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रधान मुख्य सिगनल व दूरसंचार इंजीनियर

संपादक

डॉ. श्याम सुंदर साहु
उप महाप्रबंधक(राजभाषा)

सह संपादक

श्री एम. के. नागराजु
राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय

सहायता

डॉ. (श्रीमती) जी.राजेश्वरी
वरिष्ठ अनुवादक/प्र.का

श्रीमती एम.मंजुला
वरिष्ठ अनुवादक/प्र.का

श्री पी. राज किरण
वरिष्ठ अनुवादक/प्र.का.

श्रीमती किरण तिकू
कनिष्ठ अनुवादक/प्र.का.

श्री अरविंद प्रसाद
कार्यालय अधीक्षक/प्र.का

श्री शिरीष अवस्थी
कनिष्ठ अनुवादक/प्र.का.

मुख्य जन संपर्क अधिकारी कार्यालय

श्री एम. हिदायतुल्लाह बेग
कार्यालय अधीक्षक/प्र.का
(डिजाइनर)

श्री बी. श्रीकर
सहायक डिजाइनर

महाप्रबंधक संदेश

मुझे अपार हर्ष का अनुभव हो रहा है कि दक्षिण मध्य रेलवे, राजभाषा विभाग की हिंदी ई-पत्रिका 'रेल सुधा' के अगले अंक का प्रकाशन किया जा रहा है.

मैं इस पत्रिका के सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई देता हूं कि उन्होंने अपनी लेखनी से इस पत्रिका को सुसज्जित किया. यह आपकी हिंदी के प्रति विशेष रुचि का परिचायक है.

इस पत्रिका के प्रकाशन के लिए मैं राजभाषा संगठन को बधाई देता हूं तथा इसके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूं.

(अरुण कुमार जैन)
महाप्रबंधक

मुख्य राजभाषा अधिकारी का शुभकामना संदेश

दक्षिण मध्य रेलवे राजभाषा के कार्यान्वयन के क्षेत्र में अखिल रेल स्तर पर अपना एक विशेष स्थान रखती है. 'ग' क्षेत्र में होने के बावजूद इस रेलवे के अधिकारियों व कर्मचारियों को हिंदी का अच्छा ज्ञान है तथा वे हिंदी के प्रति विशेष रुचि रखते हैं.

यह पत्रिका अधिकारियों व कर्मचारियों की सर्जनात्मक क्षमता को अच्छा अवसर प्रदान करती है कि वे हिंदी में मूल रूप से लेखन कार्य कर सकें तथा सुधी पाठकों की भी हिंदी के प्रति रुचि बनी रहे. इस अंक में प्रकाशित रचनाएं मनोरंजक व ज्ञानवर्धक हैं.

अधिकारियों व कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा को उजागर करने में यह पत्रिका निश्चित रूप से सफल होगी, इस विश्वास के साथ मैं दक्षिण मध्य रेलवे की हिंदी ई-पत्रिका 'रेल सुधा' की निरंतर सफलता की कामना करता हूं.

(जी.के. द्विवेदी)
मुख्य राजभाषा अधिकारी
एवं प्रमुख मुख्य सिगनल व दूरसंचार इंजीनियर

संपादक की कलम से .....

'हिंदी दिवस' के शुभ अवसर पर हिंदी पखवाडा के दौरान 'रेल सुधा' हिंदी ई-पत्रिका का तीसरा अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे हर्ष और गौरव का अनुभव हो रहा है. मुझे खुशी है कि इस पत्रिका में अधिक संख्या में अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने रचनाएं भेजकर अपना योगदान दिया है. इससे यह सिद्ध होता है कि हिंदी के प्रति उनकी काफी रुचि है.

सितंबर का महीना हमारे लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि संविधान सभा ने 14 सितंबर, 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था. इसीके स्मरण में 'हिंदी दिवस' मनाया जाता है, जो इस वर्ष माननीय गृह मंत्री की अध्यक्षता में पुणे में मनाया गया. 15 सितंबर को अखिल रेल हिंदी सम्मेलन का आयोजन किया गया, जिसमें केंद्र सरकारी कार्यालयों के सभी अधिकारियों ने सहभागिता की.

भारतीय नागरिक होने के नाते हम सबका दायित्व बनता है कि हम हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें तथा इसका प्रचार-प्रसार बढाएं. इस पत्रिका के माध्यम से हमारा यही प्रयास रहा है कि हम अपने अधिकारियों और कर्मचारियों में हिंदी के प्रति रुचि को बढाएं, जिससे वे अपने सरकारी कामकाज में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें. रेल कर्मियों की साहित्यिक प्रतिभा को प्रदर्शित करने का यह एक अच्छा माध्यम है. राजभाषा विभाग की ओर से प्रकाशित यह पत्रिका राजभाषा हिंदी के प्रयोग-प्रसार में निश्चित ही प्रेरणादायक रही है. मुझे विश्वास है कि भविष्य में अधिकाधिक अधिकारी और कर्मचारी अपनी रचनाओं से इस पत्रिका को समृद्ध करेंगे.

इस अंक में जीवन के सत्य को उजागर करनेवाली कहानियां, भाव प्रधान कविताएं, जीवनोपयोगी व बोधप्रद लेख आदि का समावेश है. कुछ कर्मचारियों व उनके परिवारजनों द्वारा किए चित्रांकन को भी इसमें शामिल किया गया है.

मुझे आशा है कि यह पत्रिका आपको पसंद आएगी. इसमें और निखार लाने के लिए आपके सुझावों की प्रतीक्षा रहेगी.

(डॉ श्याम सुंदर साहु)

उप महाप्रबंधक (राजभाषा)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख/कविता	रचनाकार/कवि का नाम	पृष्ठ सं.
1.	गौरवमय प्रदर्शन, आसमान को छूती प्रगति	श्री अरुण कुमार जैन, महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे	1-6
2.	वायु गुणवत्ता	श्री मनीष अग्रवाल, मंडल रेल प्रबंधक, गुंतकल मंडल	7-11
3.	रथ यात्रा से पहले	डॉ.श्याम सुंदर साहु, उप महाप्रबंधक (राजभाषा), दक्षिण मध्य रेलवे	12-14
4.	दक्षिण मध्य रेलवे पर भारतीय रेल की शान - वंदे भारत एक्सप्रेस और भारत गौरव पर्यटक गाड़ी	श्री एम.के.नागराजु, राजभाषा अधिकारी/प्रधान कार्यालय	15-17
5.	जनमानस की भाषा हिन्दी	श्री मुकेश कुमार नागर, उप मुइंजी/सडिमका/तिरुपति	18
6.	अनकही	डॉ. शारदा, वमंचिअधि/विजयवाडा	19
7.	अध्ययन-नई दुनिया का प्रवेश द्वार	श्रीमती नुसरत एम.मंद्रुपकर, जनसंपर्क अधिकारी,विजयवाडा मंडल	20-21
8.	प्रकृति	श्री आशा महेश कुमार, राजभाषा अधिकारी विजयवाडा मंडल	22
9.	अपनी रेल	श्री मुकेश कुमार वर्मा, आशुलिपिक,मंरेप्र/का/ विजयवाडा मंडल	23
10.	राष्ट्र धर्म सर्वोपरि	श्री अजय बी. याज्ञिक, लेखा सहायक, प्रमुख वित्त सलाहकार कार्यालय	24-26
11.	कूट नीति	श्रीमती जी.जी. संध्या, लेखा सहायक, प्रमुख वित्त सलाहकार कार्यालय	27-28
12.	क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान,मौलाअली के अभूतपूर्व 50 स्वर्णिम वर्ष	श्री राजेश कुमार पांडे, अनुदेशक/परिचालन क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, मौलाअली	29-32
13.	सफलता के मूल मंत्र	श्री आर.वी.एच. प्रसाद, वरि.अनुदेशक/वाणिज्य, क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान,मौलाअली	33-35
14.	फिर वही बात	श्री मो. रूहुल अमीन, कार्यालय अधीक्षक/ क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली	36
15.	मेरा आखिरी खत	श्रीमती एस. साई सुधा वरिष्ठ अनुदेशक/ परिचालन/क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली	37-38
16.	कृत्रिम मेधा से बेरोजगार पर प्रभाव	श्री जी.वी.माधव,निजी सचिव/II प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक/का/सिकंदराबाद	39-40
17.	खोज	श्रीमती ललिता सायन्ना, कार्यालय अधीक्षक/ प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर	41
18.	यादों के अरमां	श्री शिरीष अवस्थी कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय	42
19.	दक्षिण भारत	श्रीमती डी.मंजुलता राव कार्यालय अधीक्षक,प्रमुख मुख्य विद्युत इंजीनियर	43-44
20.	सच्ची मित्रता	श्री मेराज अहमद कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय	45-46
21.	गुलामी की मनोदशा	श्रीमती वफा समरीन, पत्नी/ श्री मेराज अहमद कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय/सिकंदराबाद	47-49
22.	शिव खोड़ी की यात्रा	सुश्री जया, वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर/ मुप्रधि/ निर्माण/कार्यालय	50-52

क्र.सं.	लेख/कविता	रचनाकार/कवि का नाम	पृष्ठ सं.
23.	स्तब्ध	श्री वी.श्रीपति शर्मा, वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी(लेखा)/ विसमुलेधि/नि/का	53-54
24.	रामनगरः विलक्षण, पर्यटकीय, अपूर्व अनुभव -एक शहर ऐसा भी	सुश्री सोम अंकिता, आशुलिपिक,ग्रेड-III मुप्रधि/ निर्माण/कार्यालय	55-56
25.	पछतावा	श्री ई देवराज रेड्डी, कनिष्ठ अनुवादक, मुप्रधि/ निर्माण/कार्यालय	57-58
26.	उम्र	श्री भरत लाल राम, कार्यालय अधीक्षक, प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक/का	59
27.	तिरंगे का कफन होगा	श्री रौशन कुमार, तकनीशियन-III,वसेइंजी/एमवपी/का/विजयवाडा	60-61
28.	किस्मत	श्री गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव “गोलू”, कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग,विजयवाडा	62
29.	दुष्ट विचारःबुध्दिमान निर्णय	श्री जी.विजय वर्धन, वसेइंजी/सवमाडि/का/बिट्रगुंटा/विजयवाडा	63
30.	कूचिपूडि नृत्य	कु.पी.साई चरित श्री, पुत्री श्री पी.श्रीनाथ,सकाधि/विजयवाडा	64
31.	किस गफलत में है तू.....	श्री अभिषेक कुमार, तकनीशियन-III, वसेइंजी/वि/एमवपी/का/ओंगोल	64
32.	अंतिम मधु प्याला	श्री अजय कुमार पाण्डेय, सिकंदराबाद मंडल	65-66
33.	जिंदगी के रास्ते	श्री अनुज कुमार, वाणिज्य निरीक्षक,वमंवाप्र/का/सिकंदराबाद मंडल	67
34.	रेखाएँ	श्री दीप नारायण चौहान, कनिष्ठ अनुवादक,राजभाषा अनुभाग,सिकंदराबाद मंडल	68-69
35.	गर्मी की आहट, एक नया चौकीदार	श्री प्रणय कुमार सिंह, कनिष्ठ अनुवादक,राजभाषा अनुभाग,सिकंदराबाद मंडल	70-71
36.	प्रेमचंद एवं प्रेम	श्री सूर्यांक गुप्ता, सहायक कार्य प्रबंधक, रायनपाडु कारखाना	72-75
37.	मेरा बचपन	श्री पी. कोटेश्वर राव, कार्यालय अधीक्षक,कार्मिक शाखा,रायनपाडु कारखाना	76
38.	मेरी कलम से	श्री प्रिंस कुमार, तकनीशियन-III, रायनपाडु	77-84
39.	जिंदगी	श्री पैडिराजु.पी., तकनीशियन, वे-5 रायनपाडु	85
40.	दृष्टिकोण	श्री योगेश दीपराज भस्मे, कनिष्ठ अनुवादक, गुंटूर मंडल	86-89
41.	श्री शैलम देवस्थानम	श्री अमित कुमार, टीएम-II/दोनकोंडा, गुंटूर मंडल	90
42.	बुढ़िया दादी	श्रीमती पूजा कुमारी साव, पत्नी/श्री सतीश कुमार महतो, कनि.अनुवादक, मेट्टुगुडा कारखाना	91
43.	इंसान न होता	श्री सतीश कुमार महतो, कनि.अनुवादक, मेट्टुगुडा कारखाना	92
44.	माँ	श्री दीपक कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक, गुंतकल मंडल	93
45.	ट्रैकमैन का जीवन	श्री नरेश कुमार महावर, तकनीशियन-II,वसेइंजी/का/वाटर वर्कस/गुंतकल मंडल	94

क्र.सं.	लेख/कविता	रचनाकार/कवि का नाम	पृष्ठ सं.
46.	दोस्ती	श्री ऋषिकेश मीना, वरिष्ठ लिपिक,वरि.मंवाप्र/का/गुंतकल मंडल	95
47.	हिमालय की पुकार	श्री रोबिन कुमार, कार्यालय अधीक्षक,वरिमंकाधि/का/गुंतकल मंडल	96
48.	मेरी द्वारिका नगरी की यात्रा	श्री ज्ञान रंजन, मेल एक्सप्रेस ट्रेन मैनेजर,तिरुपति/गुंतकल मंडल	97
49.	राजभाषा संबंधी गतिविधियां	राजभाषा विभाग, प्रधान कार्यालय	98-106
50.	चित्रांकन	कुमारी शेक शमा, नवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय पुत्री श्री शेक खाजा, रसायन व धातुविज्ञान	107
51.	चित्रांकन	श्रीमती ललिता सायन्ना कार्यालय अधीक्षक/प्रमुयांजी/का/सिकंदराबाद	108
52.	चित्रांकन	सुश्री बी.ज्ञानिता, 10वीं कक्षा सुपुत्री श्रीमती पी.पावनी कनिष्ठ अनुवादक, विजयवाडा	109
53.	चित्रांकन	सुश्री अनन्या, 5वीं कक्षा सुपुत्री श्री अखिलेश कुमार स्टेशन अधीक्षक, विजयवाडा	110
54.	चित्रांकन	श्री अरुण कुमार तकनीशियन ट्रैक मशीन, गुंतकल	111

पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी विचार हैं.
इससे संपादक और राजभाषा विभाग का सहमत होना अनिवार्य नहीं है.

दक्षिण मध्य रेलवे

गौरवमय प्रदर्शन, आसमान को छूती प्रगति

श्री अरुण कुमार जैन

महाप्रबंधक

दक्षिण मध्य रेलवे ने 2 अक्तूबर, 1966 को अपनी स्थापना से अब तक एक लंबी दूरी की यात्रा तय की है. आज, जब भारतीय रेलवे रेल यात्रा में विश्व स्तर के मानकों को प्राप्त करने के कगार पर है, दमरे हाल ही में समाप्त हुए वित्तीय वर्ष 2022-2023 में दर्ज किए गए अब तक के सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादन के बल पर एक प्रमुख जोन के रूप में उभरने का दावा कर सकती है. तेलंगाना, आंध्र प्रदेश, महाराष्ट्र और कर्नाटक के साथ-साथ तमिलनाडु व मध्य प्रदेश के कुछ हिस्सों में व्याप्त 06 मंडलों के नेटवर्क के साथ इस जोन ने सभी दिशाओं में भारत को जोड़ने वाली रेलवे होने की छवि अर्जित की है. हालांकि, दमरे हमेशा अपने कार्यनिष्पादन में हर वर्ष सुधार करती रही है, परंतु पिछला वित्तीय वर्ष, अब तक का सबसे अच्छा परिणाम प्राप्त करने के मामले में गौरवशाली रहा है. यह और भी अधिक गौरव की बात है, क्योंकि इस उपलब्धि को उस भीषण महामारी के दौर के पश्चात् हासिल किया गया है, जिसने रेलवे को बुरी तरह से प्रभावित किया था. "जब अंधेरा घना हो जाए तो सुबह होती जानिए" इस कहावत ने दमरे के प्रत्येक कार्यबल को प्रेरित किया और उसने समग्र सफलता प्राप्त करने की दिशा में अपनी पूरी ताकत लगा दी.

सबसे अधिक राजस्व, सबसे अधिक लाभ

वित्तीय वर्ष 2022-23, दमरे के इतिहास में अर्जित सकल मूल राजस्व के मामले में अब तक का सबसे श्रेष्ठ वर्ष रहा है, जो वर्ष 2018-19 में अर्जित 15,708.85 करोड़ रु. के पिछले सर्वश्रेष्ठ अर्जन को 3,264.29 करोड़ रु. से पार करते हुए 18,973.14 करोड़ रु. तक पहुंचा दिया. इस वर्ष के दौरान माल और यात्री राजस्व दोनों की उल्लेखनीय वृद्धि का मानदंड इस प्रेरणादायक बढोत्तरी में सहायक सिद्ध हुआ है. इसके साथ ही, सुनियोजित वित्तीय योजना ने वर्ष 2022-23 में दमरे को 88.23% का उत्कृष्ट परिचालनिक अनुपात दर्ज करने में सक्षम बनाया, जो वर्ष 2021-22 में दर्ज 98.25% से काफी कम है.

माल और यात्री गाडियों का निष्पादन रिकॉर्ड स्तर की ऊंचाई पर पहुंचा

दमरे ने अपने सुदृढ माल और यात्री यातायात पहलुओं की क्षमता को अधिकतम करने पर पैनी नजर रखते हुए अपनी परिचालनिक योजनाओं को एक नई दिशा दी है. देश की फिर से गति पकडी आर्थिक प्रगति का लाभ उठाते हुए, दमरे ने माल ढुलाई को इष्टतम करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जिससे वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान अब तक का उच्चतम 131.854 मैट्रिक टन का लदान किया गया तथा इससे 13,051.10 करोड़ रु. का राजस्व अर्जित

हुआ. पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान यात्री यातायात से अर्जित राजस्व भी सबसे अधिक रहा है और पहली बार 5,140.70 करोड़ रु. का अर्जन दर्ज करते हुए 5,000 करोड़ रु. के कीर्तिमान को पार किया है. राजस्व के अन्य स्रोतों में, टिकट जांच निष्पादन से हुई आय अब तक की सबसे अधिक रही और वर्ष 2022-23 में 211.26 करोड़ रु. तक पहुंच गई. दमरे के सामग्री प्रबंधन स्कंध ने रद्दी की बिक्री से 391 करोड़ रु. की अब तक की सर्वश्रेष्ठ आय के साथ राजस्व अर्जन में अपना योगदान दिया.

महामारी के दौर से उबरने के बाद, रेल उपयोगकर्ताओं की पूर्ण संतुष्टि हेतु सेवा करने की दक्षिण मध्य रेलवे की प्रतिबद्धता ने मुख्य रूप से सुविधाजनक और आरामदायक यात्रा विकल्प प्रदान करने पर ध्यान केंद्रित किया है, चाहे वह नियमित यात्रा हो या तीर्थयात्रा/पर्यटन. वर्ष 2022-23 के दौरान 3,543 से अधिक विशेष गाडियां चलाई गई हैं, जबकि गाडियों की क्षमता को बढ़ाने के लिए 318 अतिरिक्त कोच नियमित गाडियों में जोडे गए. रेल मंत्रालय की 'भारत गौरव गाडियां' की अवधारणा को जनता से अद्‌भुत प्रतिक्रिया मिली.

दमरे पर पहली वंदे भारत एक्सप्रेस

भारतीय रेलवे पर सेमी हाई स्पीड रेल युग की शुरुआत करनेवाली पूर्ण रूप से स्वदेशी वंदे भारत एक्सप्रेस को दमरे पर सिकंदराबाद और विशाखपट्टणम को जोडने के लिए प्रारंभ किया गया है. इसकी शुरुआत ने भारत की पहली रेलगाडी के प्रारंभ की यादों को ताजा कर दिया क्योंकि पूरे मार्ग पर इस गाडी को उमडती भीड ने अत्यधिक उत्साह से हाथ हिलाते हुए स्वागत किया था. संतोषजनक बात यह है कि अब तक यह सेवा 100% से अधिक ऑक्यूपेंसी के साथ जारी है.

अब तक की सर्वश्रेष्ठ अवसंरचना विकास के लिए योजना

रेल मंत्रालय द्वारा परिकल्पित अंतिम छोर तक कनेक्टिविटी और अत्यंत महत्वपूर्ण परियोजनाओं को प्राथमिकता देने के लिए अवसंरचना विकास को दमरे द्वारा एक सुनियोजित योजना के अंतर्गत संचालित किया गया है. जोन ने, अपनी रेल प्रणाली के अंतर्गत 383 किमी नई लाइनों का निर्माण कर, रेल लाइनों के दोहरीकरण और तिहरीकरण के कार्य को पूरा कर, अपने नेटवर्क में रिकार्ड उच्चतम अवसंरचना जोडकर इतिहास रचा है. इस ज़ोन को नवंबर, 2022 में हमारे माननीय प्रधान मंत्री का आतिथ्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जब उन्होंने 54 किमी लंबी भद्राचलम-सत्तुपल्ली नई रेल लाइन परियोजना को राष्ट्र को समर्पित किया. यह परियोजना तेलंगाना के इस कोयला समृद्ध क्षेत्र से उपयोगकर्ता के गंतव्य स्थल तक कोयला परिवहन की दृष्टि से महत्वपूर्ण है. भावनापलेम और सत्तुपल्ली के बीच 16 किमी लंबे इस

परियोजना के अंतिम हिस्से को मई 2022 में पूरा किया गया, ताकि यह परियोजना चालू हो सके. इसी तरह, कृष्णा-मगनूर के बीच 13 किमी के अंतिम हिस्से को फरवरी 2023 में पूरा किया गया, जिससे महबूबनगर - मुनीराबाद नई लाइन परियोजना के दमरे के हिस्से का कार्य पूरा हो गया. इसके अलावा, मनोहराबाद - गजवेल नई लाइन परियोजना के एक हिस्से के रूप में कोडकंडला - दुद्देडा के बीच 21 किमी नई लाइन भी बिछाई गई.

पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान 151 कि.मी. लाइनों के दोहरीकरण का कार्य पूरा किया गया. गुत्ती-धर्मवरम दोहरीकरण परियोजना के हिस्से के रूप में 29 किमी लाइन का दोहरीकरण कार्य, विजयवाड़ा-गुडिवाडा-भीमवरम-नरसापुर के हिस्से के रूप में निडदवोलु - अरावली के बीच 40 किमी का दोहरीकरण कार्य के साथ गुडिवाड़ा-मचिलीपट्णम और निडदवोलु - भीमवरम दोहरीकरण पूरा करने से संबंधित परियोजनाएं पूरी हो गई हैं. इसके अलावा, गुंटूर-गुंतकल दोहरीकरण परियोजना के हिस्से के रूप में 79 किमी का दोहरीकरण, गुत्ती में 3 किमी दूरी के बाईपास लाइन का कार्य भी पूरा हो चुका है.

विजयवाड़ा - गूडूर तिहरीकरण परियोजना के हिस्से के रूप में 100 किमी, काजीपेट-बल्हारशाह तिहरीकरण परियोजना के हिस्से के रूप 46 किमी और काजीपेट-विजयवाड़ा तिहरीकरण परियोजना के हिस्से के रूप में 36 किमी के साथ पिछले वित्तीय वर्ष में कुल 182 किमी के तिहरीकरण का कार्य पूरा किया गया.

विद्युतीकरण संबंधी उपलब्धि

पिछले वित्तीय वर्ष में 1017 मार्ग किमी रेल लाइनों के विद्युतीकरण के साथ, रेल लाइनों के विद्युतीकरण कार्य को बहुत अधिक बढावा मिला है. विद्युतीकरण परियोजनाओं का एक बड़ा हिस्सा पूरा हो चुका है, जबकि शेष सेक्शनों का कार्य पूरे होने की कगार पर है. यह दमरे की और एक उपलब्धि है तथा वर्ष 2022-23 में भारतीय रेल के सभी जोनों में सबसे अधिक होने के कारण हमारे लिए गौरव की बात है. एक मजबूत तंत्र के कारण, दमरे वर्ष 2023 के अंत तक रेल लाइनों के पूर्ण विद्युतीकरण के लक्ष्य को प्राप्त करने की राह पर अग्रसर है.

रेलवे स्टेशनों का कायापलट

रेल मंत्रालय की प्रमुख परियोजना "रेलवे स्टेशनों का प्रमुख उन्नयन" को दमरे पर बड़े पैमाने से शुरू किया गया है. हर श्रेणी के यात्रियों के लिए विश्व स्तरीय सुविधाएं प्रदान करना इस प्रयास का उद्देश्य है. दमरे ने समय पर पूरा करने के लिए ईपीसी मोड के तहत वर्ष 2022-23 के दौरान सिकंदराबाद, नेल्लूर और तिरुपति रेलवे स्टेशनों का पुनर्विकास कार्य शुरू किया है. इन पुनर्विकास योजनाओं पर 1,100 करोड़ रुपये से अधिक व्यय होने की संभावना है. अत्याधुनिक

सुविधाओं के साथ इन तीनों रेलवे स्टेशनों का आमूल चूल परिवर्तन किया जाएगा और उत्कृष्ट वास्तु सौंदर्य के साथ यात्रियों के पहुंचमार्गों को सुगम बनाया जाएगा. औरंगाबाद, जालना, विजयवाड़ा और रेणिगुंटा सहित कई अन्य रेलवे स्टेशनों को जल्द ही अपग्रेड करने की प्रक्रिया जारी है. रेल उपयोगकर्ता इस महत्वाकांक्षी स्टेशन उन्नयन परियोजना से भविष्य में कई वर्षों तक लाभान्वित होने की उम्मीद रख सकते हैं.

दमरे समाज के प्रति अपनी प्रतिबद्धता के रूप में जहां भी आवश्यक हो, जनता की जरूरतों पर ध्यान देती है. इस तथ्य से हमारी संजीदगी का पता चलता है कि सड़क यातायात को सुव्यवस्थित बनाने और जनता को सुविधा प्रदान करने हेतु वर्ष 2022-23 के दौरान पूरे रेल नेटवर्क में विभिन्न स्थानों पर रिकॉर्ड संख्या में 93 निचले सड़क पुलों, 11 ऊपरी सड़क पुलों का निर्माण किया गया है. स्टेशनों पर रेल उपयोगकर्ताओं की बढ़ती जरूरतों को पूरा करने के लिए यात्री सुख-सुविधाओं में वृद्धि करना भी दमरे की प्राथमिकता रही है. वर्ष 2022-23 के दौरान 29 स्टेशनों पर हाई-लेवल प्लैटफार्मों का निर्माण किया गया है, 32 स्टेशनों पर नए ऊपरी पैदल पुल बनाए गए हैं, 09 स्टेशनों पर प्लैटफॉर्मों की लंबाई बढ़ाई गई है तथा विभिन्न रेलवे स्टेशनों पर 06 एस्कलेटर और 16 लिफ्ट चालू किए गए हैं. इन सभी प्रावधानों के कारण रेल यात्रा और अधिक सुविधाजनक बन गई है.

कोच अनुरक्षण सुविधाओं का विकास

'यात्री पहले' – आदर्श वाक्य रेल यात्रा की गुणवत्ता को बेहतर बनाने में दक्षिण मध्य रेलवे के एजेंडा का मूलमंत्र है. कोच अनुरक्षण सुविधाओं का विकास कार्य हमारी एक निरंतर प्रक्रिया है. वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान जालना और औरंगाबाद स्टेशनों पर कोच अनुरक्षण अवसंरचना में काफी वृद्धि हुई है. जोन के लिए यह बड़े सम्मान की बात है कि माननीय रेल मंत्री द्वारा रेल राज्य मंत्री महोदय की उपस्थिति में जालना और औरंगाबाद स्टेशनों पर कोच अनुरक्षण सुविधा का शिलान्यास किया गया. इसके अंतर्गत पिट लाइन, ऑटोमेटिक कोच वाशिंग प्लांट, सर्विस बिल्डिंग आदि का निर्माण किया जाएगा परिणामस्वरूप मराठवाड़ा क्षेत्र से नई गाड़ी सेवाओं की शुरुआत होगी.

संरक्षा और गति के लिए नेटवर्क का सुदृढ़ीकरण

देश भर में रेल सेवाएं, नई सेमी हाई स्पीड कॉरिडारों के विकास और भारत गौरव - वंदे भारत एक्सप्रेस गाड़ियां की शुरुआत के साथ संरक्षा और गति के क्षेत्र में नई ऊंचाई को छूनेवाली है. इस पहल के अंतर्गत दक्षिण मध्य रेलवे के स्वर्णिम चतुर्भुज और स्वर्णिम विकर्ण मार्गों को कवर करने वाले सभी सेक्शन और सिकंदराबाद-काजीपेट के बीच उच्च घनत्व वाले नेटवर्क सेक्शन को अपग्रेड किया गया और 130 किमी प्रति घंटे की अधिकतम गति पर चलने के अनुकूल बनाया

गया है. 1743 मार्ग किमी लंबी इन सेक्शनों में अब 130 किमी प्रति घंटे की गति पर गाड़ी चलाने के लिए मंजूरी मिली हुई है.

टक्कर निवारण प्रणाली 'कवच' को लागू करने में दमरे अग्रणी रही है और इसकी दक्षता एवं लागत प्रभाविता ने भारतीय रेल को वैश्विक रेल मानचित्र पर प्रमुख स्थान पर पहुंचाया है. इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के साथ-साथ अवसंरचना का विकास और सिगनलिंग प्रणाली का विस्तार किया गया है जिसे नवीनतम उन्नत इलेक्ट्रॉनिक इंटरलॉकिंग (ईआई) प्रणालियों की स्थापना से बढ़ावा मिला है. दमरे ने वर्ष 2022-23 के दौरान पूरे ज़ोन में रिकॉर्ड स्तर पर 66 ईआई प्रणालियां स्थापित करने की अब तक की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि हासिल की है.

इष्टतम कोच अनुरक्षण

जोन पर कोचों और वैगनों की आवधिक ओवर हॉलिंग (पीओएच) को प्राथमिकता दी जा रही है. दमरे के तीन कारखानों ने वर्ष 2022-23 के दौरान अब तक का सबसे अच्छा पीओएच दर्ज किया है. लालागुडा सवारीडिब्बा कारखाना ने 1776 कोचों का सर्वश्रेष्ठ आउट टर्न हासिल किया है, जो रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित लक्ष्य से अधिक है. तिरुपति सवारीडिब्बा मरम्मत कारखाना ने वर्ष के दौरान अब तक की सर्वश्रेष्ठ उपलब्धि 1270 कोच आउट टर्न दर्ज किया है. रायनपाडु मालडिब्बा कारखाना ने अब तक का सर्वाधिक 6300 वैगन पीओएच आउट टर्न दर्ज किया है, जो इस संबंधी लक्ष्य से 78 वैगन अधिक है.

सुरक्षा सर्वोपरि

दमरे के रेल सुरक्षा बल (आरपीएफ) को रेल संपत्ति के साथ-साथ यात्रियों की सुरक्षा संबंधी विभिन्न मुद्दों के कुशल संचालन के लिए रेल उपयोगकर्ताओं से प्रशंसा प्राप्त हुई है. 'मिशन जीवन रक्षा' को सफलतापूर्वक लागू किया गया है, इसके अंतर्गत ड्यूटीरत रेसुब कर्मियों ने गाड़ियों में चढ़ने/उतरने वाले यात्रियों की सुरक्षा के प्रति पूरी तरह सतर्क रहते हुए वर्ष 2022 के दौरान लगभग 25 व्यक्तियों की जान बचाई है. मादक पदार्थों की तस्करी पर अंकुश लगाने की चुनौती का ईमानदारी से पालन करते हुए वर्ष 2022-23 के दौरान 8.13 करोड़ रुपये से अधिक मूल्य के मादक पदार्थों (गांजा) को जब्त किया गया है. रेसुब ने 'ऑपरेशन नन्हें फरिश्ते' के तहत मानवीयता दर्शाते हुए परिवारों से बिछड़े या गुमशुदे बच्चों का बचाव किया है. वर्ष 2022-23 के दौरान रेसुब द्वारा रिकॉर्ड संख्या में 1,199 बच्चों को सुरक्षित आश्रय प्रदान किया गया है. दमरे के सुरक्षा स्कंध द्वारा की गई कुछ अन्य पहलों ने भी इस वर्ष को अत्यंत सफल बनाने में विशेष योगदान दिया है.

ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार

दक्षिण मध्य रेलवे को राष्ट्रीय स्तर पर ऊर्जा संरक्षण उपायों का प्रवर्तक माना जाता है, जिसने विभिन्न स्तरों पर सम्मान प्राप्त किया है. इस वर्ष भी, दमरे ने राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कारों में क्रमशः काचीगुडा और गुंतकल रेलवे स्टेशनों के लिए प्रथम और द्वितीय पुरस्कार प्राप्त किया है, इसके अलावा परिवहन और रेलवे स्टेशन कोटि में कई अन्य स्टेशनों और सेवा भवनों के लिए योग्यता प्रमाण पत्र भी प्राप्त किया है. इस ज़ोन ने तेलंगाना सरकार से 04 राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कार और आंध्र प्रदेश सरकार से 02 राज्य स्तरीय ऊर्जा संरक्षण पुरस्कारों के अलावा भारतीय उद्योग परिसंघ से 03 ऊर्जा पुरस्कार भी प्राप्त किया है. इन पुरस्कारों से जोन को एक वास-योग्य भविष्य हेतु महत्वपूर्ण आंदोलन को आगे बढ़ाने की प्रेरणा मिलेगी.

रोज़गार मेला, नौकरी पाने का सुअवसर

राष्ट्रव्यापी भर्ती अभियान के हिस्से के रूप में, विभिन्न मंत्रालयों और सरकारी क्षेत्रों में 10 लाख कर्मियों की भर्ती के लिए श्री नरेन्द्र मोदी, माननीय प्रधान मंत्री द्वारा "रोजगार मेला" शुरू किया गया. दक्षिण मध्य रेलवे ने सिकंदराबाद में सफलतापूर्वक इस कार्यक्रम का आयोजन किया है, जिसके दौरान माननीय केंद्रीय संस्कृति और पर्यटन मंत्री श्री जी. किशन रेड्डी के करकमलों से नए रिक्रूटों को नियुक्ति पत्र प्रदान किए गए हैं. रेलवे इस बृहद सरकारी आउटरीच कार्यक्रम हेतु नोडल विभाग होने के कारण, बहुत बड़े पैमाने पर आयोजित ऐसे कार्यक्रमों से देश के युवाओं को सशक्त बनाने हेतु दमरे की प्रतिबद्धता उजागर हुई है.

जीवंतता और गतिशीलता, हमारी पहचान

दक्षिण मध्य रेलवे पर विद्यमान सौहार्दपूर्ण औद्योगिक संबंध, इस क्षेत्र में मौजूद अनुकूल नियोक्ता-कर्मचारी संबंधों का प्रमाण है. इस सद्भाव के परिणामस्वरूप पिछले वित्तीय वर्ष के दौरान हमने उत्कृष्ट उपलब्धियां प्राप्त की हैं.

दक्षिण मध्य रेलवे महिला कल्याण संगठन की सामाजिक सेवा गतिविधियां, अंतर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर की सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को तैयार करने में दक्षिण मध्य रेलवे स्पोर्ट्स एसोसिएशन की भूमिका, दक्षिण मध्य रेलवे ललिता कला समिति द्वारा आयोजित सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि ने जोन की छवि को और अधिक निखारा है.

दमरे, रेल मंत्रालय द्वारा निर्धारित लक्ष्यों के अनुरूप क्रांतिकारी दृष्टिकोण को अपनाते हुए राष्ट्र की परिवहन जीवन रेखा के प्रहरी के रूप में दृढ़ता के साथ अपने मार्ग पर अग्रसर है. रेल उपयोगकर्ताओं की आकांक्षाओं को पूरा करना हमारे लिए प्रेरणा स्रोत रहा है. परिणामस्वरूप जोन ने अपने परिचालन की विभिन्न पहलुओं में अब तक का सर्वश्रेष्ठ कार्यनिष्पादन दर्ज किया है. सकारात्मक परिवर्तन रूपी पंख पसार कर उड़ने के उत्साह से प्राप्त अंतर्निहित शक्ति ही हमारी सफलता का आधार स्तंभ है.

****

वायु गुणवत्ता

मनीष अग्रवाल
मंडल रेल प्रबंधक, गुंतकल

सुप्रीम कोर्ट की सख्त टिप्पणी, 'दिल्ली रहने लायक नहीं रह गई, नरक से भी बदतर हो गई है'

----- न्यूज़ पेपर क्लिपिंग 25 नवंबर 2019

1.0 प्रस्तावना

भारत हवा और पानी के प्रदूषण से मुक्त एक स्वच्छ वातावरण बनाने लिए सतत प्रतिबद्ध है। सतत विकास लक्ष्यों (एसडीजी) के तहत पर्यावरणीय स्थिरता पर लक्षित लक्ष्यों के दायरे में पर्यावरण संरक्षण के लिए भारत की प्रतिबद्धताएं और दायित्व इस तथ्य से प्रकट होती हैं कि वायु और जल प्रदूषण पर एक अलग कानून सहित कई प्रशासनिक और नियामक उपाय देश में लंबे समय से लागू हैं। जून 1972 में स्टॉकहोम में आयोजित मानव पर्यावरण पर संयुक्त राष्ट्र सम्मेलन में लिए गए निर्णयों को लागू करने के लिए संविधान की धारा 253 के अंतर्गत वायु (प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण) अधिनियम, 1981, अधिनियमित किया गया।

मानव कल्याण में वृद्धि के संदर्भ में सतत विकास, भारत के विकास दर्शन का एक अभिन्न अंग है। हालांकि, एक विशाल देश और उभरती अर्थव्यवस्था, अपनी बढ़ती आबादी और व्यापक गरीबी के साथ, एसडीजी के तहत गरीबी और भूख उन्मूलन से जुड़ी अपनी विभिन्न अन्य महत्वपूर्ण प्रतिबद्धताओं को पूरा करने हेतु हमारा देश भारी चुनौतियों का सामना कर रहा है भारत पिछले कुछ दशकों से तेज औद्योगिक गतिविधियों से गुजर रहा है। औद्योगीकरण और शहरीकरण संबंधित वृद्धि ने प्रदूषण के मुद्दों में कई गुना वृद्धि की है, विशेष रूप से वायु प्रदूषण में।

हाल के वर्षों में, मध्यम और छोटे शहरों ने भी प्रदूषण में वृद्धि देखी है एवं वह भी गैर-प्राप्ति शहरों में तेजी से परिलक्षित हो रही है। वायु प्रदूषण का प्रभाव केवल स्वास्थ्य तक ही सीमित नहीं है, बल्कि कृषि और मनुष्यों की सामान्य भलाई, फूलों और जीवों की आबादी तक फैला हुआ है। इसके अलावा, चूंकि वायु प्रदूषण एक स्थानीय घटना नहीं है, इसलिए इसका प्रभाव स्रोत से दूर शहरों और कस्बों में भी महसूस किया जाता है, जिससे बहु-क्षेत्रीय सिंक्रनाइज़ेशन के अलावा अंतर-राज्य और अंतर-शहर समन्वय के माध्यम से क्षेत्रीय स्तर की पहल की आवश्यकता पैदा होती है।

2.0 वायु प्रदूषण

वायु प्रदूषण वातावरण में ऐसे पदार्थों की उपस्थिति है जो मनुष्यों और अन्य जीवों के स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है या जलवायु या सामग्री को नुकसान पहुंचाती है। वायु प्रदूषक कई प्रकार के होते हैं, जैसे कि गैस (अमोनिया, कार्बन मोनोऑक्साइड, सल्फर डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन, कार्बन डाइऑक्साइड और क्लोरोफ्लोरोकार्बन आदि) कण (कार्बनिक और अकार्बनिक) और जैविक अणु।

वायु प्रदूषण बीमारियों, एलर्जी और यहां तक कि इंसान की मौत का कारण बन सकता है, अन्य जीवों जैसे कि जानवरों और खाद्य फसलों को और प्राकृतिक पर्यावरण (जलवायु परिवर्तन, ओजोन रिक्तीकरण या आवास क्षरण) या निर्मित पर्यावरण (एसिड रेन) को नुकसान पहुंचा सकता है। मानव गतिविधि और प्राकृतिक प्रक्रियाएं दोनों ही वायु प्रदूषण उत्पन्न करती हैं। वायु प्रदूषकों के प्रति व्यक्तिगत प्रतिक्रियाएं व्यक्ति के संपर्क में आने वाले प्रदूषक के प्रकार, जोखिम की डिग्री और व्यक्ति की स्वास्थ्य स्थिति और आनुवंशिकी पर निर्भर करती हैं।

3.0 प्रदूषक

वायु प्रदूषक वायु में मौजूद पदार्थ है जो मानव और पारिस्थितिकी तंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है। पदार्थ ठोस कण, तरल बूंदें या गैस हो सकते हैं। प्रदूषक प्राकृतिक उत्पत्ति या मानव निर्मित हो सकता है। प्रदूषकों को प्राथमिक या द्वितीयक के रूप में वर्गीकृत किया जाता है।

प्राथमिक प्रदूषक आमतौर पर ज्वालामुखी विस्फोट से राख जैसी प्रक्रियाओं द्वारा उत्पन्न होते हैं। अन्य उदाहरणों से वाहन के निकास से मोनो ऑफसाइड गैस या कारखानों से निकलनेवाली सल्फर डाइऑसाइड शामिल हैं।

द्वितीयक प्रदूषक प्रत्यक्ष रूप से उत्सर्जित नहीं होते हैं। बल्कि वे हवा में तब बनते हैं जब प्राथमिक प्रदूषक प्रतिक्रिया करते हैं या परस्पर क्रिया करते हैं। ग्राउंड लेवल ओजोन एक द्वितीयक प्रदूषक का एक प्रमुख उदाहरण है।

कुछ प्रदूषक प्राथमिक और द्वितीयक दोनों प्रकार के हो सकते हैं ये दोनों सीधे उत्सर्जित होते हैं और अन्य प्राथमिक प्रदूषकों से बनते हैं। मानव गतिविधि द्वारा वातावरण में उत्सर्जित प्रदूषकों में निम्नलिखित शामिल हैं:

3.1 कार्बन डाइऑक्साइड (सीओ 2)

3.2 सल्फर ऑक्साइड (एसओएक्स)

3.3 नाइट्रोजन आक्साइड (एनओएक्स)

3.4 कार्बन मोनोआक्साइड (सीओ)
3.5 वाष्पशील कार्बनिक यौगिक (वीओसी)
3.6 पार्टिकुलेट मैटर

3.7 क्लोरोफ्लोरोकार्बन (सी.एफ.सी.)
3.8 अमोनिया
3.9 गंध: जैसे कि कचरा, सीवेज, और औद्योगिक प्रक्रियाओं से
3.10 रेडियोधर्मी प्रदूषक
3.11 द्वितीयक प्रदूषक
3.12 लघु वायु प्रदूषक

4.0 प्रदूषकों के स्रोत निम्न हो सकते हैं:

4.1 मानवजनित (मानव निर्मित) स्रोत: ये अधिकतर ईंधन के जलने से संबंधित होते हैं।
4.1.1 स्थिर स्रोत:
(क) जीवाश्म ईंधन बिजलीघरों के धुएँ के ढेर
(ख) निर्माण सुविधाएं: मशीनरी और उपकरण विनिर्माण और निर्माण क्षेत्र
(ग) अपशिष्ट भस्मक के साथ-साथ कुप्रबंधित कचरे की खुली और अनियंत्रित आग।
(घ) फर्नेस और अन्य प्रकार के ईंधन जलाने वाले हीटिंग डिवाइस
(च) ईंधन और बायोमास का दहन
4.1.2 मोबाइल स्रोतों में मोटर वाहन, रेलगाड़ियाँ, समुद्री जहाज और विमान शामिल हैं।
(क) ईंधन में मिलावट
(ख) ट्रैफिक जाम
4.1.3 कृषि और वन प्रबंधन में नियंत्रित बर्न प्रथाएं।
4.2 दहन के अतिरिक्त अन्य प्रक्रियाओं के स्रोतः
* पेंट, हेयर स्प्रे, वार्निश, एरोसोल स्प्रे और अन्य सॉल्वेंट्स से निकलने वाला धुंआ
* लैंडफिल में अपशिष्ट का जमाव, जो मीथेन उत्पन्न करता है।
* सैन्य संसाधन, जैसे कि परमाणु हथियार, जहरीली गैसें रोगाणु युद्ध और रॉकेट्री ।
4.3 प्राकृतिक स्रोत-
* प्राकृतिक स्रोतों से निकलने वाली धूल- आमतौर पर भूमि के बड़े क्षेत्रों में बहुत कम वनस्पति या वनस्पति नहीं होती है।
* मिथेन, जानवरों द्वारा भोजन के पाचन से उत्सर्जित होता है, उदाहरण के लिए मवेशी ।
* पृथ्वी की पपड़ी के भीतर रेडियोधर्मी क्षय से निकलने वाली रेडॉन गैस ।
* जंगल की आग से निकलने वाला धुंआ और कार्बन मोनोऑक्साइड ।

* कुछ क्षेत्रों में वनस्पति, गर्म दिनों में पर्यावरण की दृष्टि से महत्वपूर्ण मात्रा में वाष्पशील कार्बनिक यौगिकों (वीओसी) का उत्सर्जन करती है ये वीओसी प्राथमिक मानवजनित प्रदूषकों के साथ प्रतिक्रिया करते हैं विशेष रूप से, एनओएक्स, एसओ और मानवजनित कार्बनिक कार्बन यौगिक द्वितीयक प्रदूषकों की मौसमी धुंध उत्पन्न करती हैं। ब्लैक गम, चिनार, ओक और विलो वनस्पति के कुछ उदाहरण हैं जो प्रचुर मात्रा में वीओसी का उत्पादन कर सकते हैं। इन प्रजातियों से वीओसी उत्पादन कम प्रभाव वाली पेड़ प्रजातियों की तुलना में ओजोन के स्तर प्रभाव पर आठ गुना अधिक होता है।

* ज्वालामुखीय गतिविधि, जिससे सल्फर, क्लोरीन और राख के कण आदि पैदा होते हैं ।

5.0 एक्सपोजर-

वायु प्रदूषण जोखिम प्रदूषक के जोखिम और उस प्रदूषक के संपर्क में आने का ए प्रदूषण के जोखिम को एक व्यक्ति के लिए, कुछ समूहों के लिए (जैसे किसी देश में या बच्चे), या पूरी आबादी के लिए व्यक्त किया जा सकता है। एक वायु प्रदूषक के सा प्रत्येक सेटिंग में बिताए गए समय और प्रत्येक उपसमूह के लिए संबंधित इनहेलेशन दरों के संबंध में वायु प्रदूषक की सांद्रता को एकीकृत करना चाहिए, जो उपसमूह सेटिंग में है और विशेष गतिविधियों में लगा हुआ है।

6.0 केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी)-

केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड (सीपीसीबी) पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (एमओईएफसीसी) के तहत एक सांविधिक संगठन है। यह एक फील्ड फॉर्मेशन के रूप में कार्य करता है और पर्यावरण (संरक्षण) अधिनियम, 1986 के प्रावधानों के तहत पर्यावरण और वन मंत्रालय को तकनीकी सेवाएं भी प्रदान करता है। बोर्ड पर्यावरण आकलन और अनुसंधान आयोजित करता है। यह क्षेत्रीय कार्यालयों, आदिवासी और स्थानीय सरकारों के परामर्श से विभिन्न पर्यावरण कानूनों के तहत राष्ट्रीय मानकों को बनाए रखने के लिए जिम्मेदार है। इसके पास पानी और हवा की गुणवत्ता की निगरानी करने और निगरानी डेटा बनाए रखने की जिम्मेदारियां हैं। एजेंसी विभिन्न प्रकार के स्वैच्छिक प्रदूषण रोकथाम कार्यक्रमों और ऊर्जा संरक्षण प्रयासों में उद्योगों और सरकार के सभी स्तरों के साथ भी काम करती है। यह जल और वायु प्रदूषण को रोकने और नियंत्रित करने के लिए केंद्र सरकार को सलाह देता है। यह केंद्र शासित प्रदेशों की सरकारों को औद्योगिक और जल और वायु प्रदूषण के अन्य स्रोतों पर भी सलाह देता है।

7.0 राष्ट्रीय वायु गुणवता निगरानी कार्यक्रम (एनएएमपी)-

वायु गुणवत्ता की निगरानी वायु गुणवत्ता प्रबंधन का एक महत्वपूर्ण अंग है। राष्ट्रीय वायु निगरानी कार्यक्रम (एनएएमपी) की स्थापना वर्तमान वायु गुणवत्ता की स्थिति और प्रवृत्तियों को निर्धारित करने और वायु गुणवत्ता मानकों को पूरा करने के लिए उद्योगों और अन्य स्रोतों से प्रदूषण को नियंत्रित और विनियमित करने के उद्देश्य से की गई है। यह औद्योगिक साइटिंग और टाउन प्लानिंग के लिए आवश्यक बैकग्राउंड एयर क्वालिटी डेटा

भी प्रदान करता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड; प्रदूषण नियंत्रण समितियां; राष्ट्रीय पर्यावरण इंजीनियरिंग अनुसंधान संस्थान (एनईईआरआई), नागपुर की मदद से निगरानी की जाती है।

8.0 भारत के वायु गुणवत्ता मानक--

भारत के 2022 में नए राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानकों (NAAQS) को फिर से स्थापित करने की संभावना है। नए मानक अधिक प्रदूषकों में कारक होंगे, जिसमें कण पदार्थ के अति सूक्ष्म घटक शामिल हैं जो PM2.5 से नीचे आते हैं।

9.0 वायु गुणवत्ता सूचकांक (एक्यूआई) -

यह वायु गुणवत्ता की रिपोर्ट करने के लिए एक सूचकांक है। प्रत्येक प्रदूषक के लिए 100 का एक्यूआई मान आम तौर पर एक परिवेशी वायु सांद्रता से मेल खाता है जो सार्वजनिक स्वास्थ्य की सुरक्षा के लिए अल्पकालिक राष्ट्रीय परिवेश वायु गुणवत्ता मानक के स्तर के बराबर होता है। एक्यूआई मान 100 या उससे कम होता है जिसे आमतौर पर संतोषजनक समझा जाता है। जब एक्यूआई मान 100 से ऊपर होता है, तो वायु की गुणवत्ता अस्वस्थ होती है. पहले तो कुछ संवेदनशील समूहों के लोगों के लिए, फिर सभी के लिए एक्यूआई मान अधिक हो जाते हैं।

10.0 राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता सूचकांक

वायु गुणवत्ता सूचकांक लोगों को वायु गुणवत्ता की स्थिति के प्रभावी संचार के लिए एक साधन है, जिसे समझना आसान है। यह विभिन्न प्रदूषकों के जटिल वायु गुणवत्ता डेटा को एकल संख्या (सूचकांक मान), नामकरण और रंग में बदल देता है। एक्यूआई की छह श्रेणियां हैं, अर्थात् अच्छा, संतोषजनक, मध्यम प्रदूषित, खराब, बहुत खराब और गंभीर । इनमें से प्रत्येक श्रेणी का निर्णय वायु प्रदूषकों के परिवेशी सांद्रण मूल्यों और उनके संभावित स्वास्थ्य प्रभावों (स्वास्थ्य ब्रेकप्वाइंट के रूप में जाना जाता है) के आधार पर किया जाता है।

11.0 चूंकि खराब वायु गुणवत्ता का व्यक्तियों के स्वास्थ्य पर धीमा और लंबे समय तक प्रभाव पड़ता है, इसलिए डेटा परिपक्वता और दीर्घकालिक स्थानीयकृत शमन रणनीतियों के लिए एक पूर्वनिर्धारित कार्य क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर निश्चित वायु गुणवता सेंसर के क्लाउड कनेक्टेड नेटवर्क प्रदान करने के लिए एक रोड मैप के बारे में सोचा जा सकता है।

******

रथ यात्रा से पहले

डॉ.श्याम सुंदर साहु
उप महाप्रबंधक(राजभाषा)

रुक्मिणी जी के साथ विवाह के पश्चात, नई नवेली दुल्हन के साथ जल क्रीड़ा करते हुए पानी में इतना भीग गए कि भगवान जगन्नाथ श्रीकृष्ण जी को बुखार हो गया। करीबन दो हफ्ते तक बिस्तर पर पड़े रहे। वैद्य जी ने बड़ी मेहनत से दशमूलारिष्ट काढ़ा पिला कर उन्हें स्वस्थ किया। शरीर की दुर्बलता अभी गई नहीं थी। हमेशा पूर्णचंद्र की तरह चमकने वाला उनका श्रीमुख राहूग्रस्त की तरह मलिन पड गया था। वैद्यराज ने सलाह दी कि थोड़ा हवापानी बदल दीजिए, जल्दी स्वस्थ हो जाएंगे। हितैषियों ने भी वैद्यराज के कथन का समर्थन किया। दाऊजी ने तो यहां तक कह दिया कि राजकाज की चिंता छोड़ो, इसे लोकनाथ जी संभाल लेंगे। चलो दोनों कहीं थोड़ा घूम आएं। दोनों भाइयों को इकट्ठे घूमे अरसे हो गए हैं। बल दाऊ की बात सुनकर श्रीकृष्ण जगन्नाथ की आंखों के सामने बचपन के दृश्य साकार हो गए। कितने सुखद थे वे दिन। बालसखाओं के साथ जंगल में घूमना, यमुना के तट पर कदंब के पेड़ के नीचे बैठकर सारी चिंताओं से परे तन्मय होकर बांसुरी बजाना। चांदनी रात में यमुना की रुपहली सिकत शैया पर गोपियों के साथ बिताए वे सुखद दिन और राधा..... राधा की याद आते ही जैसे हृदय से एक टीस-सी उठी और एक लंबी आह निकल गई। मथुरा के लिए रवाना होने से पहले की वह रात याद आ गई। चांदनी रात में यमुना पुलीन पर राधा के साथ बिताई वह आखिरी रात। विदाई बेला। अपने आंसुओं को छिपाते हुए राधा ने कहा था, तुम जगन्नाथ हो कृष्ण, जगत के तारनहार। करोडों लोगों की उम्मीद तुम्हीं पर टिकी है। तुम्हें जाना ही होगा।

जगन्नाथ जी को खामोश देख बलदेव जी ने फिर से पूछा—"क्या हुआ, कहां खो गए?"

"कहीं नहीं"-- जगन्नाथ जी ने कहा। "सोच रहा था कि कहां जाना ठीक रहेगा।"

बलदेव जी ने कहा—"चलो मौसी जी के यहां चलते हैं। बड़ा मजा आएगा।"

"मजा तो आएगा ही कादंबरी रस वहां बहुतायत से मिलता जो है"– कृष्ण ने कहा। "इसमें बुराई क्या है, सुबह-शाम दो-दो चषक तुम भी ले लेना, सारी कमजोरी दूर हो जाएगी। वह कोई मादक पेय थोड़े ही है बलवर्धक आयुर्वेदिक औषधि है, पूछो वैद्यजी से।"

"ठीक है दाऊ, आप कह रहे हैं, तो सही ही होगा, वैद्यजी से पूछने की क्या जरूरत।"

"तो चलो तैयारी कर लो, आषाढ द्वितीया के दिन अच्छा मुहूर्त है, निकल पड़ते हैं, दोनों भाई। सुभद्रा बहन भी कई बार इच्छा जता चुकी है, जाने का। उसे भी साथ ले लेते हैं।"

"क्या भाभी जी भी जाएंगी साथ।"

"मरवाओगे क्या? अगर उसे साथ लेकर जाते हैं, तो हो गए सैर-सपाटे। हर काम में टोकाटोकी करेगी, यह न करो, वह न करो। ये न पहनो वह न पहनो।"

"सीधे से बोलिए न कि कादंबरी चषक को हाथ भी लगाने न देगी"– कृष्ण ने तंज कसा।

"यह बात नहीं है कान्हा.. पीना चाहूं तो, मुझे कौन रोक सकेगा? बस, इन राजघराने की औपचारिकताओं से तंग आ गया हूं। न अपने मन से कुछ कर सकते हैं, न मन से खा सकते हैं और न मन से पी सकते हैं। हमें क्या पहनना है, वे तय करेंगे, हमें क्या खाना है वे तय करेंगे, हमें कहां जाना है वे तय करेंगे। कहलाते हैं तो, ये लोग हमारे सेवक, परंतु काम करते हैं मालिक जैसा।"

"बात सच तो है दाऊ, परंतु क्या करें, इस संसार में आए हैं, तो इसकी रीति रिवाज का ध्यान तो रखना ही होगा। और आप यह क्यों भूल रहे हैं कि हम अब देहधारी नहीं है। कलयुग के नियम के अनुसार हम अपनी शक्ति का अब प्रत्यक्ष प्रयोग नहीं कर सकते। केवल मनुष्य के विवेक को जगा सकते हैं। उसे प्रेरित कर सकते हैं, किसी से जबरदस्ती कुछ नहीं करा सकते।"

"छोड़िए, इन बातों को। अब यह बताइए कि योजना क्या बनाई है?"

"इसमें योजना क्या बनाना? यह तो पहले से बनी बनाई है। इसी द्वितीया के दिन निकल पड़ेंगे। और हां, पत्नियों को साथ लेकर मत जाना, बड़े घर की बेटियां हैं, वहां देहाती लोगों के बीच सामंजस्य कर नहीं पाएंगी।"

नियत योजना के अनुसार दोनों भाई अपनी बहन सुभद्रा के साथ मौसी के घर गए। घर में बता कर गए थे कि 6 दिन में लौट आएंगे। परंतु जब नियत तिथि को नहीं लौटे तो, लक्ष्मी जी, उनकी खोज खबर लेने पहुंच गईं। उस समय दोनों भाई, अपने नागा मित्रों के साथ उनकी वेशभूषा में वन विहार पर गए हुए थे। जब अपनी ननद सुभद्रा से लक्ष्मी जी को यह बात मालूम हुई, तो वे आग बबूला हो गईं और गुस्से से उनके रथ को तोड़ ताड़ कर वापस चली आईं।

जब दोनों भाई वन विहार से वापस आए, तो अपनी बहन से सारी बातें सुनकर घबरा गए। क्योंकि वे जानते हैं कि लक्ष्मी जी का गुस्सा कितना खतरनाक है। वे एक बार इसे देख भी चुके हैं और भुगत भी चुके हैं। उन से पंगा लेना कहीं भारी न पड़ जाए, इसलिए वे तुरंत निकल पडे।

वापस आए तो उन्हें देखकर लक्ष्मी जी ने मंदिर का दरवाजा बंद करवा दिया। उन्हें मजबूरन रात भर रथ पर ही रहना पड़ा। बहुत समझा-बुझाकर द्वार खुलवाया और क्षीरमोहन (जिसे आजकल रसगुल्ला कहा जाता है) भेंट देकर उन्हें संतुष्ट किया।

.....

इस घटना को हुए सैकड़ों वर्ष बीत चुके हैं, परंतु उनके सेवक अभी भी इस परंपरा को दोहराना चाहते हैं। अरे भाई, गलती एक बार होती है, बार-बार नहीं। दोनों भाई सपनों में कई बार अपने सेवकों से कह चुके हैं कि ऐसा मत करो । अब तो अपनी पत्नियों को साथ लेकर जाने दो। लेकिन उनकी सुनता कौन है?

एक बार जब उन्होंने रथ बनाने के नाम पर हर साल सैकड़ों पेड़ों को काट देने पर आपत्ति उठाई, तो नेतागिरि करने वाले एक सेवक ने तो यहां तक कह दिया, आप तो भगवान हैं, आपको किसी चीज की जरूरत नहीं है लेकिन हम तो इंसान हैं । हर साल रथ नहीं बनेंगे, तो माता लक्ष्मी देवी किसे तोडेंगी। अगर रथ नहीं टूटेंगे तो हमारे घर के फर्नीचर कैसे बनेंगे?

आप अपना काम करो और हमें अपना काम करने दो। नहीं तो हम हडताल पर चले जाएंगे और आप भूखे रह जाओगे। ऐसे तो आप को भूख-प्यास से क्या लेना देना। आप तो भगवान हो, अशरीरी हो। आपको भूख थोडे ही लगती है। ये तो हम प्राणियों को सताने के लिए, तुम देवताओं के हथकंडे हैं। लेकिन ध्यान रहे, आपके भक्तों को पता चला कि आप भूखे हो, तो उन्हें अपार कष्ट होगा। भक्तों को कष्ट हुआ तो..... आगे और बताने की जरूरत नहीं .. आप तो अंतर्यामी ... भक्त वत्सल हो।

.....

आठ बज गए हैं .... उठ जाइए .... आज रथयात्रा है ... मंदिर भी जाना है .... पत्नी जी की आवाज से अचानक नींद टूटी .... और हड़बड़ा कर उठ गया। सेवक की बात अधूरी रह गई और मेरा सपना भी ।

दक्षिण मध्य रेलवे पर
भारतीय रेल की शान – वंदे भारत एक्सप्रेस, भारत गौरव पर्यटक गाडी

श्री एम. के.नागराजु
राजभाषा अधिकारी, प्रधान कार्यालय

वंदे भारत एक्सप्रेस

वंदे भारत एक्सप्रेस, जिसे ट्रेन 18 के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय रेल द्वारा चलाई जाने वाली एक भारतीय सेमी-हाई-स्पीड इंटरसिटी इलेक्ट्रिक मल्टीपल-यूनिट गाड़ी है. वंदे भारत एक्सप्रेस तेज गति से विकासोन्मुख भारत का प्रमाण है और आत्म निर्भर भारत का सच्चा उदाहरण है. इसे यात्रियों को आधुनिक और आरामदायक यात्रा अनुभव प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है. वंदे भारत एक्सप्रेस की शुरूआत ने अंतरराष्ट्रीय मान्यता और प्रशंसा अर्जित की है. इसे तकनीकी चमत्कार और रेलवे के क्षेत्र में भारत की प्रगति का प्रतीक माना जा रहा है. गाड़ी की ऊर्जा दक्षता, शून्य कार्बन उत्सर्जन और यात्री-केंद्रित डिजाइन के लिए अत्यधिक सराहना की जा रही है.

सिकंदराबाद से विशाखापट्टणम तक चलने वाली पहली वंदे भारत एक्सप्रेस गाडी को 15 जनवरी, 2023 को सिकंदराबाद रेलवे स्टेशन से रवाना किया गया. यह गाडी सिकंदराबाद, वरंगल, विजयवाड़ा और विशाखापट्टणम के लोगों के लिए तेज कनेक्टिविटी प्रदान करती है और इस क्षेत्र के सामाजिक-आर्थिक विकास में सहायक है. इन दो शहरों के बीच विशेष रूप से दिन के समय की यात्रा के लिए यह पहली अत्याधुनिक गाडी है तथा तेलुगु राज्यों में चलने वाली पहली वंदे भारत गाडी है.

दूसरी वंदे भारत एक्सप्रेस ऐतिहासिक शहर भाग्यनगर को भगवान श्री वेंकटेश्वर धाम तिरुपति से जोड़ती है। यह गाड़ी तेलंगाना और आंध्र प्रदेश के विभिन्न हिस्सों से भगवान के दर्शन और उनके आशीर्वाद पाने हेतु तिरुमला की यात्रा करने वाले तीर्थ यात्रियों के लिए चलाई गयी है. यह गाड़ी मार्ग में तेलंगाना के नलगोंडा और आंध्र प्रदेश के गुंटूर, ओंगोल और नेल्लूर जैसे शहरों को जोड़ते हुए सिकंदराबाद और तिरुपति के बीच 661 किलोमीटर की दूरी को साढे आठ घंटों में तय करती है.

इसकी प्रमुख विशेषताएं निम्न प्रकार हैं :

1. **गति** : वंदे भारत एक्सप्रेस भारत की सबसे तेज़ चलने वाली गाड़ियों में से एक है, जो 180 किमी/घंटा (112 मील प्रति घंटे) तक की गति तक पहुँचने में सक्षम है. इसकी सेमी-हाई-स्पीड क्षमता यात्रा अवधि को काफी कम कर देती है.

2. **उन्नत डिजाइन** : गाड़ी का एरोडॉयनमिक आकार वायु प्रतिरोध और शोर को कम करता है. इसके स्टेनलेस स्टील के कोच हल्के और अधिक टिकाऊ हैं. इसमें स्वचालित दरवाजे, ऑनबोर्ड वाई-फाई, जीपीएस आधारित यात्री सूचना प्रणाली और जैव-शौचालय उपलब्ध हैं.

3. **आरामदायक इंटीरियर** : वंदे भारत एक्सप्रेस एडजस्टेबल हेडरेस्ट और आर्मरेस्ट के साथ आरामदायक बैठने की सुविधा प्रदान करती है. सीटें एर्गोनॉमिक रूप से डिज़ाइन की गई हैं

और पैर रखने के लिए पर्याप्त जगह प्रदान करती हैं. बड़ी-बड़ी खिड़कियों से आसपास के मनोरम दृश्य का आनंद उठाया जा सकता है, जिससे यात्रा का अनुभव और बेहतर होता है.

4. **ऑनबोर्ड सुविधाएं** : गाड़ी आधुनिक एयर कंडीशनिंग प्रणाली से सुसज्जित है जो यात्रियों के लिए सुखद यात्रा सुनिश्चित करती है. इसमें विभिन्न प्रकार के व्यंजनों और स्नैक्स की ऑनबोर्ड खानपान सुविधाएं भी उपलब्ध हैं, जो यात्रा को और सुखद बनाते हैं.

5. **संरक्षा और सुरक्षा** : वंदे भारत एक्सप्रेस यात्रियों की संरक्षा को प्राथमिकता देती है. इसमें आग का पता लगाने और आग की घटनाओं को रोकने के लिए अग्निशामक प्रणाली है. सुरक्षा की दृष्टि से गाड़ी के अंदर और बाहर सीसीटीवी कैमरे लगाए गए हैं. गाड़ी में उन्नत ब्रेक प्रणाली और टक्कर रोधी तकनीक भी हैं.

6. **यात्रा समय में कमी** : वंदे भारत एक्सप्रेस को विभिन्न इंटरसिटी मार्गों पर शुरू किया गया है. यह यात्रा समय को काफी कम करती है. यात्री अपने गंतव्य तक शीघ्र और आसानी से पहुंच सकते हैं.

भारत गौरव पर्यटक गाड़ी

तेलंगाना और आंध्र प्रदेश, दोनों तेलुगु राज्यों से पहली भारत गौरव गाड़ी 18 मार्च, 2023 को सिकंदराबाद स्टेशन से रवाना हुई. स्टेशन परिसर में उत्सव का माहौल था, पारंपरिक तरीके से रेल यात्रियों का स्वागत किया गया. कूचिपुड़ि नर्तक सांस्कृतिक प्रदर्शन करते हुए दोनों तेलुगु राज्यों के विरासत की याद दिला रहे थे. "पुण्य क्षेत्र यात्रा : पुरी-काशी-अयोध्या" नाम की इस गाड़ी का परिचालन भारतीय रेल खानपान और पर्यटन निगम (आईआरसीटीसी) द्वारा किया गया. इस गाड़ी से यात्रा करने वाले पर्यटक तीर्थ यात्रियों के लिए आईआरसीटीसी ने एंड-टू-एंड सेवाएं प्रदान की. इसमें सभी यात्रा सुविधाएं (रेल और सड़क परिवहन दोनों सहित), आवास सुविधा, खानपान व्यवस्था (सुबह की चाय, नाश्ता, दोपहर का भोजन और रात्रि भोजन - ऑन-बोर्ड और ऑफ-बोर्ड दोनों), पेशेवर और मैत्रीपूर्ण टूर एस्कॉर्ट सेवाएं, गाड़ी में सुरक्षा (सभी कोचों में सीसीटीवी कैमरे सहित), सभी कोचों में सार्वजनिक घोषणा सुविधा, यात्रा बीमा तथा यात्रा के दौरान सहायता के लिए आईआरसीटीसी टूर प्रबंधकों की उपस्थिति शामिल हैं.

8 रात/9 दिन की अवधि वाली इस यात्रा के दौरान **पुरी** (भगवान जगन्नाथ मंदिर), **कोणार्क** (सूर्य मंदिर) तथा समुद्र बीच, **गया** (विष्णु पाद मंदिर), **वाराणसी** (काशी विश्वनाथ मंदिर और कॉरिडोर, काशी विशालाक्षी एवं अन्नपूर्णा देवी मंदिर, संध्या गंगा आरती), **अयोध्या** (राम जन्म भूमि, हनुमानगढ़ी और सरयू नदी पर आरती) तथा **प्रयागराज** (त्रिवेणी संगम, हनुमान मंदिर और शंकर विमान मंडपम) जैसे महत्वपूर्ण और ऐतिहासिक स्थानों का दर्शन कराया गया. इस अनोखी पहल में यात्रियों की अपार रुचि देखी गई, दोनों तेलुगु राज्यों में फैले सभी 9 स्टॉपेज स्टेशनों (सिकंदराबाद सहित) के यात्रियों ने इस अवसर का लाभ उठाया.

इस गाड़ी ने तीर्थयात्रियों को व्यक्तिगत यात्रा कार्यक्रम की योजना बनाने की परेशानी से मुक्त करते हुए प्रमुख सांस्कृतिक स्थलों का दर्शन करने का एक अनोखा अवसर प्रदान किया.

आईआरसीटीसी द्वारा पर्यटकों की रुचि के साथ-साथ स्थानों के महत्व को ध्यान में रखते हुए संपूर्ण यात्रा कार्यक्रम की योजना बनाई गई. यह गाड़ी सांस्कृतिक स्थलों का दर्शन करने का एक किफायती, सुरक्षित और अत्यधिक आरामदायक विकल्प प्रदान करती है. भारत गौरव गाड़ी अत्यधिक सुविधाजनक तरीके से पर्यटक यात्रियों की आकांक्षाओं को पूरा करने के साथ-साथ देश में पर्यटन के विकास को प्रमुख रूप से बढ़ावा देती है.

जनमानस की भाषा हिन्दी

मुकेश कुमार नागर
उप मुख्य यांत्रिक इंजीनियर
सवारी डिब्बा मरम्मत कारखाना, तिरुपति

चिड़िया की चह-चह और कोयल की कू-कू में हिन्दी,
मीरा की भक्ति में हिन्दी,
कबीर दास जी के दोहे में हिन्दी,
नानी की लोरी में हिन्दी |

गंगा का पानी है हिन्दी,
जनमानस की भाषा है हिन्दी,
संस्कृत भाषा की बेटी है हिन्दी |

भारत की संस्कृति और संस्कार है हिन्दी,
हमारा अभिमान और स्वाभिमान है हिन्दी |

14 सितंबर और 10 जनवरी को मनाते हिन्दी,
सन 1963 और 1976 से प्रसारित हिन्दी,
क ख ग में विभक्त कर दी हिन्दी,
आओ शत प्रतिशत कर दें हिन्दी |

बापू का स्वप्न था हिन्दी,
आओ हमारा स्वप्न बनाएं हिन्दी,
आओ नई ऊंचाइयों पर पहुचाएं हिन्दी |

अनकही

डॉ. शारदा
वरिष्ठ मंडल चिकित्सा अधिकारी, रेलवे अस्पताल
विजयवाड़ा

हम बोल रहे थे और आप ध्यान से सुन रहे थे।
पर हमें नहीं पता था कि आपका ध्यान हमरी गलतियां पकडने में था।

हम समझा रहे थे और आप नहीं समझ रहे थे,
हमें नहीं पता था कि आप हमें नासमझ मान चुके थे।

हमारा कद छोटा है और आवाज भी कम,
तो क्या हमारी बात का मायना भी छोटा हो गया।

इस बीच पता ही नहीं चला - मन की बातों को सिस्कियां कब पी गई
हां, कभी भोले मन की मीठी आवाज से सच्ची बात सुननी हो तो हमें याद कर लीजिएगा

और हां ! कभी मत पूछिएगा,
आप आज-कल बोलती क्यों नहीं हो?

अध्ययन - नई दुनिया का प्रवेश द्वार

नुसरत एम. मंद्रुपकर
जन संपर्क अधिकारी
विजयवाड़ा मंडल

अध्ययन एक ऐसा विशेष अभ्यास है इसके जरिए एक नई दुनिया, विचार और दृष्टिकोणों का प्रवेश होता है. यह एक कालातीत अभ्यास है जिसे पूरे इतिहास में अनगिनत व्यक्तियों द्वारा संजोया गया है. विभिन्न शैलियों और भाषाओं में तल्लीनता से, पाठक अपने क्षितिज का विस्तार कर सकते हैं और दुनिया की अपनी समझ को समृद्ध कर सकते हैं. यहां, हम उन कारणों का पता लगाते हैं कि विभिन्न भाषाओं और शैलियों में पढ़ने का फायदा क्या है ? इस विविध साहित्यिक परिदृश्यता को कैसे अपनाया जाए?

विभिन्न शैलियों को पढ़ने के प्रमुख लाभों में से एक ऐसा विषय है जो शैलियाँ और कहानी कहने की तकनीकों की एक विस्तृत श्रृंखला का पता लगाने का अवसर प्राप्त होता है. चाहे वह विज्ञान कथाओं की गहराई में उतरना हो, ऐतिहासिक कथाओं की जटिलताओं में डूबना हो या मनोवैज्ञानिक थ्रिलर की पेचीदगियों को उजागर करना हो. प्रत्येक शैली एक अद्वितीय दृष्टिकोण प्रदान करती है जिसके माध्यम से दुनिया को देखा जा सकता है. विविध शैलियों के साथ जुड़कर, पाठक एक बहुमुखी और अनुकूलनीय साहित्यिक तालू विकसित कर सकते हैं, जिससे कहानी कहने के विभिन्न रूपों की सराहना करने की उनकी क्षमता बढ़ जाती है.

इसी तरह, अलग-अलग भाषाओं के पठन से बिल्कुल नया आयाम खुल जाता है. प्रत्येक भाषा की अपनी सांस्कृतिक बारीकियाँ, मुहावरे और साहित्यिक परंपराएँ होती हैं. विदेशी भाषाओं के पठन से पाठक विभिन्न संस्कृतियाँ, समाज और दृष्टिकोणों में अंतर्दृष्टि प्राप्त कर सकते हैं. यह भाषाई विविधता में गुण दोष की विवेचना, पारस्परिक समझ, समानानुभूति को बढ़ावा देता है. इसके अलावा, विभिन्न भाषाओं के पठन से भाषा कौशल, शब्दावली और समग्र संज्ञानात्मक क्षमताओं में सुधार हो सकता है.

विविध पठन की यात्रा शुरू करने के लिए, कुछ रणनीतियाँ अपनाई जा सकती हैं. सबसे पहले, प्रत्येक शैली को खुले दिमाग से समझना आवश्यक है. पूर्वकल्पित धारणाओं से बचें और अनजान विषयों को अपनाएं. अपने आप को विभिन्न शैलियों का पता लगाने की अनुमति दें, यहां तक कि उन शैलियों के बारे में भी जिन्हें आप शुरू में पसंद नहीं करते थे. बुक क्लब, ऑनलाइन फ़ोरम या सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म से जुड़ें जहाँ पाठक विभिन्न शैलियों पर चर्चा करते हैं, पुस्तकों की सिफारिश और समीक्षा भी करते हैं.

जब अलग-अलग भाषाओं में पढ़ने की बात आती है, तो उचित स्तर पर शुरुआत करना महत्वपूर्ण होता है. यदि आप शुरुआत कर रहे हैं, तो सरल भाषा वाली पुस्तकों का चयन करें और धीरे-धीरे अधिक जटिल साहित्य की ओर बढ़ें. समझने में सहायता के लिए द्विभाषी संस्करण, शब्दकोश या भाषा सीखने वाले ऐप्स जैसे संसाधनों का उपयोग करें. जोर से पढ़ना और उच्चारण का अभ्यास करना भी भाषा कौशल को बढ़ा सकता है.

इसके अतिरिक्त, देशी वक्ताओं, भाषा शिक्षकों या भाषा सीखने पर केंद्रित ऑनलाइन समुदायों से सिफारिशें प्राप्त करने पर विचार करें. ये स्रोत किसी विशिष्ट भाषा के भीतर साहित्यिक परंपराओं और उल्लेखनीय कार्यों में मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान कर सकते हैं.

याद रखें, विभिन्न शैली और भाषाओं का पठन केवल मात्रा के बारे में नहीं बल्कि गुणवत्ता के बारे में है. प्रत्येक पुस्तक पर विचार करने के लिए समय निकालें, इसके विषयों और संदेशों को प्रतिध्वनित करने की अनुमति लें. संपूर्ण पठन अनुभव सुनिश्चित करते हुए शैली और भाषा के बीच संतुलन बनाए रखें.

शैलियों और भाषाओं का पठन हमारे बौद्धिक क्षितिज को व्यापक बनाता है, सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देता है और भाषा कौशल को भी बढ़ाता है. विविध साहित्यिक परिदृश्यों में खुद को डुबो कर, हम उस अलौकिक अनुभूति पा सकते हैं जो अंतहीन है, यही नहीं अपने ज्ञान का विस्तार कर सकते हैं और पढ़ने के लिए आजीवन प्यार का पोषण कर सकते हैं. तो आइए, हम इस साहित्यक यात्रा रूपी साहसिक कार्य को शुरू करें, उन रसात्मक भावनाओं को अपनाएं जो किताबों के पन्नों के भीतर हमारा इंतजार कर रही हैं.

प्रकृति

आशा महेश कुमार
राजभाषा अधिकारी
विजयवाड़ा मंडल

प्रातःकाल में सूरज के किरणों से
कली खिलकर फूल बन गई

इन फूलों की महक से
पूरी बगिया सुगंधित बन गई

लगता है सूरज की नर्म धूप से
धरती भी अंगड़ाई लेने लगी

पहाडों के झरनों के शोर से
प्रकृति और भी अद्‌भुत लगने लगी

हर पेड़ के पत्तों पर लदे ओस की बूंदें
हीरों की तरह चमकने लगीं

पर्बतों के शीतल पवन से
हृदय में मधुर भावनाएं जगने लगीं

हर मंज़र अद्‌भुत नज़र आता है
इतना मन मोहक है कि नज़रें हटती नहीं

इन नज़ारों को देखने से लगता है
प्रकृति चार-चांद लगने लगी

अपनी रेल

मुकेश कुमार वर्मा
आशुलिपिक, मंडल रेल प्रबंधक कार्यालय
विजयवाड़ा मंडल

छुक-छुक, छुक-छुक चलती रेल
पटरी पर दौड़ लगाती रेल

भारत के कोने-कोने की
सबको सैर कराती रेल

गाँव, शहर, जंगल, गुफा का
चक्कर रोज लगाती रेल

पटना हो या दिल्ली हो
सबको घर पहुँचाती रेल

सर्दी हो या बारिश हो
जरा भी न घबराती रेल

इस डिजिटल इंडिया के दौर में
ऑन लाइन सुविधा दिलाती रेल

दुनिया में पहचान बनाती
अपनी वंदे भारत रेल.

राष्ट्र धर्म सर्वोपरि

अजय बी. याज्ञिक
लेखा सहायक
प्रमुख वित्त सलाहकार कार्यालय

नमस्कार मित्रो, मुझे लगता है कि अब वह समय आ गया है, जब अत्यंत आवश्यक हो गया है कि हमें अपने ही मन के भीतर झाँकने और स्वयं की ही परीक्षा लेने की आवश्यकता है. ऐसा मुझे इसलिए प्रतीत हो रहा है क्योंकि वर्तमान परिस्थितियों में हमने अपनी अगली पीढ़ी को इतना सिर चढ़ा लिया है कि वे हमारी धरोहर को ही समाप्त करने पर तुली है. वास्तव में मुझे क्या कहना है, वह मैं नीचे विस्तार में बताऊंगा.....

कुछ दिन पहले की बात है, तकनीकी उन्नति की बदौलत कई वर्षों बाद हम सभी मित्रों ने सपरिवार एक स्थान पर मिलने का कार्यक्रम बनाया था. हम सभी मित्र अपने-अपने परिवार के साथ निर्धारित स्थान पर समयानुसार पहुंच गए थे. हम सभी मित्र अति आनंद में मग्न थे. बातों ही बातों में मुझे पता चला कि मुझे छोडकर बाकी सभी मित्रों के पुत्र और पुत्रियां विदेश में पढ़ रहे हैं या नौकरी कर रहे हैं. इसके अलावा कुछ मित्रों के बच्चे तो अपने परिवार के साथ विदेशों में ही बस गये हैं. कई बच्चे प्रेम विवाह, दूसरी जाति या अन्य धर्म में विवाह कर सपरिवार विदेशों में आनंद से जीवन यापन कर रहे हैं. कभी-कभार भारत आकर अपने परिवार के सदस्यों तथा रिश्तेदारों व मित्रों से मिलते हैं. तत्पश्चात् पुन: वापस विदेश लौट जाते हैं. मेरे मित्र बडे आनंदित थे. उनकी पत्नियाँ डॉलर, दिनार, पाउडंस की बातें कर रही थीं और विदेशों की चकाचौंध का बढा चढ़ा कर वर्णन कर रही थी तथा सभी महिलाएं वाह! वाह! करते हुए मजे ले रही थीं; पर.... मैं खुश नहीं था. मन के भीतर किसी एक कोने में टीस सी उठ रही थी. मुझे लग रहा था कि हमारे बच्चे जो यहाँ हमारे भारत देश में पैदा होते हैं, पलते-बढते तथा खाते-पीते और उठते बैठते हैं. वे स्वयं या माता-पिता की इच्छानुसार विदेश में पढ़ने जाते हैं, पढ़ने के बाद वहीं पर नौकरी करते हैं. नौकरी करने के बाद वे सभी वहीं के हो जाते हैं और विदेशी ठप्पा लगाकर वर-वधू ढूंढकर वहीं पर विवाह कर लेते हैं. तत्पश्चात् विवाहित जोडा सोचता है कि उनकी संतान का जन्म विदेश में ही हो, ताकि उनकी संतान को वहां की सभी सुख-सुविधाएं प्राप्त हों. इस प्रकार करते करते वो विदेशी बन जाते हैं और यहाँ उनके माता पिता अकेले ही अपना जीवन व्यतीत करने पर मजबूर हो जाते हैं. विदेशी चकाचौंध में ये अपनी संस्कृति, सभ्यता, परम्परा को केवल नाम मात्र इन्स्टा पर डालने की हद तक ही सीमित रखते हैं. कभी-कभी तो यह भी नहीं... कर पाते हैं.

उनका इस प्रकार संस्कृति शून्य होना समाज के लिए ही नहीं परंतु राष्ट्र के लिए भी अहितकारी हो जाता है. सभी को सभी कुछ मालूम रहते हुए भी कोई भी इस विषय की गंभीरता को समझना नहीं चाहते हैं.

कुटुम्ब, परिवार हमारे धर्म परम्परा की नींव है. भारत ही एक ऐसा देश है जहाँ कुटुम्ब पद्धति अपनायी जाती है. आज भी जहाँ परम्पराएँ निभायी जाती हैं. भारत का सनातन धर्म इसी के आधार पर एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक हस्तांतरित होता है. हमारे कुटुम्ब की परिभाषा में "मैं से लेकर समाज, राष्ट्र..." तक सम्मिलित रहता है; जिसे हम "वसुधैव कुटुम्बकम" कहते हैं. इसमें जड-चेतन, चल-अचल सभी घटकों का समावेश होता है. गौमाता से लेकर वृक्षवल्ली, पहाडों-झरनों, नदियों-तालाबों, खेत-खलियानों तक विस्तार से हमारे कुटुम्ब की सीमाएँ बँधी हैं. यदि भारत में एक छोर से

दूसरी छोर तक पैदल प्रवास करेंगे तो ध्यान में आएगा कितनी विविधता है. भाषाएँ बदलती हैं, परिवेश बदलते हैं, रिवाज बदलते हैं, मान्यताएं बदलती हैं. फिर भी हमारे पूर्वजों ने बडी सहजता से इन्हें एक डोर से बांधे रखा है, जिसे हम सनातन धर्म कहते हैं. सनातन केवल पुस्तक में लिखा धर्म नहीं है.यह आचार-विचार, व्यवहार से अविरत चलने वाली धारा है. हमारे पर्व, उत्सव, त्योहार, मंगल अवसरों से यह फलता-फूलता है. इसी से परम्परा-सभ्यता-संस्कृति बनी है. भारतीय संस्कृति का मूल है “सहचर्य – सहअस्तित्व”. भारतीय जीवन का अर्थ दर्शन और संस्कृति का आपस में मिलन है; जिसमें एक नींव है तो दूसरी इमारत.

सृष्टि निर्माण के साथ ही हमारी सनातन प्रकृति गतिमान रही है. कर्म, विद्या, कला का यह स्रोत है. वर्तमान पीढी को भले ही यह अकल्पनीय लगे, परन्तु हमारे पूर्वजों ने एक उत्तम मानवतावादी सनातन सभ्यता की नींव रखी थी जो लम्बे समय तक फलती-फूलती रही थी. भारतीय दर्शन सिखाता है; ईश्वर एक है, उसके पास जाने के भिन्न-भिन्न मार्ग हैं, परंतु अन्ततोगत्वा प्रत्येक मार्ग उस दिव्य शक्ति तक ही पहुंचता है. हमारी भव्यता " वसुधैव कुटुम्बकम" में ही बसी हुई है.

आज की शिक्षित पीढ़ी को यह बात ज्ञात होनी चाहिए कि हमारे मन्दिर, हमारे श्लोक, मंत्र सभी शास्त्रानुसार ही नहीं आज की सदी के विज्ञान के आधार पर भी सही उतरते हैं. मन्दिरों का स्थान महात्म्य अलौकिक है; जहाँ ईश्वर को ढूँढने नहीं, अपितु स्वयं की खोज करने के लिए व्यक्ति जाता है.

वर्तमान में इसी श्रद्धा को अश्रद्धा का रूप देकर प्रश्नात्मक रवैय्या अपनाया जा रहा है. केवल दिनचर्या घटित कर खाना, पीना और सोना यहाँ तक का ही जीवन यापन किया जा रहा है, परंतु यह दृष्टिकोण पशुओं से भी बदतर है. संतान का अपने धर्म, संस्कृति, परम्पराओं के प्रति नकारात्मक दृष्टि रखने के लिए, सन्तान को नहीं बल्कि उनके माता-पिता को दोषी ठहराना चाहिए. अपनी संस्कृति की, धर्म की, जीवन पद्धति की बारीकियाँ हमें उन्हें बतानी चाहिए. वे इस विषय को गंभीरता से नहीं लेते हैं, इसिलिए बडी सहजता से ही इसे नकारते रहते हैं.

"यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते....."अर्थात् यहां पर नारी की पूजा की जाती है. ऐसा हमारा धर्म है. नारी को हर रूप में अग्रस्थानी माना गया है. लेकिन नारीवाद के नाम पर पाश्चात्य से आयातित उच्छृंखलता के कारण आज की स्त्री(पुत्री या पुत्रवधु) अपनी ही सभ्यता पर आघात कर रही हैं. इस विषय में और भी विस्तार से चर्चा हो सकती है लेकिन खेद इस बात का है कि जिसके हाथ में यह धुरा है वही नारी आज अपने हर रूप में अपना वर्चस्व खो रही है; जबकि किसी भी संस्कृति के विकास या पतन में नारी का योगदान पुरुष से भी अधिक होता है.

भारत के सनातन धर्म के अनुसार मनुष्य जीवन अमूल्य है; साथ ही अनेक कर्तव्य और अनुशासन से बंधा है. जन्म लेने वाले मनुष्य के चाहे वह स्त्री हो या पुरुष... उन्हें तीन प्रकार के ऋण अर्थात् एक माता-पिता का ऋण, दूसरा गुरु का ऋण, तीसरा राष्ट्र का ऋण चुकाने चाहिए.

आजीवन माता-पिता, बहन, भाई, परिवार के साथ रह कर, उन्हीं के साथ जीवन यापन कर प्रेम और कर्तव्य के साथ रहना ही पहले ऋण को चुकाना है. अपनी शिक्षा से, वेतन से सगे संबंधियों की सहायता कर समाज अर्थात् गुरु का ऋण चुकाना है. अपने इन्हीं गुणों का प्रचार-प्रसार कर, धर्म मार्ग पर अग्रसर रह कर, उत्तम संतान प्राप्त कर उसे योग्य नागरिक की शिक्षा देना ही राष्ट्र का ऋण चुकाना है. जब हम उपर्युक्त तीन ऋणों को हमारे जीवन काल में चुकाते हैं, तब ही हमारे अस्तित्व का, हमारे मनुष्य होने का संकल्प पूर्ण होता है.

संस्कृति, सभ्यता, परम्परा, बडे-बूढों के आशीष, ये हमारी बेडियाँ नहीं होती हैं; परंतु ये तो हमारे रक्षा कवच होते हैं. इनका सम्मान करने पर ही हम अपने उद्देश्य की प्राप्ति करने में सफल हो सकते हैं.

जिस जमीन ने हमें पाला पोसा, जिन अभिभावकों ने हमें छोटे से बड़ा किया, जिन गुरुओं ने हमें लायक बनाया; उन सभी का ऋण हम हमारे लोगों के साथ रहकर ही चुका सकते हैं, ऐसा कर हम हमारे जीवन में आगे तो बढ ही सकते हैं,परंतु इसे सफल भी बना सकते हैं. इस सफलता में जो हमें सुख और शांति प्राप्त होती है, वह हमें कहीं और प्राप्त नहीं हो सकती है. इसे ही हम राष्ट्र धर्म कह सकते हैं. इसका पालन सदैव सबको करना चाहिए.

कूट नीति

जी.जी.संध्या
लेखा सहायक, प्रविस/का/सिकं.

मैंने बुजुर्ग दादाजी से पूछा कि
पहले लोग क्यों...
इतने बीमार नहीं होते थे ?
जितने आज बीमार हो रहे हैं.....

तो दादाजी बोले बेटा
पहले हम हर चीज कूटते थे....
जब से हमने कूटना छोड़ा है,
तब से ही हम सब बीमार होने लगे हैं.....

मैंने पूछा – वो कैसे ?
तो मुस्कुराते हुए बोले....
जैसे पहले हम खेत से अनाज को,
कूट कर घर लाते थे,
वैसे ही हम घर में मिर्च मसाला कूटते थे.....

कभी-कभी बड़ा भाई
छोटे भाई को कूट देता था ....
और जब छोटा भाई उसकी शिकायत
मां से करता था... तो मां...
बड़े भाई को कूट देती थी....
कुल मिलाकर कूटने का सिलसिला चलता ही रहता था...

कभी मां... बाजरा कूट कर
शाम को खिचड़ी बनाती थी.....
तो रोज कपड़ों को भी
कूट-कूट कर धोती थी....

स्कूल में मास्टर जी भी
बच्चों को जमकर कूटते थे...
जहां देखो वहां पर
कूटने का काम

चलता ही रहता था....

इससे कभी कोई बीमारी नजदीक
नहीं आती थी...
सबका इम्यूनिटी पॉवर
मजबूत बना रहता था...

जब कभी बच्चा खाने से या
सर्दी में नहाने से मना करता था....
तब मां उसे कूटकर
उसकी इम्यूनिटी पॉवर बढाती थी
फिर नहलाती थी या खिलाती थी....

स्कूल से शिकायत आती तो
पिताजी कूट देते थे.....
स्कूल जाने में आनाकानी की
तो मां कूट देती थी.....
ऐसे ही सबका इम्यूनिटी पॉवर
कमाल का रहता था.....

कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि
सब कुटाई की महिमा है....
जो आजकल बंद हो गई है.
इसलिए बिना कुटाई के आजकल...
हम बीमार ज्यादा रहने लगे हैं
अत: इसी को कहते हैं "कूट नीति"..

क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान, मौलाअली के अभूतपूर्व 50 स्वर्णिम वर्ष

राजेश कुमार पांडे
अनुदेशक/परिचालन/क्षे.रे.प्र.सं/मौलाअली

किसी भी प्रशिक्षण संस्थान का मूल काम वहां आनेवाले प्रशिक्षणार्थियों को सक्षम बनाना होता है, ताकि वे अपने कार्यों का निर्वहन सुचारू और सुरक्षित ढंग से कर सके. साथ ही, पुराने प्रशिक्षुओं को समय-समय पर नए और संशोधित नियमों से अवगत कराते रहना है. ऐसे ही, दक्षिण मध्य रेलवे पर परिचालन, वाणिज्य और लोको विभाग संबंधी प्रशिक्षण देने के लिए 07 दिसंबर, 1972 में तत्कालीन महाप्रबंधक श्री पी.एन. कॉल के कर-कमलों से क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान/मौलाअली का उद्घाटन किया गया. 07 दिसंबर, 2022 को इस संस्थान ने अपनी स्थापना से 50 वर्षों का स्वर्णिम सफर पूरा किया और इसी उपलक्ष्य में 28 दिसंबर, 2022 को संस्थान में विशेष भव्य कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में दक्षिण मध्य रेलवे के माननीय महापबंधक श्री ए.के. जैन उपस्थित थे.

स्वर्ण जयंती समारोह के अवसर पर उपस्थित मुख्य अतिथि व अन्य अधिकारीगण

प्रशिक्षण संस्थान का मूल मंत्र है - सेवा, ज्ञान और विवेक अर्थात् ड्यूटी के प्रति निष्ठा और उच्च गुणवत्ता की सेवा प्रदान करने के लिए पूर्ण एकाग्रता से ज्ञान अर्जित करना. इसके अलावा, इसका एक ध्येय यह भी है कि यह संस्थान प्रशिक्षणार्थियों को सैद्धांतिक और व्यावहारिक प्रशिक्षण के माध्यम से उनकी व्यवसायिक कुशलताओं को निखारे, ताकि वे राष्ट्र की सेवा में अपना सर्वोत्तम योगदान दे सकें. गत पांच वर्षों में इस संस्थान ने लगभग 41,600 कर्मचारियों/ प्रशिक्षणार्थियों को प्रशिक्षित किया है. इसी कड़ी में उनकी कुशलता को और अधिक मुखर करने, उन्हें अद्यतन नियमों की जानकारी देने तथा नई तकनीक व प्रणाली का ज्ञान देने के लिए प्रत्येक तीन वर्ष की समाप्ति पर पुनश्चर्या पाठ्यक्रम में नामित किया जाता है. प्रशिक्षण के तरीके में जो तकनीकी बदलाव विगत कुछ वर्षों में आए हैं, वे न केवल प्रशिक्षणार्थियों के लिए फायदेमंद हैं, बल्कि प्रशिक्षक भी उन विषयों को आसानी से समझा पा रहे हैं.

संस्थान के पचासवीं वर्षगांठ पर विशेष कार्यक्रम, खेल-कूद प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आदि आयोजित किए गए, जिनमें न केवल प्रशिक्षणार्थियों ने, बल्कि संस्थान के अनुदेशकों और कर्मचारियों ने भी भाग लिया. इस यादगार अवसर पर संस्थान ने एक विशेष स्मारिका "स्वर्णिका" का भी प्रकाशन किया, जिसमें संस्थान की विशेष उपलब्धियों, संस्थान के विवरण, पुरानी यादें, सभी खेलकूद प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं और संस्थान में आयोजित विभिन्न गतिविधियों को शामिल किया गया था.

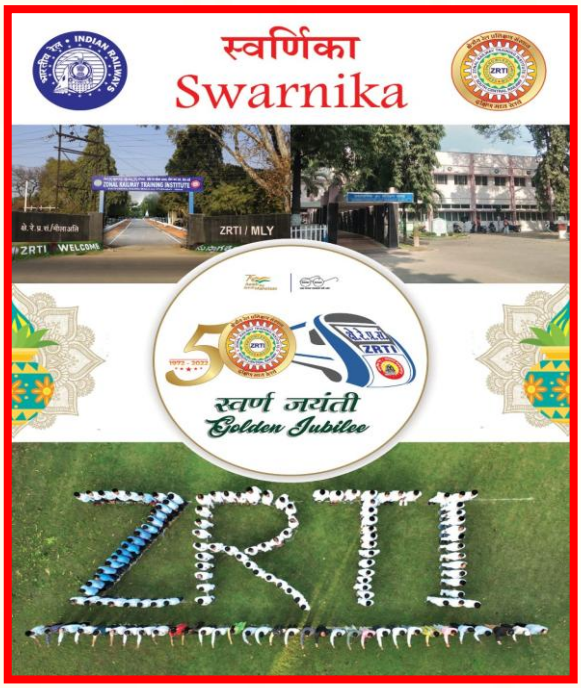

स्वर्ण जयंती समारोह पर प्रकाशित विशेष स्मारिका

पिछले 50 वर्षों में इस संस्थान में कई नए बदलाव आए हैं - जिनमें सबसा बड़ा बदलाव यहां दी जानेवाली प्रशिक्षण सामग्री का माध्यम है. जहां पहले केवल किताबों और चित्रों के माध्यम से विषय वस्तु को समझाया जाता था, आज इसका स्थान पूरी तरह से सूचना और प्रोद्यौगिकी ने ले लिया है. प्रशिक्षण न केवल पुस्तकों तक सीमित रह गया है, बल्कि आज प्रशिक्षण कंप्यूटर, मोबाइल, भारत सरकार द्वारा विकसित और प्रयोग में लाए जा रहे विभिन्न परिचालनिक व वाणिज्यिक सॉफ्टवेयरों तथा कक्षाओं व मॉडल कक्षों में संस्थापित विभिन्न प्रतिरूपी (मॉडल) मशीनों के माध्यम से व्यावहारिक रूप में दिया जा रहा है.

क्षेत्रीय रेलवे प्रशिक्षण संस्थान/मौलाअली के 50 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में स्वर्ण जयंती समारोह का आयोजन गत वर्ष 28 दिसंबर, 2022 को बहुत ही धूम-धाम से किया गया. इसका उद्घाटन दक्षिण मध्य रेलवे के महाप्रबंधक श्री अरुण कुमार जैन के कर-कमलों से किया गया. संस्थान के प्रांगण में मौजूद 200 वर्ष पुराने निजाम काल के कुएं का जीर्णोधार कर पुनःउद्घाटन किया गया, जो निजाम काल में यहां आस-पास फैले आम के बगीचों को सींचने के काम आता था और यह कुआं आज भी प्रशिक्षण संस्थान और आस-पास की रेल कॉलनियों तथा रेल कार्यालयों में पानी की आवश्यकताओं को

पूरा कर रहा है. इस विरासती धरोहर की प्रशंसा माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने अपने ट्विटर हैंडल से की है.

इस प्रशिक्षण संस्थान में आपको प्रत्येक कक्षा में कंप्यूटर, डिजिटल प्रोजेक्टर, ऑडियो-वीडियो सिस्टम आदि मिलेंगे. नियमों की जानकारी न सिर्फ पुस्तकों के माध्यम से, बल्कि चित्रों-चलचित्रों के माध्यम से भी दी जाती है, ताकि प्रशिक्षणार्थियों को विषय को आसानी और गंभीरता से समझ आए. इसके अलावा, प्रशिक्षकों द्वारा तैयार किए गए पॉवरपाइंट प्रेजेंटेशन से भी नियमों को क्रमबद्ध तरीके से याद रखने में मददगार साबित होता है. इसके अलावा, संस्थान का एक मोबाइल ऐप है. परीक्षा के लिए गूगल फॉर्म का उपयोग किया जाता है. यहां पर प्रशिक्षणोपरांत दिए जानेवाला संचिता सॉफ्टवेयर के माध्यम से सक्षमता प्रमाण-पत्र ऑनलाइन जारी किया जाता है, जो सीधे प्रशिक्षणार्थियों के ई-मेल पर आता है. संस्थान द्वारा भोजन के लिए जारी धन रसीद ऑनलाइन ही मोबाइल पर जारी की जाती है.

इस प्रशिक्षण संस्थान की एक और विशेषता है कि यहां वर्ष 2018 में सिमुलेटर प्रयोगशाला संस्थापित की गई, जो भारतीय रेल पर स्टेशन मास्टरों के लिए अपने प्रकार की सबसे पहली प्रयोगशाला थी, जिसके माध्यम से स्टेशन मास्टर गाड़ियों की आवा-जाही, उनके संचलन को नियंत्रण करने, सिगनल दिखाने, पैनल को संचालित करने आदि को एनीमेशन के माध्यम से समझ सकते हैं. इस प्रयोगशाला में प्रशिक्षणार्थी 20 से अधिक स्टेशनों की कार्यप्रणाली की व्यावहारिक अनुभूति कर सकते हैं. इसके अलावा, इस प्रशिक्षण संस्थान में वीडीयू (विज्उल डिस्पले यूनिट) प्रयोगशाला, यातायात मॉडल कक्ष (टीएमआर), फॉयस प्रयोगशाला, हिंदी और अंग्रेजी पुस्तकालय, प्रशिक्षणार्थियों के लिए जिम (व्यायामशाला) आदि सभी सुविधाएं यहां की विशेषता है. संस्थान के बड़े प्रांगण में बैडमिंटन, वॉलीबॉल और क्रिकेट का मैदान है, जहां प्रशिक्षणार्थी न केवल खेल-कूद के माध्यम से अपनी शारीरिक स्वस्थता, बल्कि मानसिक संतुलन को भी बरकरार रखते हैं.

संस्थान में आयोजित विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रमों की झलकियां

इस प्रशिक्षण संस्थान में प्रशिक्षणार्थियों को न केवल उनके पाठ्यक्रम से संबंधित विषयों की जानकारी दी जाती है, बल्कि उनके मनोरंजन के लिए समय-समय पर गीत-संगीत, विभिन्न लेखन प्रतियोगिताओं, सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं, खेलकूद प्रतियोगिताओं, फील्ड ट्रेनिंग, श्रमदान आदि के माध्यम से उन्हें चुस्त, तंदुरूस्त रखा जाता है.

यह संस्थान अपने प्रधानाचार्य, उप प्रधानाचार्य, मुख्य अनुदेशक/परिचालन और मुख्य अनुदेशक/वाणिज्य तथा मुख्य कार्यालय अधीक्षक की निगरानी तथा इनके कुशल प्रबंधन तथा उनकी प्रशिक्षित और अनुभवी टीम के सहयोग से दिन दोगुनी-रात चौगुनी प्रगति पथ पर अग्रसर है. प्रशिक्षणार्थियों को परिचालन विभाग के बारह, वाणिज्य विभाग के आठ तथा कार्मिक और राजभाषा विभाग के एक-एक प्रशिक्षकों द्वारा संबंधित विषयों की सटीक जानकारी दी जा रही है.

महाप्रबंधक/दक्षिण मध्य रेलवे के साथ टीम क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली.

सफलता के मूल मंत्र

आर.वी.एच. प्रसाद
वरि. अनुदेशक/वाणिज्य/क्षे.रे.प्र.सं./मौलाअली

जीवन सुख-दुख, हार-जीत, अच्छा-बुरा, दिन-रात आदि का मिश्रण है. यह भी सत्य है कि जीवन की गाड़ी हमेशा एक समान नहीं चलती है, कई बार तकलीफों, मुसीबतों के कारण या तो आदमी हिम्मत हार जाता है या फिर कई बार आनेवाली चुनौतियों के बारे में सोचकर ही मैदान छोड़ भाग जाता है. फिर भी, कुछ ऐसे भी होते हैं, जो रास्ते की कठिनाइयों की परवाह नहीं करते और जीवन को सफल बनाने के लिए कुछ भी करने - सहने के लिए तैयार रहते हैं, ऐसे लोगों को ही जीवन जीने की कला आती है और ऐसे लोगों के कदम ही बुलंदियों को छूकर अपना नाम कमाते हैं, मान बढाते हैं. सफल होने के लिए जीवन में कुछ नियम अथवा कुछ बातों का पालन करना अत्यंत महत्वपूर्ण है, जिनके बारे में नीचे उल्लेख किया जा रहा है -

ठोस निर्णय -
वैसे तो, आदमी सादगी से जीवन जीकर भी अपने को सफल या असफल मान सकता है, लेकिन जो जीवन में कुछ ठान कर चलते हैं, जीवन में कुछ हासिल करने का लक्ष्य बनाते हैं, वे सामान्य आदमियों से हटकर अपने लिए कुछ ठोस निर्णय लेते हैं, जिनका पालन करके वे सफलता की बुलंदियों को छूते हैं.

जीवन में सफलता का स्वाद चखना हो, तो पहले निश्चय कर लें कि चाहे कुछ भी हो जाए, मंजिल न पाने तक चलता रहूंगा, जंग जारी रखूंगा, चाहे कितनी बार भी गिरूं, हर बार नई ऊर्जा, नए जोश के साथ उठकर आगे ही बढूंगा. यदि ऐसा करने की ठान लें, तो कभी मुसीबतें, तकलीफें तोड़ भी दें तो, आदमी की अंतर्चेतना उसे अपने लक्ष्य की ओर खींचती रहेगी और वह नई स्फूर्ति के साथ उठकर एक बार फिर लक्ष्य पाने के लिए जीवंत हो जाएगा.

लक्ष्य का निर्धारण -
लक्ष्य के बिना जीवन, गंतव्य के बिना यात्रा, पतवार के बिना नाव, आसमान में कटी हुई पतंग - सब एक ही हैं. जिनका कोई लक्ष्य नहीं होता, वे जंगल में इधर - उधर ही भटकते रह जाते हैं और जो अपना लक्ष्य निर्धारित करके चलते हैं, वे घने जंगलों में भी अपने लिए रास्ता बनाकर मंजिल तक पहुंच जाते हैं.

अतः, व्यक्ति, परिवार, संस्था, राष्ट्र, देश कोई भी हो, प्रगति और विकास चाहिए, तो लक्ष्य अवश्य होना चाहिए. सामान्य जन के लक्ष्य केवल पैसा कमाना, सफल होना, घर - गाड़ी - बंगला बनाना आदि हो सकते हैं. लेकिन व्यक्तिगत लाभ या अस्थाई जरूरतों की पूर्ति के बारे में न सोचकर जो समाज के लाभ, भविष्य की पीढियों के लाभ के लिए लक्ष्य निर्धारित करते हैं, उन्हें हम **महान लक्ष्य** कहते हैं. ऐसे लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए जीवनभर का कठोर परिश्रम, निरंतर लक्ष्य के प्रति कर्मठ रहना और बहुत कुछ त्याग करना पड़ता है.

कभी - कभी लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए मनुष्य अनैतिक कार्य भी करता है या अनैतिक मार्ग अपनाता है. तब प्राप्त किया हुआ लक्ष्य अपना मोल खो देता है और उस लक्ष्य का महत्व क्षणिक भर का ही रह जाता है, मोल व मूल्य खो चुका होता है. ऐसे लक्ष्य आत्मा को संतुष्टि नहीं प्रदान करते.

अवसर का लाभ उठाना -

मनुष्य के मन में निरंतर लहरों से विचार आते रहते हैं. कब कौन सा विचार हमारा जीवन बदले दे, कौन सा विचार हमारे निश्चेतन मन में नई ऊर्जा से भर दे, यह कहना कठिन होता है. लेकिन हमारा ध्येय पक्का हो, तो हमें मन में आनेवाले हर विचार को अपने लक्ष्य से जोडकर देखना चाहिए. इसीलिए, बड़े – बुजुर्ग भी कह गए हैं कि आपदा में भी अवसर तलाशते रहिए. अतः, जितने रास्ते सामने दिखाई दे, हर रास्ते पर चलकर देखना चाहिए. भले ही हर रास्ता आपके लक्ष्य को न जाता हो, किंतु उस रास्ते पर चलकर यह जरूर पता चल जाएगा कि मंजिल तक जानेवाला रास्ता वह नहीं है और इससे और कुछ मिले न मिले, अनुभव अवश्य मिलेगा, जिससे आप भावी जीवन की राह को और आसान कर सकेंगे.

आशावादी बने रहना -

लक्ष्य की प्राप्ति के लिए हर अवसर को आजमाना चाहिए. हर हाल में जीतने की इच्छा मनमें निरंतर रहना ही आशावादी कहलाता है. सब कुछ खोने के बाद भी कल आनेवाली नई सुबह की किरण में नई आशा देखनेवाला मनुष्य चाहिए, जिससे उस व्यक्ति के जीवन में पुनः नई स्फूर्ति का संचार होने लगता है. इस आशा की किरण को अपने मन में निरंतर जगाकर रखना चाहिए और हमेशा नई चेतना, नए जोश के साथ अपने पूरे मनोबल के साथ लक्ष्य के प्रति आगे ही बढ़ने का प्रयास करना चाहिए, क्योंकि न जाने गुच्छे की कौन सी चाबी आपके प्रयास रूपी ताले को खोल दे. अतः, उम्मीद का दामन थामे रहना और आगे ही आगे बढ़ते रहना.

सकारात्मक सोच -

लक्ष्य भेदने के लिए आपकी सोच सकारात्मक होनी ही चाहिए. कई बार, मनुष्य को कुंठा, तिरस्कार, असफलता आदि पतन की ओर धकेलती है और ऐसे में बुरे विचारयुक्त आदमी अपने लक्ष्य में सफल भी हो जाए, तब उसकी लक्ष्य-प्राप्ति उसे प्रतिष्ठा, सम्मान और प्रशंसा का पात्र नहीं बनाती. इसलिए, लक्ष्य के प्रति सकारात्मक सोच अत्यंत आवश्यक है. अच्छी सोच रखनेवाला व्यक्ति अपने आत्म-सम्मान को सर्वोच्च स्थान देता है, जो किसी भी व्यक्तित्व के लिए सर्वोत्तम पुरस्कार होता है.यदि अपने आप स्वयं अपना सम्मान करते हैं, तब ही दूसरे भी आपको सम्मान देते हैं. यह भी आपको लक्ष्य-प्राप्ति की और प्रोत्साहित करनेवाला एक महत्वपूर्ण घटक है. सोक्रटीस का कहना है कि - *आत्म-सम्मान रखनेवाले व्यक्ति अपने आप को खोजने लगते हैं.* इसे आप ऐसे भी समझ सकते हैं कि वे नित नए ऐसे सकारात्मक रास्ते खोजते हैं, जिन पर चलकर वे न केवल लक्ष्य प्राप्त करते हैं, बल्कि अपने लिए आत्म-सम्मान भी कमाते हैं.

जिन व्यक्तियों में आत्म-सम्मान भरपूर होता है, उनमें धैर्य और विश्वास अधिक रहता है, वे असफलताओं और अन्यायों में अपनी विश्वास की बलि नहीं चढाते. ऐसे मौकों पर वे धैर्यपूर्वक लडकर विजयी होने का प्रयास करते हैं. प्राप्त सफलताओं से संतुष्ट न होकर निरंतर परिश्रम करते हुए प्रयत्नशील रहते हैं. लक्ष्य बदलने पर भी गंतव्य नहीं भूलते. स्वामी विवेकानंद जी का कहना है कि - प्यार करनेवाला मन, काम करनेवाले हाथ आत्म-सम्मान के प्रतीक हैं.

पलायन न करना -

सभी को जीवन की अनेक समस्याओं से जूझना पडता है. अप्रत्याशित दुख, भय आदि घेरकर मन को अशांत बनाते हैं. तब कई बार दुखी आदमी त्रस्त होकरसोचता है कि इन दुखों से दूर भागकर कहीं जंगलों या हिमालय में चले जाते हैं. ऐसी सोच के कारण आदमी जिम्मेदारियों से बचने के लिए पलायन की सोचता है. मुसीबतों से पलायन करने से मुसीबतें समाप्त नहीं होती, बल्कि आदमी केवल रास्ते की चुनौतियों का सामना करने से घबराकर, डरकर, हार मान कर अपने आप को उन मुसीबतों पर जीत पाकर मिलनेवाली अपार खुशी, सफलता के आयामों से वंचित रह जाता है. तकलीफों का सामना करते हुए यदि हार भी जाएं तो, घबराएं नहीं. ये हार आपको और अधिक बेहतर करने का अवसर देती है.

जब तक जीवन है, तबतक राग-द्वेष, काम-क्रोध, सुख-दुख आदि रहेगा ही रहेगा. डर कर जंगल भागना या कर्तव्यों से पलायन करना क्षणिक सुख तो हो सकता है, किंतु अनंत आनंदानुभूतिवाला सुख नहीं.

दुखों का सामना करनेवाले ही कुछ पा सकते हैं. ईश्वर ने हमें विवेक दिया है, सोचने-समझने की शक्ति दी है. ईश्वर प्रदत्त शक्तियों का उपयोग करके समस्याओं का समाधान ढूँढना चाहिए. इस धरती पर ऐसा कोई नहीं, जिसको समस्या न हो और ऐसी कोई समस्या नहीं, जिसका समाधान न हो. मंजिलें चाहे कितनी भी ऊंची क्यों न हो, उन तक जानेवाला रास्ता हमेशा पैरों के नीचे से ही जाता है.

- - - - -

फिर वही बात ....

मोह. रूहुल अमीन
कार्यालय अधीक्षक/क्षे.रे.प्र.सं/मौलाअली

जिंदगी फिर उसी राह पे ले आई
जिस पर चलके खुशी के पल वीराने बने

होने लगी जुबां - जुबां बातें वही फिर
किस्से जुड़कर जिनसे इतने अफसाने बने

हम बचते रहे बागों की कलियों से सदा
और सूखे कांटों के हम दिवाने बने

यूं तो जिंदगी में आई कयामत कई बार
जीने के हर बार फिर नए बहाने बने

हमने चाहा जिनके दिल को समझना
आज वो ही इस दिल के लिए अंजाने बने

आई जब भी खुशी जीवन में खेलने
ये बहते अश्क ही सदा तब पैमाने बने

सोचा था सदियों तक साथ निभाएंगे हम
और वो इक पल में ही बेगाने बने

हर दिन खुशी से जिए थे हम मगर
आज पल पल दर्द के सौ अफसाने बने

तमन्नाएं मिट जाती हैं, जब दिल की
किस्से वही सब आज फिर पुराने बने

- - - - -

मेरा आखिरी खत ...

एस. साई सुधा
वरि. अनुदेशक/परिचालन/क्षे.रे.प्र.सं/मौलाअली

मैं लगभग छह साल बाद अपने गांव लौटी थी, जैसा बचपन में था, शादी के बाद छोड़ कर गई थी, जैसा बाद के वर्षों में कभी - कभार आने पर दिखता था, अबकी बार वैसा कुछ नहीं था. बहुत कुछ बदल चुका था. चार - पांच दिन हो गए थे गांव आए हुए, लेकिन जो कुछ देख रही थी, वो सब दिल को बार - बार दुखा रहा था. अपनी पीड़ा को अपनी बचपन की सबसे करीबी और सबसे प्यारी सहेली जयश्री से शेयर करना चाहती थी. सोचा फोन से फोटो खींचकर भेज दूं या कॉल ही कर लूं. लेकिन, दिल में पल-पल तेजी से उमड़ते जज्बातों की रफ्तार के आगे फोन पर एक-एक बटन दबाकर मैसेज लिखती ऊंगलियों की रफ्तार बहुत ही धीमी लगी. सोचा, आज पुरानी यादों का एक बड़ा पुलिंदा लिखती हूं, यही सोच कर बैठ गई और लिख डाली जयश्री को आखिरी अपनी पाती ...

कैसी हो जयश्री? बहुत दिनों बाद आज बरबस ही तुम्हारी याद आ गई. घर पर सब कैसे हैं?

पांच दिन पहले आई गांव, गर्मियों की छुट्टी बिताने. ऑफिस से दो हफ्ते की छुट्टी ली है, बहुत दिन हो गए थे गांव आए, बहुत याद आ रही थी. फिर अचानक मन को मना ही लिया. तुम्हारी बहुत याद आ रही है. काश, तुम भी यहां होती, तो बचपन की यादों को फिर से ताजा कर लेते.

कैसे हम गर्मियों की छुट्टियों में घने पेड़ों के नीचे छांव में खेला करते थे, स्कूल आया-जाया करते थे और दुपहर में खाने की छुट्टी में स्कूल की दीवार से सटे अमरूद के पेड़ पर चढ़कर अमरूद चुराते थे. अब वह अमरूद का पेड़ नहीं रहा. स्कूल को बड़ा बनाना था, सो बड़ा बन गया है, स्कूल की बिल्डिंग भी नई बन गई और बहुत सी नई कक्षाएं भी बन गई हैं. अब यहां आस-पास के गांव के बच्चे भी पढ़ने आते हैं. बस, अब हमारा वो अमरूद का पेड़ नहीं दिखता, जिसके साथ हमारी बचपन की यादें जुड़ी हैं. वो अमरूद का पेड़ स्कूल के विकास की भेंट चढ़ गया है.

बहुत याद आती है उन शामों की, जब हम अंधेरा होने तक, देर तक गांव के इकलौते मैदान में धूल-मिट्टी में खेला करते थे और घरवालों के डांट-डपट के बिना कभी घर नहीं लौटते थे. पर, अब वो मैदान भी शायद अपने पुराने दिनों को याद कर-करके आंसू बहाता है. जहां बच्चों का रेला लगा रहता था, आज लगभग वीरानी छाई हुई है. मुश्किल से दस – बारह बच्चों को खेलते देखती हूं और इसके चारों तरफ कुछेक बड़े-बुजुर्ग शाम की गश्त लगाते हैं. जाने कहां गए आज के बच्चे... सब अपने - अपने घरों में बैठे मोबाइल पर ही अपनी शामें काट रहे हैं. शायद पढ़–लिख रहे होंगे, स्कूल का काम कर रहे होंगे या फिर फोन पर ही खेल रहे होंगे. जो भी हो, पर इन लम्हों में हम नहीं हैं.

समय-समय की बात है. जिन कच्ची गलियों में हम हमेशा हुडदंग मचाए रखते थे, धूल में समाए रहते थे, उन गलियों ने अब मजबूत रूप ले लिया है, सीमेंट से बने रास्ते अब सीधे-सीधे जाते हैं, बिना कोई शोर किए.... इन पर अब साइकिल, स्कूटर, बैलगाड़ियों के चलने से खड़-खड़ की आवाज नहीं

आती, धूल भी नहीं उड़ती, पहले सी अपनी मिट्टी की खुशबू भी नहीं आती. रास्ते पर लगे पेड़-पौधे भी अब नहीं रहे. जिंदगी आसान तो हो गई है, पर अब अपने सगे-संबंधी, दोस्त, गांववाले इन रास्तों पर नहीं दिखते और न ही रूकते हैं. बस, चट चढ़ो और फट अपने घर पहुंचो. बिना रूके–बिना अपने–अपनों का हाल-चाल पूछे.

संक्रांति के दिन जिस घर के आंगन को हम गोबर और मिट्टी से लीपते थे, जहां रंगोली बनाते थे, वह आंगन अब सीमेंट का बन गया है. दिखता अच्छा है, लेकिन अपने आंगन को लीपने और सूखने तक वहां से गुजरनेवाले हरेक को चिल्लाकर मना करनेवाले अब नहीं रहे. अब केवल बाजार से खरीदे रंगों से रंगोली सजाते हैं, जो शाम से पहले ही मिट चुकी होती है. त्यौहारों में बधाइयां देने अब कोई साथी घर तक नहीं आते, बस मोबाइल पर ही फोटो के रूप में बधायां भेज देते हैं. त्यौहार के दिनों में गांवभर के जो लोग घर आया करते थे, शायद वे अब जीवन की आपा-धापी में पूरी तरह खप चुके हैं.

गांव में भी अब पहले वाले लोग नहीं दिखते हैं. अपने बच्चों के लिए अच्छी नौकरी की तलाश में अधिकांश परिवार गांव छोड़कर शहरों में बस गए हैं. मेरी तरह वो भी चार-पांच साल बाद हफ्ते भर के लिए गांव आ जाते हैं. पगडंडियों की जगह सड़कों ने ले ली है. रास्ते चौड़े तो हो गए हैं, पर आने-जाने वालों के दिल संकरे हो गए हैं. हर कोई एक-दूसरे से पूरी तरह बचकर निकल जाता है, समय नहीं है अब किसी से पास, किसी से बात करने का.

न जाने वे सब कहां चले गए हैं? गांव आने की जो खुशी पहले हुआ करती थी, अब वैसी बिल्कुल भी नहीं होती. गांव वही है, जगह वही है - बस अब लोग वो नहीं रहे. हम अपने बच्चों को आगे बढ़ने की शिक्षा तो दे रहे हैं, लेकिन ऐसे में हम खुद ही पीछे छूट रहे हैं. इस तरह तो हमारी आनेवाली पीढ़ियां हमारे संस्कार, रीति - रिवाजों, अपने बड़े - बुजुर्गों, खेत - खलिहानों आदि सब भूल जाएगी. लगता है आनेवाले समय में हम स्वयं को भी भूल जाएंगे. समझ नहीं आता कि इन बिछड़ते - बिखरते परिवारों को कैसे जोडें? सब कुछ बदल गया है ... इसे प्रगति कहें या अपने स्वर्णिम युग की दुर्गति. बस... अब दिल नहीं लगता यहां. मन बार-बार व्यथित हो रहा है.

बाकी सब ठीक है. सोचती हूं, जल्दी वापिस चली जाऊं. यहां पहले जैसा तो अब कुछ रहा नहीं. तुम गांव कब आओगी? देखना, कितना बदल गया है यहां. घर पर सबको याद करना. पत्र का जवाब जरूर देना .... पुराने अंदाज में. राह तकूंगी तुम्हारे पत्र की. बाय... खयाल रखना.

तुम्हारी
सुधा

चार दिन बाद मोबाइल पर जयश्री का मैसेज आया - हाय डियर, थैंक्स अ लॉट फ़ॉर अपडेटिंग एबाउट द प्रेजेंट पिक्चर ऑफ ऑवर गोल्डेन डेज एंड आवर विलेज. मिस यू टू बट आई एम बिजी इन माय फैमिली एंड ऑफिस वर्क्स. नॉट इंटरेस्टरेड टू विजिट विलेज अगेन, सी यू.

- - - - -

कृत्रिम मेधा से बेरोज़गार पर प्रभाव

जी.वी. माधव
निजी सचिव/II
प्रमुख मुख्य परिचालन प्रबंधक/का/सिकंदराबाद

तकनीकी विकास के साथ-साथ डिजिटलीकरण के कारण श्रमिक कर्मचारियों पर बुरा असर पड रहा है जो काम पहले दस आदमी करते थे, उस काम को एक रोबोट का उपयोग कर किया जा रहा है. इस वजह से ये दस कर्मचारी बेरोजगार हो गए हैं. इसके प्रभाव को समझने के लिए विकासशील नीतियों का उपयोग करके कुशल श्रमिक शक्ति को चुनकर कर्मचारी, उद्योगपति और इस दौरान समाज को भी ध्यान में रखना चाहिए. तेज़ तकनीकी विकास और नवाचार की वजह से रोजगार पर बुरा असर पड रहा है जिसका प्रभाव किसी एक देश या किसी एक राष्ट्र पर नहीं बल्कि सारी दुनिया पर ही दिख रहा है.

तकनीकी विकास से रोजगार पर पडने वाला असर दो प्रकार का है:

1. जो लोग अब तक जो काम कर रहे हैं, उसे खोजना पडता है, इसे हम विस्थापन प्रभाव कह सकते हैं.
2. तकनीकी काम करने के लिए अधिक क्षमता के कर्मचारी की मांग की वजह से उत्पादकता पर प्रभाव पड सकता है.

कुशल नौकरियां (skilled jobs) करने के लिए तकनीकी कुशलता वाले कर्मचारियों की आवश्यकता ज्यादा पडती है और उन्हें अधिक वेतन भी देना पडता है, हम देख रहे हैं कि खेती-बाड़ी में आजकल ड्रोन की सहायता से उर्वरक डाले जाते हैं जिसके कारण बडे-बडे खेतों का काम तुरंत निपटाया जा रहा है. ऐसी तकनीक से पहले जो काम दस से बीस दिनों में किया जाता था अब दो दिन में पूरा हो रहा है. इसी दिशा में बीज बोने के कार्य में ट्रेक्टर की सहायता ली जा रही है तथा फसल काटने में जहां दस से बीस आदमियों की आवश्यकता पडती थी वही काम अब केवल ट्रैक्टर की सहायता से केवल एक आदमी कर रहा है. इस कारण कितने लोग बेरोजगार हो गए यह इस बात का प्रमाण है.

आजकल कितनी ही कंपनियां यांत्रिकीकरण कर अपना उत्पादन रोबोट की सहायता से करती है जिससे अन्य श्रमिकों के रोजगार पर असर पडा है और उनकी नौकरियां छिन रही हैं. रोबोट के लिए कोई समय की पाबंदी नहीं है वह दिन रात काम कर सकता है. आम श्रमिक को मिलने वाली सुविधाएं जैसे वेतन, बोनस, भत्ता आदि अब इन उद्योगपतियों को अब नहीं देना पडेगा.

बडे-बडे गोदाम और शॉपिंग माल जैसे अमेजान, वालमार्ट, रिलाइंस, बिग-बाजार, मेट्रो माल जैसी कंपनियां अपने गोदामों का यांत्रिकीकरण करके श्रमिकों का हक मार रही हैं. पिछले कई महीनों से यह सुनने में आ रहा है कि फेसबुक, गुगल, ट्विटर और अमेजान जैसी कई बडी कंपनियां बड़ी संख्या में अपने कर्मचारियों को सेवा से हटा रही हैं जिससे उनकी रोजमर्रा की जिन्दगी पर गहरा प्रभाव पडा

है. अपने आशियाने को बनाने के लिए कई कर्मचारियों ने बैंक से ऋण लिया होगा जो अब उनके लिए चुकाना कितना कठिन है .

तकनीकी विकास की दिशा में आजकल ई-वाणिज्य की चर्चा विश्वभर में है. हमारे भारत में भी अब यह एक प्रचिलत माध्यम बन गया है. लोग घर पर बैठे-बैठे ही गुगल पे, फोन पे, पेटीएम जैसे कई अन्य ऐप के माध्यम से अमेजान, फिल्पकार्ट, स्नैपडील जैसी कम्पनियों से सुविधानुसार अपने सामान को प्राप्त कर रहे हैं जिससे खुदरा व्यापारियों की बिक्री कम हो गई है और वे सभी नुकसान झेल रहे हैं.

तकनीकी विकास की दिशा में अगला कदम है बिना ड्राइवर की गाड़ी, जो लाखों चालकों के रोजगार पर भारी पड रही है. एक मशीन को कम्पुटेशनल संसाधन के साथ विशिष्ट आलगेरिथम से बनाया जाता है, वह मशीन अपने आप हर काम करने में दक्ष होती है जो एक उपलब्धि है मगर लाखों लोगों के पेट पर लात मारने की वजह भी बन गई है. सरकार बेरोजगारी को कम करने के लिए कई कार्यक्रम चला रही है परन्तु तकनीकी विकास और यांत्रिकीकरण के कारण कई नौकरियां जा रही हैं. 140 करोड की आबादी वाले भारत देश में तकनीकी विकास और यांत्रिकीकरण के साथ-साथ साधारण मनुष्य के रोजगार के लिए भी सोचना चाहिए.

खोज

ललिता सायन्ना
कार्यालय अधीक्षक
प्रमुख मुख्य यांत्रिक इंजीनियर कार्यालय

मेरे हर दर्द की
दवा थी तुम्हारे पास
और मैं अस्पतालों के
चक्कर लगाती रही...

मेरे हर प्रश्न का
उत्तर था तुम्हारे पास
और मैं किताबों से
धूल छानती रही...

मेरे हर नज्म के
अल्फाज थे तुम्हारे पास
और मैं शब्दकोश के
पन्ने पलटती रही...

मेरा तन मन महकता
था तुम्हारे खयालों से
और मैं बाजारों में
इत्र ढूंढती रही...

मेरे हृदय में था
तुम्हारा निवास
और मैं लोगों से
तुम्हारा पता पूछती रही...

यादों के आरमां

शिरीष अवस्थी
कनिष्ठ अनुवादक/प्रधान कार्यालय

तुम न आई तुम्हारे लिए इस कदर ,
दिल की शमां जलाई गई रात भर .
आपकी याद आती रही रात भर,
चांदनी दिल दुखाती रही रात भर.
गाह जलती हुई, गाह बुझती हुई,
शाम-ए-गम झिलमिलाती रही रात भर.
कोई खुशबू बदलती रही पहर भर,
कोई तस्वीर गाती रही रात भर.
फिर शब-ए-शाम-ए-शाब गुल के तले,
कोई किस्सा सुनाती रही रात भर.
जो न आया उसे कोई जंजीर-ए-दर,
हर सदा पर बुलाती रही रात भर.
एक उम्मीद से दिल बदलता रहा,
इक तमन्ना सताती रही रात भर.
तुम न आई तुम्हारे लिए इस कदर
दिल की शमां जलाई गई रात भर.

******

शब-ए-विशाल है गुल कर दो सारे चिरागों को,
अकेला दिल ही काफी है तुम्हारी याद में जलने के लिए.

****

दक्षिण भारत

डी. मंजुलता राव
कार्यालय अधीक्षक
प्रमुख मुख्य विद्युत इंजी/का/प्रका

दक्षिण भारत विशाल समुद्र जैसा है. समुद्र की जानकारी देना संभव तो नहीं है पर थोडी बहुत जानकारी देना चाहती हूं. पूरे दक्षिण भारत को अगर देखा जाए तो सबसे पहले मंदिरों की बात करते हैं जिसमें तिरुपति बालाजी का नाम सबसे पहले आता है. तिरुपति बालाजी के समीपवर्ती स्टेशन पर कदम रखते ही दिल और दिमाग को अलग ही सुकून मिलता है. वहां का वातावरण, फूल पत्तियां, रहन-सहन, खान-पान, मंत्रोचार, प्रसाद के लड्डू की खूशबू, लोगों का व्यवहार सबको भाता है. साथ ही गोविंदा का उच्चारण करते हुए श्रद्धालुओं का आगे बढना पावों में अलग ही थिरकन पैदा कर दैता है.

तिरुपति के बाद हैदराबाद की बात करें तो मोती और लाख की चूड़ियों के लिए बहुत ही प्रसिद्ध होने के कारण इसे चूडियों का शहर भी कहा जाता है. यहां का मौसम बारह महीना सुहावना ही रहता है. यहां पर दीपावली, ईद, बोनालू, बतकम्मा, क्रिसमस या गुरुनानक जयंती जैसे और कई अन्य त्यौहार बिना किसी भेदभाव के मनाये जाते हैं. महाराष्ट्र के बाद कई वर्षों से मनाया जाने वाला हैदराबाद शहर का गणेश उत्सव बहुत ही प्रसिद्ध है. इस उत्सव में आकर्षण का केंद्र खेरताबाद पंडाल पर बिठाई जानेवाली गणेश जी की मूर्ति जो 70 से 75 फीट ऊंची होती है और प्रति वर्ष इसकी ऊंचाई बढती है. यहां पर तमिल, तेलुगु, कन्नड, मलयालम के साथ-साथ उर्दु, बेरी, गोंदी, हिंदी, तुलु, कोंकणी, कोदवा, अंग्रेजी भाषाओं का भी चलन है.

दक्षिण भारत की साडियां, कॉफी, चंदन का सामान, नारियल के व्यंजन, मिठाइयां, नानवेज खाना अलग-अलग प्रकार से बनाया जाता है. यहां का इडली साम्भर, वडा, मसाला डोसा, मिर्च पाउडर, रसम पाउडर, पोंगल, पापड़, मुडकु, नींबू या ईमली से बना चावल जिसे पुलिहोरा कहते हैं, बहुत ही प्रसिद्ध हैं. मैसूर का दशहरा बडा ही प्रसिद्ध है साथ ही ओणम्, पोंगल भी. भारत की इस दिशा का पहनावा जैसे धोती कुरता, पजामा, साड़ी, हाफ साड़ी आज भी यहां की संस्कृति और सभ्यता दर्शाती है. त्यौहारों पर हल्दी, चंदन लगाना, बालों में फूल और गजरा लगाना, हाथों में भरी-भरी चूडियां पहनना, नए वस्त्र पहन कर मंदिर जाना आज भी यहां की परम्परा है. हमारे पूर्वजों द्वारा दिए गए संस्कारों को दक्षिण भारत के लोग आगे ले जा रहे हैं यह देखकर दिल झूम उठता है.

तेलंगाना के दो महत्पूर्ण त्यौहार हैं, एक है बोनालू जिसे आषाढ़ महीने में मनाया जाता है जिसमें माता को प्रसाद के रूप में दही चावल, गुड चना पोहा माता को ओती भी चढाई जाती है जिसमें साड़ी ब्लाऊज़, पीले चावल, नारियल सूखा खजूर, पान सुपारी, केला, चूडी, फूल आदि होता है. शाम को माता को घुमाया जाता है जिसमें सबसे रोचक बात है माता की जो गाड़ी रहती है उसमें भेड को बांधा जाता है. दूसरा त्यौहार है बतकम्मा. त्यौहार नवरात्रि में महालय अमावस्या के दिन से

शुरु होता है और नवमी के दिन समाप्त होता है. इसमें फूलों को एक थाली में रखकर मंदिर जैसा गुम्मद बनाया जाता है. उसके ऊपर पान का पत्ता रखकर हल्दी के गणेश जी और गौरी माता बनायी जाती है, उसकी पूजा कर उसे बीच में रखकर महिलाएं उसके चारों ओर नृत्य करती हैं और गाना गाती हैं.

यहां के नृत्य जैसे कुचिपूडि, भरतनाट्यम, मोहिनीअट्टयम पूरी दूनिया में प्रसिद्ध हैं. हथकरघा उद्योग में बने नाव, आभूषण, चटाई, पेटिंग, कत्थककली गुडिया, लकडी से बने खिलौने और सजाने का सामान जैसी कई चीजें बहुत ही प्रसिद्ध हैं.

वैसे तो दक्षिण भारत की संस्कृति काफी विस्तृत है जिसका शब्दों में बयान नहीं किया जा सकता है. यहां की सबसे महत्वपूर्ण जानकारी यह है कि यहां आपको बड़ों का सम्मान, संयुक्त परिवार, महिलाओं का सम्मान, धर्म और संस्कृत्ति के प्रति लगाव और उसे जुडे रहने का भाव भरपूर दिखाई देता है.

सुरक्षित रहिए, सुखी रहिए.

****

सच्ची मित्रता

मेराज अहमद
कनिष्ठ अनुवादक,प्रधान कार्यालय

एक समय की बात है कि कौआ अपने मित्र कछुआ और चूहे के साथ बातें कर रहा था कि एक हिरन उनकी ओर दौड़ता हुआ आया, कछुआ डरकर पानी में चला गया, चूहा अपने बिल में चला गया और कौआ उड़कर एक पेड़ पर बैठ गया, फिर कौआ चक्कर लगाकर देखने लगा कि क्या कोई हिरन का पीछा कर रहा है, उसने चारों ओर देखा, लेकिन उसे कुछ भी नहीं दिखा, उसने चूहे और कछुए को आवाज़ दी, फिर दोनों बाहर आ गए, कछुए ने जब हिरन को पानी की ओर आते हुए देखा, तो उसने उससे कहा : यदि तुम्हें प्यास लगी है तो पानी पी लो, डरो नहीं, क्योंकि तुम्हें डरने की आवश्यकता नहीं है. हिरन निकट आया तो कछुए ने उसे नमस्कार किया और उसका स्वागत करते हुए कहा : तुम कहां से आए हो? उसने कहा : मैं इन्हीं जंगलों में दाएं - बाएं घूम रहा था, मुझे तीरंदाज़ एक यहां वहां दौड़ा रहे थे, मैंने एक आदमी को देखा, तो मुझे लगा कि वह एक शिकारी है. कछुए ने कहा : डरो नहीं, हमने यहां कोई शिकारी नहीं देखा, यहां हम अपना प्यार और अपनी जगह तुम पर न्यौछावर करते हैं, हमारे पास चारा और पानी खूब है, हमारे पास रहो, अब हिरन उनके पास रहने लगा, उनका एक सायबान (छायादार स्थान) था जहां यह सब इकट्ठा होकर एक दूसरे से बातचीत करते थे.

एक बार जब कौआ, चूहा और कछुआ सायबान में थे कि हिरन गायब हो गया, उन्होंने कुछ देर तक उसकी प्रतीक्षा की लेकिन वह नहीं आया, जब बहुत देर हो गई, तो उन्हें इसकी आशंका हुई कि हो सकता है उसे चोट लग गई हो, चूहे और कछुए ने कौवे से बोला : देखो, हमारे आस-पास कुछ दिख रहा है क्या? कौए ने आसमान में चक्कर लगाया और देखा कि हिरन एक जाल में फंस गया है. वह जल्दी से नीचे आया और उन्हें सूचित किया.

कछुए और कौए ने चूहे से कहा : इस मामले में केवल तुमसे ही आशा की जा सकती है, इसलिए तुम अपने मित्र की मदद करो, चूहा तुरंत हिरन के पास गया और उससे कहा : तुम इस मुसीबत में कैसे फंस गए? हालांकि तुम बहुत बुद्धिमान और चालाक हो. हिरन ने कहा : क्या बुद्धि, भाग्य के फैसलों की तुलना में कुछ काम आती है? वे बातचीत में लगे थे कि कछुआ भी वहां आ गया, हिरन ने उससे कहा : तुम्हारे यहां आने का क्या लाभ, मान लो कि अगर शिकारी यहां आ जाता है, और चूहा पहले ही रस्सियां काट देता है, तो मैं भाग जाऊंगा, चूहे के लिए बिल बहुत हैं, कौआ उड़ जाएगा, तुम भारी भरकम हो, तुम दौड़ भी नहीं सकते, मुझे तुम पर शिकारी का डर लग रहा है, उसने कहा : मित्रों के बिछड़ने के बाद, कोई जीवन नहीं होता, जब एक मित्र दूसरे मित्र से बिछड़ जाता है तो उसका हृदय टूट जाता है, उसका सुख दुख में बदल जाता है, उसकी आंखों में अंधेरा छा जाता है, दोनों अपनी बात पूरी भी न कर पाए थे कि शिकारी आ पहुंचा. तब तक चूहे ने जाल काट दिया था, हिरन अपने आप भाग गया, कौआ आसानी से उड़ गया, चूहा बिल में चला गया, कछुआ बेचारा वहीं रह गया, शिकारी पास आया, उसने अपना जाल कटा पाया, उसने दाएं-बाएं देखा, तो उसे एक कछुआ रेंगते हुए दिखा, उसने उसे पकड़ कर रस्सी से बांध दिया, दूसरी ओर कौआ, चूहा और हिरन शीघ्र ही एक साथ हो गए.

जब उन्होंने देखा कि शिकारी ने कछुए को बांध दिया है, तो वे दुःखी हो गए, चूहे ने कहा : हम कष्ट की एक घाटी पार करते हैं, तो उससे भी अधिक कष्ट की घाटी में आ जाते हैं, जिसने भी कहा है बिल्कुल सच कहा है : मनुष्य जब तक ठोकर नहीं खाता आगे बढ़ता रहता है, तब वह एक बार ठोकर

खाता है, फिर वह समतल भूमि पर चलने में भी ठोकर खाता है, कछुए पर चिंता करो जो एक अच्छा मित्र है जिसकी मित्रता किसी भी तरह से स्वार्थ परायण नहीं है, यह एक आदर्श मित्रता है, यह एक पिता की अपने बच्चों के प्रति प्यार व स्नेह से अधिक है, यह एक ऐसी मित्रता है जो केवल मृत्यु पर समाप्त हो सकती है, नाश हो ऐसे शरीर का जो सदैव पीड़ा व कष्ट में रहता है, जिस पर \अलग-अलग परिस्थितियां आती रहती हैं उसके लिए कुछ भी स्थायी नहीं है, न ही वह एक हालत पर स्थिर है, जैसे एक उगता हुआ तारा न तो हमेशा उगा रहता है और न ही अस्त होने वाला तारा हमेशा अस्त रहता है, लेकिन उगने वाला अस्त होता है और अस्त होने वाला उगता भी है, जैसे घावों की पीड़ा और इसके ठीक होकर बिगड़ जाने की स्थिति उन मित्रों की सी है जो एक साथ होने के बाद बिखर जाएं.

हिरन और कौवे ने चूहे से कहा : हमारा और तुम्हारा कछुए के लिए डरना आवश्यक है और तुम्हारी वाणी - हालाँकि यह बहुत वाक्पटु है - लेकिन इससे कछुए का कोई लाभ नहीं हो सकता है, यह ऐसा है जैसे कहा जाता है : कष्ट के समय लोगों की परीक्षा होती है और ईमानदारी की परीक्षा लेन-देन के समय, परिवार व निकट संबंधी की परीक्षा आवश्यकता पड़ने और गरीबी के समय. चूहे ने कहा : मुझे लगता है कि यह योजना बनाई जानी चाहिए कि हिरन मित्र! तुम शिकारी के सामने एक घायल हिरन की तरह गिर जाओ, कौआ तुम पर बैठकर खाने का प्रयास करेगा, मैं दौड़ कर शिकारी के निकट हो जाऊंगा और इस बात की प्रतीक्षा करूंगा कि संभवत: वह अपने सभी हथियार छोड़ दे और कछुए को भी रख दे, वह तुम्हारी लालच में और तुमको पाने की आशा में तुम्हारे पास चला आए, जब वह तुम्हारे पास आ जाए तो तुम वहां से थोड़ा भागना, इस तरह से कि उसकी आशा तुम से टूटने न पाए, फिर एक के बाद एक पकड़ने की चाहत देते रहना, इस तरह हमसे काफी दूर चले जाना, जितना संभव हो उतना आगे बढ़ते रहना, मुझे आशा है कि जब तक शिकारी वापस आएगा मैं कछुए की रस्सियों को काट चुका होउंगा इस तरह वह बच जाएगा.

कौआ और हिरन ने चूहे के कहने के अनुसार कार्य किया, शिकारी ने उनका पीछा किया, हिरन ने उसे चूहे और कछुए से बहुत दूर कर दिया, और उधर चूहा जाल काटता रहा, यहां तक कि उसमें सफलता प्राप्त कर ली और कछुआ उससे छुटकारा पा गया.

जब शिकारी थका हुआ लौटा, और अपनी रस्सी को कटा हुआ पाया, उसने लंगड़े हिरन के बारे में सोचा, और उसे ऐसा लगा कि उसके दिमाग और समझ में कुछ विकार आ गया है, उसने हिरन और कौवे के उसको खाने के प्रदर्शन और उसके जाल के कट जाने के बारे में सोचा तो उसे यहां के स्थान से डर लगने लगा, उसने कहा : यह जिन्नों या जादूगरों का स्थान है. वह वहां से बिना कुछ पाए वापस लौट आया. कौआ, हिरन, चूहा और कछुआ, पहले से ज्यादा प्यार व स्नेह के साथ रहने लगे.

जब ये जीव अपने छोटे कद-काठी और दुर्बलता के बावजूद अपने सच्चे प्रेम और स्नेह से, अपनी हार्दिक इच्छा के संरक्षण और पारस्परिक सहायता से एक के बाद एक संकटों से मुक्त हो जाते हैं, तब वह मनुष्य जिसे बुद्धि का वरदान प्राप्त है, अच्छाई और बुराई की समझ है, ज्ञान और विवेक की शक्ति है, उसे तो एकता और समझौते का प्रदर्शन करना चाहिए. यह सच्ची मित्रता और उनकी भाईचारे का एक उदाहरण है.

गुलामी की मनोदशा

वफा समरीन
पत्नी/ मेराज अहमद, कनिष्ठ अनुवादक, प्रधान कार्यालय

कुछ लोग महिलाओं को आज़ादी देने के मेरे विचारों से आश्चर्य में हैं और एक दूसरे से कहते हैं कि क्या वे गुलामी में हैं? यदि वे आज़ादी का मतलब समझ लेते तो वे मेरे विचार से असहमत न होते.

मेरे कहने का मतलब यह नहीं है कि आज महिलाएं बेची व खरीदी जाती हैं, लेकिन इंसान की गुलामी केवल उसको बाजारों में बेचा जाना ही नहीं है, बल्कि एक विवेक पूर्ण इंसान यह कहेगा कि हर कोई जिसके पास उसके अपने विचार व इच्छा नहीं, वह पूरी तरह से गुलाम है. मुझे नहीं लगता कि निष्पक्ष पाठक मुझसे असहमत होंगे अगर मैं कहूं कि महिला, मुस्लिम समुदाय के विचार में कुल मिलाकर एक पूर्ण इंसान नहीं है. उनमें से कुछ लोग यह समझते हैं कि उस पर उसकी संप्रभुता का अधिकार है और वे इसी विश्वास पर उसके साथ व्यवहार करते हैं और इसके कई प्रमाण मौजूद हैं.

कई परिवारों में यह सम्मानजनक नहीं है कि कोई महिला किसी पुरुष का अभिवादन करते समय उसका हाथ न चूमे, या पैर न छुए. उनके अनुसार स्त्रियों का पुरुषों के साथ बैठना और उनके साथ भोजन करना शिष्टता नहीं है. मैंने कई बार अपनी आँखों से देखा है कि पति खाने की मेज पर बैठा है, उसकी पत्नी खड़ी होकर मक्खियों को भगा रही है और उसकी बेटी पानी लेकर खड़ी है.

जी हां, एक महिला के साथ पुरुष का ऐसा रूखा और निंदनीय व्यवहार अक्सर कुछ वर्गों में देखने को मिलता है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में और अन्य वर्गों में महिलाओं की गुलामी दूसरे रूपों में मौजूद है.

जो पुरुष अपनी पत्नी को मना करता है कि वह उसकी इच्छा के अलावा किसी अन्य कारण से घर से बाहर न जाए वह उसकी स्वतंत्रता का सम्मान नहीं करता है. इस दृष्टिकोण से, वह गुलाम ही नहीं बल्कि एक कैदी है, और कैद गुलामी की तुलना में आज़ादी के लिए अधिक हानिकारक है.

अगर मुसलमान अपने धर्मगुरुओं से राय ले लें तो वे भी यही सलाह पाएंगे कि अपनी स्त्रियों को बंदी बना कर रखो और उन्हें बाहर न जाने दो, केवल त्योहारों के अवसर पर रिश्तेदारों के यहां जाने की अनुमति दो और उन्होंने यही बेहतर समझा कि किसी भी हाल में उसे घर से बाहर न जाने दें और वे इस बात पर गौरवान्वित होते हैं कि जब तक स्त्री की शवयात्रा न निकाली जाए तब तक वह घर से न निकले.

इसमें कोई संदेह नहीं है कि आदमी का अपनी पत्नी को कैद में रखना आज़ादी के खिलाफ है जो कि उसका प्राकृतिक अधिकार है. जो पुत्री अपने पिता के द्वारा हांकी जाती है, उसके पति के लिये वह पशु के समान है, वह न तो कुछ जानती है और न ही अपने पति के व्यवहार से परिचित होती है.

यह तो सभी जानते हैं कि देश के हर वर्ग में सभी पिता अपनी बेटियों की शादी इसी तरह करते हैं. तो वे शादी कराने वाले को पकड़ कर ले आते हैं और शादी की रस्में पूरी कर देते हैं. जहां तक लड़की की बात है तो इस महत्वपूर्ण मामले में बेटी की कोई राय नहीं होती, हालांकि उसके भविष्य के सुख और दुख इसी से संबंधित होते हैं और ऐसा नहीं कहा जा सकता है कि इसमें पुरुष की स्थिति भी स्त्री जैसी ही है, उसे अपनी मंगेतर की हालत के बारे में कुछ भी पता नहीं होता, परंतु एक आदमी किसी भी समय उसे तलाक देकर अपनी अज्ञानता के परिणामों से छुटकारा पा सकता है और जब चाहे दूसरी शादी कर सकता है.

जहां तक उस स्त्री का प्रश्न है जो किसी ऐसे पुरुष से पीड़ित है कि उसके साथ जीवन बिताना असंभव सा लगता है, उसके पास उससे छुटकारा पाने का कोई उपाय नहीं है.

महिला की शादी एक ऐसे पुरुष से हुई है जिससे वह अनभिज्ञ है और उसे उससे छुटकारा पाने की अधिकार भी नहीं है, जबकि पुरुष को उसे कैद में रखने की वसीयत मिली हुई है जैसा वह चाहता है करता है, तो यह भी वास्तव में एक तरह की गुलामी ही है. वह महिला जिसे केवल धार्मिक शिक्षा दी जाती है, जैसा कि धर्मगुरू कहते हैं या जो उन्होंने उनसे सीखा है कि महिलाओं को सीमित ज्ञान लेना चाहिए, यह भी एक तरह की गुलामी है.

महिला अपने अंगों और अपने शरीर के दिखाई देने वाले हिस्सों को ढकने के लिए बाध्य है जिससे वह ठीक से चल भी नहीं सकती, बसों और रेल गाड़ियों में चढ़ने पर कठिनाई होती है, सांस लेने, देखने और बोलने में भी कठिनाई का सामना करती है. यह भी गुलामी का ही एक रूप है.

संक्षेप में, महिला अपने जन्म के समय से लेकर अपनी मृत्यु के दिन तक गुलामी का जीवन व्यतीत करती है क्योंकि वह अपने लिए नहीं जीती है बल्कि वह

आदमी के साथ और आदमी के लिए जीती है. उसे अपने हर मामलों में उसकी जरूरत पड़ती है. वह घर से बाहर उसी के साथ निकलती है, उसी के संरक्षण में यात्रा करती है, वह केवल उसी के मन से सोचती है, उसी के आंखों से देखती है, उसी के कानों से सुनती है, उसी की इच्छा के अनुसार चलती है, उसी के कहने पर काम करती है. इस प्रकार वह एक स्वतंत्र इंसान नहीं है, वह आदमी से जुड़ी हुई एक वस्तु मात्र है.

पन्द्रह वर्ष से कम उम्र के लड़के को देखें और उसकी तुलना उसकी माँ से करें. आप पाओगे कि माँ उससे बुद्धि, और ज्ञान में कम होती है. न केवल बाहरी मामलों में, बल्कि उसी घर में जिसमें वह रहती है. कैसे नहीं होगी जब वह पूर्ण रूप से शिक्षित ही नहीं है उसका ही बच्चा उसे आज्ञा देता है, बताता है कि क्या करना है, क्या नहीं करना है, उसके घर व धन का प्रबंधन भी वही करना शुरू कर देता है.

अपने नौकर के साथ सड़क पर चलती हुई किसी महिला को देखें, आप पहली नजर में पाएंगे कि नौकर महसूस कर रहा है कि उसी के पास इच्छा, विचार और शक्ति है. वह उसके आगे - आगे चलता है, जबकि वह पीछे चलती है, जैसे कि नौकर स्वयं यह कह रहा है : मैं हूँ वह जिसे इस अज्ञानी, कमजोर आत्मा की रखवाली और सुरक्षा की जिम्मेदारी दी गई है.

शिव खोड़ी की यात्रा

जया
वरिष्ठ सेक्शन इंजीनियर(आरेख), आयोजना अनुभाग
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण कार्यालय, सिकंदराबाद

हम, चार लोग, मां वैष्णो देवी के दर्शन करने गए थे और सौभाग्य से हमें भोले नाथ का निमंत्रण भी मिल गया. जम्मू के रियासी जिले में, कटरा से मात्र 80 कि.मी. दूर, रणसु नामक गांव में स्थित है शिव खोड़ी की गुफा, जहां भगवान शिव साक्षात् विराजमान हैं. यह गुफा भगवान शिव के प्रमुख पूजनीय स्थलों में से एक है. तो चलिए, आपको इस वृतांत के द्वारा शिव खोड़ी से परिचित कराते हैं.

हैदराबाद से भारतीय रेल में सहज यात्रा करते हुए हम जम्मू के कटरा रेलवे स्टेशन पहुंचे और वहां से कटरा बस स्टॉप जाकर होटल लिया. पहले 2 दिनों में माता वैष्णो देवी एवं काल भैरव के दर्शन करने के पश्चात् कटरा में हमने शिव खोड़ी के दर्शन का निश्चय किया.

प्रातः 8 बजे, हम कटरा बस स्टॉप से टैक्सी लेकर निकले. वहां से शिव खोड़ी के लिए बसें भी हैं पर वे 10 बजे के बाद निकलती हैं. हमारे ड्राइवर 63 वर्ष के अनुभवी वृद्ध थे जिन्होंने हमें पहाड़ी झरने का शुद्ध, निर्मल पानी पिलाया और अपने बेहतरीन स्वास्थ्य का उदाहरण देते हुए पहाड़ों की जलवायु के लाभ बताए.

निस्संदेह, पहाड़ों की प्राकृतिक सुंदरता तो होती ही अनूठी है और शिव खोड़ी तक जाने का मार्ग भी सुरम्य दृश्यों से परिपूर्ण था. एक अविस्मरणीय दृश्य का उल्लेख करना यहाँ आवश्यक है. एक पहाड़ी में चट्टानों की संरचना कुछ इस प्रकार है कि वह गणपति के मुख जैसा प्रतीत होता है. आप भी वह देखना कदापि न भूलें.

अद्भुत दृश्यों का अवलोकन करते हुए सुबह 9:30 बजे तक हम गुफा के समीप पहुंच गए. टैक्सी से उतरने के बाद बिजली से चलने वाले ऑटो से हम चार लोग कुछ दूर और आगे गए. वहां से हम अपने-अपने खच्चरों पर बैठकर मंदिर की ओर बढ़े. खच्चर पर बैठने का अनुभव भी हमारे लिए नया था.

यद्यपि पैदल चलने के दृष्टिकोण से भी वह मार्ग कठिन नहीं था. समय के अभाव के कारण हम खच्चरों की सवारी करते हुए जा रहे थे परंतु आप आराम से पैदल यात्रा भी कर सकते हैं. बीच-बीच में छांव में बैठने की जगह मिलती रहती है जहां विश्राम करते हुए चढ़ाई की जा सकती है. वैष्णो देवी पर्वत की चढ़ाई करने वालों के लिए तो यह अत्यंत सरल है.

यहां 3.5 किलोमीटर की चढ़ाई के बाद दूसरे निर्धारित स्थल पर हमें खच्चरों से उतार दिया गया और फिर हम कुछ सीढ़ियां चढ़कर ऊपर आए, वहां एक भव्य भवन है जिसमें मूर्तियों, खिलौनों, खाद्य सामग्रियों और धार्मिक वस्तुओं की दुकानें हैं और वहां मोबाइल फोन, वॉलेट, कैमरा इत्यादि जैसी वस्तुएं जिन्हें मंदिर के अंदर ले जाना निषेध है, उन्हें रखने के लिए नि:शुल्क लॉकर सेवा भी उपलब्ध है.

बाहर कुछ और सीढ़ियां ऊपर की ओर जाती थीं जिनसे हम गुफा के मुख्य द्वार पर पहुँच गए. बाहरी कक्ष में महंत रमेश गिरी जी की प्रतिमा है, जिन्होंने इस गुफा को सर्वप्रथम खोजा था और यहां रह कर

प्रतिदिन पूजा करना आरंभ किया था. उनकी भक्ति भावना के कारण ही धीरे-धीरे यह गुफा यहां के जन मानस में प्रचलित हुई और आज पूरे भारतवर्ष के श्रद्धालु यहां दर्शन हेतु आते हैं.

हालांकि इस गुफा का कोई प्रामाणिक इतिहास अभी तक मिला नहीं हैं, पर कहते हैं न श्रद्धा को साक्ष्य की आवश्यकता नहीं.

15 अप्रैल 2023 की सुबह, हम वहां सबसे पहले पहुंचने वाले दर्शनार्थी थे. तो हम आराम से धीरे-धीरे गुफा में अंदर गए. गुफा में प्रवेश करते ही तरह-तरह की आकृतियां गुफा की दीवारों पर दिखाई देने लगती हैं. एक सिंह के चेहरे जैसी आकृति दिखाई दी थी. ऐसी मनमोहक प्राकृतिक संरचनाएं प्रकृति-प्रेमियों के लिए किसी अमूल्य निधि से कम नहीं.

बाहरी कक्ष से भीतरी कक्ष तक जाने का रास्ता संकीर्ण एवं कम ऊंचाई वाला है. जिसके अंदर हम कभी झुक कर, कभी रेंग कर आगे बढे. जिन्हें घुटने या कमर दर्द की समस्या है, उन्हें इस मार्ग में कठिनाई आ सकती है, उनके लिए एक सुगम मार्ग भी उपलब्ध है.

मन में रुद्राष्टकम का पाठ करते हुए हम लोग इस अध्यात्मिक मार्ग पर चल रहे थे कि गुफा के मध्य एक खुली जगह प्रकट होती है जहां एक पुजारी जी उपस्थित थे. यह गुफा का भीतरी कक्ष था. वहां लगभग चार फीट ऊंचा शिवलिंग था जिसके ऊपर कामधेनु के थनों की आकृति स्पष्ट दिखती है जिससे जल की बूंदें टपकती रहती हैं. पुजारी जी का कहना है कि महाशिवरात्रि के दिन यह जलधारा दूध की तरह हो जाती है. इस गुफा की कंदराओं में प्राकृतिक रूप से जगह-जगह जल का रिसाव होता रहता है और शिवलिंग पर ये प्राकृतिक जलाभिषेक चमत्कारिक प्रतीत हो रहा था.

शिवलिंग के समीप कई पिंडिया भी थी जिसमें, शिव, पार्वती, गणपति एवं कार्तिकेय जी की आकृतियां स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं और वहां महालक्ष्मी सहित विष्णुमूर्ति, श्री सरस्वती सहित ब्रह्मा जी, नंदी महराज, महादेव का त्रिशूल एवं डमरू, कामधेनु, श्री विष्णु का सुदर्शन शंख एवं चक्र, श्री शेष नाग जी, सप्तऋषि, पांच पांडव इत्यादि की आकृतियां भी शिला पर दिखाई देती हैं.

पुजारी जी ने शिव खोड़ी की कथा सुनाई जो कुछ इस प्रकार है कि दैत्य भस्मासुर की तपस्या से प्रसन्न होकर हमारे भोले महादेव ने उसे यह वरदान दे दिया कि वह जिसके भी सर पर हाथ रखेगा वह भस्म हो जाएगा. इसके उपरांत अहंकारी भस्मासुर ने भोलेनाथ के सर पर ही हाथ रखने का मन बना लिया. फिर क्या था, शिव भगवान ने, अपने पूरे परिवार और गणों के साथ त्रिलोक में इधर-उधर छुपने की जगह ढूँढने के पश्चात् यहां अपने त्रिशूल की नोक से एक गुफा का निर्माण किया. यह भगवान शिव द्वारा खोदा गया है इसलिए शिव खोड़ी कहलाता है.

भगवान शिव की समस्या के समाधान हेतु भगवान विष्णु ने मोहिनी अवतार लेकर भस्मासुर को स्वयं उसके ही हाथों से भस्म करा दिया. उसके उपरांत भगवान शिव परिवार समेत पुनः कैलाश पर्वत पर जाकर विराजमान हुए. परंतु उनका एक अस्तित्व सदा के लिए यहां रह गया और उनके साथ ही समस्त 33 कोटि देवी देवता भी यहां उनकी स्तुति हेतु निवास करते हैं. शिवलिंग के आस पास सभी आकृतियों को ध्यान से देखने पर हमें उपरोक्त सभी देवी-देवताओं के दर्शन होते हैं.

गुफा के अंदर ही, शिवलिंग की विपरीत दिशा में माँ सरस्वती, माँ लक्ष्मी एवं महाकाली तीन पिण्डियों के रूप में विराजमान हैं, जिनके कर कमलों में सदैव जल भरा रहता है जिसे भक्तगण अपने ऊपर

श्रद्धापूर्वक छिड़कते हैं. इनके पास ही बाईं शिला पर पांच पांडवों की पिंडियां स्थित हैं. इसी के पास एक सुरंग बनी हुई है. पौराणिक मत के अनुसार, द्वापर युग में इसी गुफा से होकर पांडव स्वर्ग को गए थे. इसी परिसर में एक छोटा स्वयंभू शिवलिंग है, जिसके साथ ही लेटी हुई मुद्रा में भगवान शंकर और उनके ऊपर माँ काली का चरण, भी स्पष्ट दिखाई देते हैं.
देवी देवताओं की कुछ आकृतियां तो शीघ्र दिख जाती हैं पर कुछ को ढूंढने में समय लगता है और मिल जाने पर अतीव आनंद की अनुभूति होती है. इस तरह यह दर्शन अचंभित भी करता है एवं रोमांचित भी.

दिव्य, आकर्षक और श्रद्धा के भव्य सागर में सराबोर होकर हम न चाहते हुए भी वापस लौटे. शिव खोड़ी की गुफा इतनी लंबी है कि माना जाता है इसका एक छोर अमरनाथ गुफा तक जाता है और दूसरा छोर महादेव की कृपा निधियों जितना अनंत है. एक कथा के अनुसार, दो साधुओं ने इस गुफा के अंत का पता लगाने का निश्चय किया और इन दो मार्गों से यात्रा आरम्भ की. छह माह के उपरांत, एक साधु अमरनाथ में गुफा से बाहर निकले, पर दूसरे साधु को पुनः किसी ने नहीं देखा. इस कारण यह मान्यता है कि दर्शनोपरांत जो गुफा में उस ओर बढ़ जाता है, वो कभी लौटकर नहीं आता.

लोग आगे जाने के बजाए पीछे लौटकर ही एक अलग रास्ते से बाहर निकलते हैं. यह रास्ता आसान था और बुजुर्ग एवं दिव्यांगों को वहां से प्रवेश करने की अनुमति भी थी.

शिव खोड़ी आकर ऐसा प्रतीत हुआ मानो शताब्दियों से विस्मृत एक अमूल्य निधि को पुनः अर्जित कर लिया हो. पहाड़ों के ऊपर, इतनी लंबी गुफा जिसके अंत की भी जानकारी न हो, वहां भी भक्तों को भगवान मिल ही जाते हैं.

आशा है कि आप भी अपने जीवन में कम से कम एक बार शिव खोड़ी की यात्रा अवश्य करेंगे.

"स्तब्ध"

वी.श्रीपति शर्मा
वरिष्ठ अनुभाग अधिकारी(लेखा)
विसमुलेधि / निर्माण / कार्यालय / सिकंदराबाद

हमारे शिक्षक भावनात्मक रवैये में बोल रहे थे. उनके विचार दिल को छू जाने वाले होते थे. ब्लैक बोर्ड के सामने, कभी उस कोने से और कभी इस कोने से एक जादूगर की तरह दोनों हाथ फैलाकर बोलते थे.

'सांसों की अगर गिनती करें तो काम बड़ा मुश्किल हो जाता है, मगर सबके माथे पर एक संख्या लिखी होती है. इस संख्या से हमें कुछ लेना देना नहीं है. ज़िंदगी का अंदाज़ उन पलों से लगाइए जिनके ज़रिए आपकी सांस रुक गई हो, आप स्तब्ध रह गए हों.'

यह अध्यापक मुझे पसंद नहीं करते थे. शायद मेरे चेहरे पर कुछ ऐसी भावनाएं प्रकट हो जाती थीं जो उन्हें भाती नहीं थीं. मेरी ओर देखकर प्रश्न किया..... हमेशा ऐसा ही होता था.

'तुम्हारे साथ क्या कभी ऐसा कुछ हुआ? बताओ' मेरी ज़िंदगी में अगर कोई ख़ासियत है तो यही है. रेलगाड़ी में बैठता हूं तो लोग मुझे घूरते रहते हैं. आख़िर में कहेंगे, 'यार, ऊपर के बर्थ पर चले जाओ, यहां गर्भवती महिला को अलॉट हुआ है.'

'हां सर.....,' मैंने कहा,.....'कल मैं सिनेमा हॉल में गया था तो हॉउसफुल हो गया था.'

'इसमें स्तब्ध होने वाली कौन-सी बात है भई..?' सभी हंसने लगे.

'नहीं सर.....' मैंने कहा.... 'वहां कोई ब्लैक में टिकट बेच रहा था. '

'यह कौन-सी बड़ी बात है?'

'नहीं सर.... वह बिल्कुल आप जैसा था.... दो मिनट मैं सोचने लगा, आप यह काम क्यों कर रहे हैं?'

हल्ला मच गया. कक्षा खत्म हो गई तो बाहर अध्यापक मिले और बोले, "देखो सच बोला करो मगर सच्चाई इस तरह मत कहो."

मैं बोला.. "सर, सच्चाई अपने आप में एक स्तब्ध करने वाली चीज़ है."

"यह तो सोचने वाली बात है. "

पता नहीं क्यों उसी दिन शाम में ज़ोरदार बारिश होने लगी और वो भी अचानक, किसी ने सोचा भी नहीं होगा. मैं बाइक से जा रहा था, सोचा घर पहुंच जाऊंगा. मगर भीगने लगा. फिर एक

जगह रुक गया. वो मकान काफ़ी बड़ा था. बरामदे के बाहर छत के नीचे खड़ा हो गया. वहां एक खिड़की थी. एक लड़का जो शायद 18-20 साल का था, एक मोबाइल कान पर रखकर वहां आया और वह धीरे-धीरे बोल रहा था. तभी पता चला कि वह हमारे सर का ही घर था. वो अंदर से आए और लड़के को एक मार लगाई और अंदर लेकर चले गए. शायद उनका बेटा था जो उनकी बात नहीं सुनता था. बारिश और जोर पकड़ रही थी. सर ने मुझे देखा नहीं था. लड़का फिर अंदर से निकला. मोबाइल पकड़ कर हल्की-सी आवाज़ में बात कर रहा था. थोड़ी ही देर में सर फिर बाहर आ गए. पीठ पर फिर एक वार किया और कान पकड़ कर अंदर ले गए. सोचने लगा, शायद सभी अध्यापक घर में भी ऐसे ही होते हैं. अब मुझे यहां देखेंगे तो शायद मुझसे भी सवाल करना शुरू कर देंगे.

इतने में लड़का फिर बाहर आया. इस बार पीछे की ओर देखता हुआ आ रहा था. खिड़की के पास खड़ा हो गया और मोबाइल में बात कर रहा था. सर फिर बाहर आ गए. सोच रहा था, इस बार शायद और गुस्सा करेंगे. मगर उन्होंने प्यार से कंधे पर हाथ रखा और अंदर ले जाने लगे. मुझसे रहा न गया.

'सर, छोडिए न ! दो मिनट बात कर लेगा, पता नहीं किससे बात कर रहा होगा.'

सर ने मुड़ कर मुझे देखा.

'ओह ! तो तुम यहां खड़े हो. अंदर आ जाओ.'

'नहीं सर, देर हो रही है. इत्तफ़ाक से यहां रुका था. '

'अच्छा ! बारिश से स्तब्ध हो रहे थे ?'

मैं हंसने लगा. उन्होंने लड़के को आगे किया.

'देखो, मोबाइल में बात कर रहा था न ? तुमने कहा बात करने दीजिए.... '

'हां सर, सभी तो करते हैं.'

फिर उन्होंने उसका हाथ पकड़ कर मुझे दिखाया. उसके हाथ में कोई मोबाइल नहीं था. उसकी नज़र भी पता नहीं कहां घूम रही थी. मैं स्तब्ध रह गया. लड़का अंदर चला गया.

सर ने दरवाज़ा खोला. उन्होंने कहा, 'तुम्हीं ने तो कहा था, सच्चाई से बड़ी स्तब्धता नहीं होती..... उसी से जूझ रहा हूं.'

*****

रामनगर : विलक्षण, पर्यटकीय, अपूर्व अनुभव - एक शहर ऐसा भी

सोम अंकिता
आशुलिपिक, ग्रेड-III
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण कार्यालय, सिकंदराबाद

रामनगर उत्तराखंड के 'कुमाऊं' क्षेत्र में स्थित एक छोटा सा शहर है और नैनीताल (उत्तराखंड) जिले में स्थित है. यह उत्तराखंड के तराई क्षेत्र के अंतर्गत आता है, फिर भी आसपास की एक विशिष्ट पहाड़ी पर स्थित है.

इतिहास : एक अंग्रेज कमिश्नर एच. रामसे ने 1856-1884 के बीच रामनगर शहर को बसाया था. रामसे ने ब्रिटिश शासन के दौरान रामनगर शहर में अपने साथी अंग्रेजों के लिए बस्तियां बनाईं और उत्तराखंड के आस-पास के गांवों में चाय के बागान भी बनाए. रामनगर में कॉर्बेट नेशनल पार्क का सबसे अधिक दौरा किया जाता है, जिसका नाम शिकारी से संरक्षणवादी बने जिम कॉर्बेट के नाम पर रखा गया है, जिन्होंने इसे बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी. यह भारत का सबसे पुराना राष्ट्रीय उद्यान है जिसे 1936 में स्थापित किया गया था. गर्जिया देवी मंदिर और सीता बनी मंदिर जैसे प्राचीन मंदिर अपने साथ बहुत सारे मिथक और किंवदंतियाँ लेकर चलते हैं, जो हर साल बड़ी संख्या में आगंतुकों को आकर्षित करते हैं.

आगंतुक आकर्षण: रामनगर अपने विभिन्न आकर्षणों के साथ कई पर्यटकों और साहसिक प्रेमियों का ध्यान आकर्षित करने में सक्षम रहा है. रामनगर कुमाऊं संस्कृति, साहसिक कार्य, शांति और शांत परिवेश का एक अनूठा और समामेलन अनुभव प्रदान करता है. यह न केवल साहसिक प्रेमियों के लिए बल्कि प्रकृति प्रेमियों और उन लोगों के लिए भी एक आकर्षण का केंद्र है जो एक अद्भुत सांस्कृतिक अनुभव चाहते हैं. रामनगर की एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत है और प्राकृतिक सुंदरता, सादगी व रोमांच के अनुभव के लिए निश्चित रूप से इस जगह की यात्रा करनी चाहिए.

रामनगर की स्थापत्य संरचना बहुत ही अनूठी और विशिष्ट है जो बाजार वास्तुकला की अपनी सरल और अनूठी शैली के लिए कई फोटोग्राफरों को आकर्षित कर सकती है. रामनगर के पास कई छोटे गाँव (यानी क्यारी)हैं, जिनका नज़ारा स्थानीय सवारी करते समय निश्चित रूप से देखा जा सकता है.

कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान : रामनगर को कॉर्बेट का प्रवेश द्वार भी कहा जाता है. रामनगर न केवल कुमाऊँ की पहाड़ियों का प्रारंभिक बिंदु है, बल्कि रामनगर का सबसे प्रसिद्ध और आकर्षक हिस्सा यह है कि यह विश्वप्रसिद्ध राष्ट्रीय उद्यानों में से एक जिम कॉर्बेट का प्रवेश द्वार है और सुंदर हिल स्टेशन नैनीताल के करीब है. कॉर्बेट नेशनल पार्क रामनगर से 10 किलोमीटर दूर है. यह रामनगर से 86 किलोमीटर उत्तर में फैला हुआ है. 1936 में हैली नेशनल पार्क के रूप में स्थापित, कॉर्बेट नेशनल पार्क भारत में सबसे पुराना और सबसे अधिक मांग वाले राष्ट्रीय उद्यानों में से एक है. प्रोजेक्ट टाइगर के तहत आने वाला यह भारत का पहला अभ्यारण्य है. पार्क का नाम शिकारी-प्रकृतिवादी से लेखक और फोटोग्राफर बने जिम कॉर्बेट के नाम पर रखा गया था, जो इस क्षेत्र में रहते थे और इस पार्क को स्थापित करने में योगदान दिया था. पूरा 500 वर्ग किलोमीटर में फैला यह क्षेत्र नदी की पट्टी, पहाड़ियों, दलदली

घाटियों, बड़ी झील और घास के मैदानों से भरा हुआ है. जिम कॉर्बेट राष्ट्रीय उद्यान उन दुर्लभ राष्ट्रीय बाघ अभ्यारण्यों में से एक है जहाँ रात्रि विश्राम की अनुमति है. कोई भी वन्यजीव व शाम का आनंद ले सकता है और प्रकृति पार्क की गोद में हाथी की पीठ पर या खुली जीप में घूम सकता है. बाघ के अलावा, तेंदुए, जंगली हाथी और मगरमच्छ मिलेंगे. इसलिए, वन्यजीव प्रेमियों के लिए, यह वास्तव में सबसे अधिक रमणीक जगह है. यहां कई फिल्मों की शूटिंग भी हुई है. पूरे वर्ष तापमान समशीतोष्ण रहता है. सर्दियों में, तापमान 4-5 डिग्री तक कम हो जाता है जबकि गर्मियों में तापमान 30 डिग्री से अधिक हो जाता है. जिम कॉर्बेट में अधिकांश सुबह धूमिल होती है.

गर्जिया देवी मंदिर: गर्जिया देवी मंदिर कॉर्बेट नेशनल पार्क के बाहरी इलाके में रामनगर के पास गर्जिया गांव में स्थित एक प्रसिद्ध देवी मंदिर है. यह एक पवित्र शक्ति मंदिर है जहाँ गर्जिया देवी पीठासीन देवी हैं. यह मंदिर कोसी नदी में एक बड़ी चट्टान पर स्थित है. यह नैनीताल जिले के सबसे प्रसिद्ध मंदिरों में से एक है. कार्तिक पूर्णिमा के दौरान हजारों भक्त यहां आते हैं. सबसे पहले पुजारी पं. केशव दत्त पाण्डेय ने कार्तिक मास की पूर्णिमा को देवी गिरिजा की पूजा प्रारम्भ की. लोग गर्जिया मंदिर के पास कोसी नदी में स्नान करते हैं. यहां काले ग्रेनाइट से बनी 9वीं शताब्दी की लक्ष्मीनारायण की एक मूर्ति भी है. आसपास के इलाकों से काफी संख्या में लोग रोजाना वहां मंदिर में पूजा करने जाते हैं.

कॉर्बेट फिशिंग एंड एंगलिंग टूर : कोसी नदी का जलग्रहण क्षेत्र मछलियों को पकड़ने के विभिन्न अवसर प्रदान करता है. मछली पकड़ने के लिए विशेष रूप से महासीर मछलियों को पकड़ने के लिए नदी के किनारों पर कुछ लाइसेंस प्राप्त मछली पकड़ने के शिविर स्थापित किए गए हैं. कॉर्बेट टाइगर रिजर्व में वन्यजीव जीप सफारी, हाथी सफारी और पक्षी विहार के अलावा, कॉर्बेट की बाहरी परिधि पर निकटवर्ती नदी में गोल्डन महासीर मछली और बड़ी कैटफ़िश की तलाश पर्यटकों के लिए एक अद्भुत अनुभव है. महासीर एक बड़ी मछली है जो हिमालय श्रृंखला में ताजा नदी के पानी में प्रचुर मात्रा में पाई जाती है. गोल्डन महासीर, सिल्वर महासीर, ब्लैक महासीर और गूंच जैसी महासीर प्रजातियों की एक श्रृंखला पार्क में और उसके आसपास बहने वाली नदी में महत्वपूर्ण रूप से पाई जाती है. हालाँकि, कॉर्बेट नेशनल पार्क में महासीर मछली पकड़ने की अनुमति नहीं है, लेकिन आपको उत्तराखंड में रामगंगा और कोशी नदी के साफ गहरे पानी में इन खूबसूरत मछलियों को करीब से देखने की अनुमति है.

रामनगर की यात्रा से आपको साहसिक से आध्यात्मिक तक की एक अद्भुत यात्रा का अनुभव मिलेगा. यदि कोई रामनगर में एक लंबी छुट्टी की योजना बना रहा है, तो उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र के रहस्यवादी और करामाती अनुभव का आनंद लेने के लिए रानीखेत, सातताल, भीमताल, नौकुचियाताल, नैनीताल, भोवाली और अन्य आस-पास के कई अविस्मरणीय स्थानों की यात्रा भी निश्चय ही की जा सकती है.

पछतावा

ई देवराज रेड्डी
कनिष्ठ अनुवादक/राजभाषा अनुभाग
मुख्य प्रशासनिक अधिकारी/निर्माण/का/सिकंदराबाद

" धूप में निकला न करो रूप की रानी.... गोरा रंग काला न पड़ जाए....." गुनगुनाते हुए, काम को थोड़ी देर के लिए रोक कर मैं मई-जून की कड़कड़ाती धूप में दोपहर के भोजन के लिए जब ऑफिस से बाहर निकला तब सच में लगा कि बाहर नहीं निकलना चाहिए. भूख की डोर बहुत ही मज़बूत होती है, वैसे मैं सुन चुका था कि यदि पेट न होता तो किसी का किसी से भेट न होती.

एक हाथ को चश्मे की तरह सिकुड़ी हुई आंखों पर चढाकर धूप के कोड़ों को पीठ पर सहता हुआ कैंटीन की ओर तेज गति से चलने लगा. कैंटीन मेरे ऑफिस से लगभग दो सौ पचास मीटर दूर था. जेब में रुमाल होते हुए भी माथे के पसीने को हाथ से पोंछता हुआ जब मैं पुल से नीचे उतरा तो देखा कि एक बूढ़ी महिला रास्ते की झाड़ियों के समीप जमीन पर फटी-पुरानी साड़ी को सिर तक लपेटे बैठी हुई थी. घुटनों तक की झाड़ियां भला धूप से किसी को कैसे बचा पाती. ऐसा नहीं था कि इससे पहले मैंने कभी किसी भिखारिन को नहीं देखा था परंतु उसे देख कुछ अजीब सा लगा.

पता नहीं मेरे अंदर यह बात कब से घर कर गई थी कि जिनके हाथ-पैर सही सलामत होते हैं उन्हें भीख देना उनके भीख मांगने को बढ़ावा देना होता है. जैसे ही मैं उस बूढ़ी भिखारिन के पास से गुज़रने वाला था उसने मेरी तरफ़ देखा. न चाहते हुए भी मेरी सिकुड़ी हुई आंखें उसकी लाल, मुर्झाई और झुर्रियों से घिरी हुई आंखों में देखने से रुक नहीं पाईं. उन आंखों में कष्टों का समुद्र था जिसमें कई पीड़ादायक घटनाओं की लहरें उठ रही थीं. पहली बार इतनी सारी व्यथाओं को मैं एक ही क्षण में आंखों से सुन रहा था. सुनी-सुनाई बातें मेरे मस्तिष्क में बिजली की तरह कौंध गईं और बड़ी मुश्किल से नज़रें हटाकर मैं आगे बढ़ने लगा. मन ही मन ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो मेरे पैर अधमरे हो गए हों जबकि भूख तो पूरी ही मर चुकी थी. किसी प्रकार की भावनात्मक रस्सी से मेरे पैर बंधे हुए थे मगर मेरे लिए चलना अनिवार्य था. मैं पलटकर देखना चाहता था परंतु इतना साहस मुझमें न था. कैंटीन पहुंचकर खाने की थाली ली और खाना खाने के बजाए बैठकर सोचता ही रहा. एक-एक निवाला गले से नीचे उतरने में समय ले रहा था.

उसी रास्ते से वापस भी जाना था. इस अंजान पछतावे से मुक्ति पाने के लिए मैंने अपने पर्स के कोने-कोने को तलाश कर कुछ छुट्टे पैसे निकाले और उन्हें अपने बाएं हाथ में पकड़कर वापस लौटने लगा. इसबार उस भिखारिन की आंखों में नहीं देखूंगा, ऐसा मैंने सोच रखा था. जैसे ही उसके पास पहुंचा, उसने फिर मेरी तरफ हथेली बढ़ाई. इससे पहले कि मैं पैसे देता, मेरे कुछ परिचित सहकर्मी, जो आयु में मुझसे काफी बड़े थे, सामने से चले आ रहे थे. पता नहीं क्यों, जो पैसे मैंने हाथ में पकड़ रखे थे उनको मैंने अपने जेब में वापस रख लिया और यह कब हुआ मुझे पता भी नहीं चला. मेरे सहकर्मी मेरी तरफ देखकर मुस्कुराए. मैं भूल गया कि उनके मुस्कुराने पर प्रतिक्रिया स्वरूप मुझे भी मुस्कुराना था.

मेरे कदम नाटकीय रूप से ऑफिस तक पहुंच गए. आकर देखा तो कई काम रुके हुए थे. उन्हें निपटाकर शाम को घर पहुंचा. उस रात मुझे नींद ठीक से नहीं आई या यूं कहिए कि एक घुटन-सी महसूस हो रही थी.

अगले दिन की सुबह बाज़ार में गणित लगाकर कुछ छुट्टे पैसे बचाए और ऐसे तैयार हुआ मानो किसी घनिष्ठ मित्र की शादी में जाना हो. ऑफिस पहुंचकर उसी समय से दोपहर के एक बजने की प्रतीक्षा करने लगा. धूप वैसी ही थी पर मुझे लग नहीं रही थी. मैंने सोच लिया था कि अब चाहे सहकर्मी हों या कोई और, कोई कुछ भी सोचे, ये पैसे तो आज उस भिखारिन को दे ही दूंगा. उस दिन एक बजा भी नहीं था और न ही मुझे भूख लगी थी फिर भी मैं ऑफिस से निकल गया और एक दबी मुस्कुराहट के साथ पूरे उन्माद से रास्ते में जो भी थे किसी की तरफ बिना देखे तेज गति से चला जा रहा था. शायद ही इतनी तेज़ मैं कभी चला था. लग रहा था कि मेरी ट्रेन छूट रही है.

पुल के ऊपर से ही मैं उस जगह को देखने लगा जहां वह भिखारिन बैठी हुई थी. मुझे वह नहीं दिखी. मेरी वह दबी हुई मुस्कान दबी ही रह गई. जल्दी से पुल से नीचे उतर कर आगे-पीछे हर उस जगह पर नज़र दौड़ाई जहां उसके बैठे रहने की संभावना थी पर वह मुझे कहीं दिखी नहीं. मैं कुछ देर वहीं खड़ा रह गया. मेरे पैर ज़मीन में गडे जा रहे थे. गला सूख गया. जब मैं बिना कुछ सोचे समझे धीमी गति से कैंटीन की तरफ चलने लगा मुझे महसूस हुआ कि मेरा मोबाइल फोन बज रहा है.

“ कहां हो..? कैंटीन नहीं जाना क्या? मुझे भूख लगी है...” मेरे मित्र सुनील ने उत्सुकता से कहा.

“ हां... जाना तो है..” मैंने ऐसे कहा कि मेरी ध्वनि मेरे कानों में ही नहीं गई.

“ कहां हो..? ” सुनील ने पूछा.

“ कैंटीन में ” मैंने कह तो दिया .. लेकिन मुझे ही पता था कि मैं किसी पश्चाताप के दलदल में धंसा जा रहा था.

“ अजीब हो यार तुम तो..... ” डांटकर उसने फोन रख दिया.

मुझे उसकी इस बात में सच्चाई सुनाई दी. मैंने मन ही मन कहा.. हां, मैं अजीब तो हूं.

उस दिन के बाद मैं हर रोज़ वहां से यह सोचकर गुज़रता था कि किसी दिन वह बूढ़ी भिखारिन मुझे दिख जाए और मैं उसे वह पैसे दे सकूं जिन्हें खर्च करना मेरे लिए मुश्किल हो गया था.

फिर एक दिन जब मैं ऑफिस के लिए निकला तो मैंने देखा कि एक वृद्ध भिखारी खड़ा था. मैंने उसकी आंखों में तो नहीं देखा पर जब उसने मेरी तरफ हथेली बढाई तो वह हाथ मुझे उसी बूढ़ी भिखारिन के हथेली जैसा ही लगा. जो पैसे मुझसे खर्च नहीं हो रहे थे उन्हें उन्हीं कांपते हाथों में देकर सिर झुकाए अपने रास्ते चल पड़ा.

उम्र

भरत लाल राम
कार्यालय अधीक्षक
प्रमुख मुख्य सामग्री प्रबंधक/का/सिकंदराबाद

गुजर रही है उम्र
पर जीना अभी बाकी है |
जिन हालातों ने पटका है जमीन पर,
उन्हें उठकर जवाब देना अभी बाकी है |

चल रहा हूँ मन्जिल के सफर में,
मन्जिल को पाना अभी बाकी हैं |
कर लेने दो लोगों को चर्चे मेरी हार के,
कामयाबी का शोर मचाना अभी बाकी है |

वक्त को करने दो अपनी मनमानी,
मेरा वक्त आना अभी बाकी है |
कर रहे हैं सवाल मुझे जो हारा समझ कर,
उन सबको जवाब देना अभी बाकी है |

निभा रहा हूँ अपना किरदार जिदंगी के मंच पर,
परदा गिरते ही तालियाँ बजाना अभी बाकी है,
कुछ नहीं गया हाथ से अभी तो,
बहुत कुछ पाना बाकी है |

तिरंगे का कफन होगा

रौशन कुमार
तकनीशियन III,
वरि.से.इंजी/वि/एमवपी/का/विजयवाडा

देश के सैनिक कहते हैं -
कि होली के मालपुए खाए थे,
संग सेवइयों का निवाला था
रमजान के रोजे रखते जो ,
वो बडे ही किस्मतवाले थे

कराये किसने ये आखिर
हमीं में कौम के झगडे
हमें गुमराह कर-कर के
कराये किसने ये लफड़े
हमें विश्वास तुम पे हो ,
तुम्हें विश्वास हम पे हो
कोई हमें क्या मिटाएगा

अगर सब अपने दम पे हो
दिलों में जो हैं उपजे
वही पैग़ाम लाए हम
हमें था इश्क सदा तुमसे
वफा - ऐ - आम लाए हम
करो तुम जो तेरी मर्जी ,
हमें मंजूर सब होगा

गिले – शिकवे की आंधी क्या
खता मंजूर सब होगी
मगर ये देश रहने दो
यही है बंदगी मेरी
वतन है माशूका मेरी
वतन ही दिल्लगी मेरी
कि हिन्दू और मुस्लिम को

जानता तक नहीं हूं मैं

भारत के सिवा कोई धर्म
मानता तक नहीं हूं मैं
गद्दारों को खबर कर दो
वतन ये नेक है मेरा

नहीं कोई जात और मजहब
वतन ये एक है मेरा
चमन में गुलाबों की
महक को फैल जाने दो
वतन में बस मोहब्बत की
लहर को फैल जाने दो
फिर देखना एक दिन
हमारा कारवां क्या होगा
वतन पर मर मिटे ये तन
तिरंगे का कफ़न होगा
वतन पर मर मिटे यह तन
तिरंगे का कफ़न होगा.

किस्मत

गोपाल कृष्ण श्रीवास्तव "गोलू"
कनिष्ठ अनुवादक, राजभाषा अनुभाग,
विजयवाड़ा मंडल

दिन भर सूरज के ढ़लने का करते रहे वो इंतजार
उधर पूर्णिमा का हसीन चाँद निकलने को था तैयार
सायं काल की गोधूलि बेला में होना था उनका दीदार
लब खामोश दिल ए बेकरार आँखें जो होनी थी चार

मिलन की खुशी में यहाँ इस पार मन रही थी दीवाली
तो मिलन की खुशी में वहाँ मन रहा था शब-ए-बरात
मिलन के इस ढ़फा में थी चेहरे पर मासूमियत इतनी
दिख रहे थे मानो जैसे लताओं से लटके, अंगूर गुच्छेदार

है कब से उनके दिल का पक्षी छट-पटा रहा पिंजरे में
है मुद्दतों से वो बंधन तोड़के आसमां में उड़ने को तैयार
जब ठान लिया रण को और ताकत हो प्यार की बेशुमार
कब तक रोक पाएगी इन मजहबों के नफरत की दीवार

किस्मत में फिर भी कमबख्त शायद थी लिखी जुदाई
मुमकिन है शायद मिलन लिखा हो धरा के उस पार
क्योंकि यहाँ वो इंतजार करती रही नदिया के इस पार
और वहाँ वो इंतजार करता रह गया नदिया के उस पार

भोर हुई छिप गये सब तारे पर हो न सका कोई दीदार
वापस पग रैन को चल पड़े मन में लिए पीड़ा का भार
पूरे इलाके में कल की सुर्खियों का था ये मुख्य समाचार
कि हुआ है एक बड़ा बेरहम कत्ल नदिया के उस पार.

दुष्ट विचार; बुद्धिमान निर्णय

जी.विजय वर्धन
वसेइंजी/सवमाडि/बिट्रगुंटा/विजयवाडा मंडल

बहुत समय पहले एक गाँव में सतीश, राजू, मोहन और दीपक नाम के चार दोस्त थे. वे चारों मिलकर अपने गांव में कपास का कारोबार कर रहे थे. उस व्यवसाय से वे सुखी और समृद्ध थे.

इससे उनके व्यापारिक प्रतिस्पर्धियों ने कपास के व्यवसाय को नष्ट करने की योजना बनाई, इसलिए उन्होंने चार दोस्तों के कपास के गोदाम में चूहे डाल दिए. कुछ दिनों बाद कारोबार मंद हो गया और घाटा होने लगा.

चारों दोस्तों ने आपस में बात की तथा एक अच्छी और सुंदर बिल्ली खरीद ली. यह बिल्ली कार्रवाई में बहुत तेज थी, इसलिए कम अवधि में चूहों को पकड़ने और मारने लगी. बहुत कम अवधि में चूहों का आबादी कम हो गई. चारों दोस्त इस बिल्ली के चार मालिक बनकर देख-भाल करने लगे. चार सदस्यों में से प्रत्येक ने बिल्ली के चार पैरों में से एक-एक पैर का चयन किया और बहुत सावधानी से उसकी देखभाल करने लगे.

एक दिन चूहों का शिकार करते समय बिल्ली का एक पैर जख्मी हो गया. वह पैर राजू का है. फिर राजू ने उस पैर की देखभाल की और उसने पट्टी से बाम और ज्वार लगाया. पैर में चोट लगने के बावजूद बिल्ली चूहों का शिकार करती रही. शिकार करते समय तेल के दीपक से पट्टी जल गया. घबराहट के मारे बिल्ली गोदाम में रखे रुई के थैलों पर कूद गई जिससे उस रात सारी रुई जल गई. चार दोस्तों ने चौकीदार से पूछताछ की और उसने गोदाम में आग लगने का कारण बताया. अन्य तीन दोस्तों ने उस पैर और पट्टी के कारण राजू को दोषी ठहराया, जिससे पूरा गोदाम जल गया था और उन्होंने मुआवजे की मांग की और पैसे के लिए उसे परेशान करने लगे. राजू तीनों दोस्तों के व्यवहार से बहुत परेशान और व्यथित था. राजू ने यह भी कहा कि जब कपास के कारोबार से लाभ होता है तो हम चारों को समान रूप से बांटा जाता है, ऐसे में जब नुकसान होता है तो हमें समान रूप से वहन करना होता है. लेकिन वे नहीं माने. इसलिए राजू ने न्याय के लिए जज से सलाह ली.

जज ने चारों दोस्तों को इकट्ठा किया और पूछा कि उस दिन क्या हुआ था. उन्होंने सब कुछ बता दिया और तीन दोस्तों ने जज से राजू पर जुर्माना लगाने और नुकसान की भरपाई करने का अनुरोध किया. जज ने अगले दिन मिलने का आदेश दिया. जज ने राजू को निर्दोष घोषित किया और तीन दोस्तों से जुर्माना और नुकसान की वसूली का आरोप लगाया क्योंकि बिल्ली ने यात्रा करने या कूदने के लिए केवल तीन पैरों का इस्तेमाल किया था. वे पैर उन तीन सदस्यों के हैं. इसलिए उन तीन मित्रों को राजू को हानि की राशि का भुगतान करना होगा.

कूचिपूडि नृत्य

कु.पी.साई चरित श्री
केंद्रीय विद्यालय, दशम वर्ग
पिता – श्री पी. श्रीनाथ, सकाधि,विजयवाडा

कूचिपूडि नृत्य भारत की आठ शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक है. इस नृत्य का रूप लोकप्रिय नाट्य कला "कूचिपूडि यक्षगान" से विकसित हुआ है. इसकी उत्पत्ति कूचिपूडि नामक गाँव से हुई है. कूचिपूडि कृष्णा जिले के दिवि ताल्लुक का एक गाँव है, जो मचिलीपट्टणम से लगभग 15 मील की दूरी पर है और "क्षेत्रय्या" के जन्म स्थान मोव्वा से लगभग 3 मील की दूरी पर है, जिन्होंने सैकड़ों पद या नृत्य गीतों की रचना की. शातवाहन राजाओं की राजधानी श्रीकाकुलम् कूचिपूडि से कुछ मील की दूरी पर है. कूचिपूडि में कठिन पैर गति शामिल है और आमतौर पर एक समूह में प्रदर्शन किया जाता है अधिकांश कूचिपूडि पाठ "भागवत पुराण" की कहानियों पर आधारित हैं, लेकिन उनका ध्यान धर्मनिरपेक्ष है. "श्रृंगार रस" सबसे अधिक प्रचलित है. इस नृत्य में तीनों शास्त्रीय नृत्य तत्व शामिल हैं – नृत्या, नाट्य और नृत्ता. इसकी तुलना भरतनाट्यम से की जा सकती है, लेकिन इसकी अपनी अलग विशेषताएं हैं. कूचिपूडि नृत्य के तकनीक में मानव शरीर के पार्थिव घटकों को प्रकट किया जाता है. कूचिपूडि नृत्य शैली में "लास्य" और "तांडव" दोनों पहलू महत्वपूर्ण हैं.

किस गफलत में है तू,,,,,?

अभिषेक कुमार
तकनीशियन-III
सीसेइंजी/वि/एम व पी/ओंगोल

कोई तन पे मरते हैं, कोई धन पे मरते हैं।
संसार में शायद ही, कोई मन पे मरते हैं।।

कुछ पाने के खातिर,जो खोने से डरते हैं।
दुनिया से लडेंगे क्या ?, वो खुद से लडते हैं।

ऐसे लोग ही दुनिया में, अक्सर पछताते हैं।
बस स्वार्थ की खातिर जो, रिश्तों को निभाते हैं।।

बडा गर्व करता है, घर रोशन करके वो।
आंधी जब आती है, दीये खुद बुझ जाते हैं।।

किस गफलत में है तू, माटी की ये काया है
तेरे आगे – पीछे भी , इक मौत का साया है।।

जो करना है कुछ तो, अच्छा करके दिखला।
अच्छाई के खातिर, दुनियां में तू आया है।।

अंतिम मधु प्याला।।

अजय कुमार पाण्डेय
सिकंदराबाद मंडल

गहन सिमटती रात अँधेरी, हाथ लिए अंतिम मधु प्याला
तारों का रथ चाँद सारथी, जीवन अपना है मधुशाला।।

कितने द्वार खड़े पीने को, कितने प्याले तोड़ चुके हैं
कितने मदिरालय में रहकर, जीवन मधुघट फोड़ चुके हैं
प्रथम बूँद की कुछ को चाहत, कुछ अंतिम की बाट जोहते
मधु की लाली में नव जीवन, कुछ को प्यासी राह मोहते
कुछ डूबे मधु के सागर में, और बने कुछ जीवन हाला
गहन सिमटती रात अँधेरी, हाथ लिए अंतिम मधु प्याला।।

दिल से दूर हुए हैं कितने, जीवन मधु-सा जीनेवाले
मदिरालय ने कितने देखे, आते-जाते पीने वाले
कितने पीकर मस्त हुए हैं, कितने डूब गए जीवन में
कितने साकी रूठ गए हैं, डूबे कितने सिन्धु नयन में
जब-जब छलकी प्याली मन की, तब-तब नयन बने ख़ुद हाला
गहन सिमटती रात अँधेरी, हाथ लिए अंतिम मधु प्याला।।

कुछ मुस्काए नयनों में घुल, कुछ नयन कोर से ढलक गये
कुछ ने मन को दिया सहारा, अरु कुछ राहों में बहक गये
कुछ राहों में घिरकर भटके, कुछ को भय भ्रम ने आ घेरा

कुछ ने सहज भाव स्वीकारा, जीवन जनम मरण का फेरा
कितने मदिरालय खुद बहके, कितनों ने खुद संशय पाला
गहन सिमटती रात अँधेरी, हाथ लिए अंतिम मधु प्याला।।

कुछ को धूप मिली राहों में, कुछ ने पग-पग पाई छाया
कुछ अभाव में जीवन काटा, कुछ को हाथ मिली बस माया
कुछ बंधन में स्वयं बँधे हैं, कुछ को हालातों ने बांधा
कुछ साधक बन स्वयं सधे हैं, कुछ को अनुपातों ने साधा
कितनी मद की प्याली छलकी, अरु टूटी कितनी मधुशाला
गहन सिमटती रात अँधेरी, हाथ लिए अंतिम मधु प्याला।।

अंतिम बूँद प्रखर कितनी है, समझा किसने काल हलाहल
जिसने कंठ धरा है इसको, पग-पग चलता रहा चलाचल
लेकिन अंतिम बूँद मदिरा की, प्यासे मन को भरमाती है
मदिरालय के द्वार पहुँचकर, अंतिम सुख क्या दे पाती है
अंतिम सुख की चाह हृदय में, मधु घट सेज सजाती हाला
गहन सिमटती रात अँधेरी, हाथ लिए अंतिम मधु प्याला।।

जिंदगी के रास्ते

अनुज कुमार
वाणिज्य निरीक्षक
वमंवाप्र/का/सिकं.मंडल

एक रास्ते पर चल कर,
कोई जिंदगी ढूंढ लेता है.
एक रास्ते के लिये, कोई
पूरी जिंदगी ढूंढता रहता है.
लेकिन 'तलाश' दोनों को है,
जिंदगी के लिए रास्ते को,
और रास्ता के लिए जिंदगी को.

जिंदगी हो, जीने की राह न हो,
तो यह बेजान हो जाती है,
राहें हो, पर जिंदगी न हो
तो यह वीरान हो जाती है.

एक सही राह, बिगड़ी जिंदगी,
को सहसा संवार देती है.
एस सही जिंदगी, सबके लिए,
नयी राह तय कर देती है.

जिंदगी में सुख है, दु:ख है,
हंसी खुशी व तकलीफें हैं.
रास्ते में ठोकरें हैं, उतार-चढाव,
और कहीं फूल के बगीचे हैं.

अपनी मंजिल के लिए,
जिंदगी देखती है सदा रास्ता.
रास्ता भी साथ देता है उसे
जिसको, इससे है हार्दिक वास्ता.

रेखाएं

दीप नारायण चौहान
कनिष्ठ अनुवादक
वराधि/कार्यालय/सिकं.मंडल

अंतहीन आकाश में
मैं देखता हूँ इस आस में
कब सौभाग्य की बूंदे
मेरे हाथों से
दुर्भाग्य की रेखाओं को बदल देंगी।

लेकिन

मृत्यु दुनिया का
शाश्वत सत्य है।
परंतु
लेकिन भी
वह सत्य है,
जो असत्य के
लक्ष्मण रेखा को पारकर
अपनी निष्ठा को
स्थापित करता है।

लेकिन
अन्याय
से परे होकर
सत्य की ओर
हमें ले जाता है।

लेकिन की गोद
से ही उत्पन्न होता है
ज्ञान, विज्ञान, अनुसंधान।

लेकिन वह
स्वतंत्र आत्मा है
जिसकी मृत्यु
हो ही नहीं सकती।

लेकिन
वह पवित्र धर्म है
जो सत्य रूपी
मंदिर में विराजमान होती है।

लेकिन में
वह तेज़ है
जो सूर्य को भी
निस्तेज कर दे।

लेकिन
पर कोई कलंक लगा ही नहीं सकता,
क्योंकि वह
कदापि असत्य की
बोली नहीं बोलता।

लेकिन के धर्म काँटे से
असत्य,अन्याय,अधर्म,
अमर्यादा,अमानवीयता
बच ही नहीं सकता।

नाराज़ साथी

तू नाराज़ न हो साथी
इस बात से
कि मैंने सुध न ली तेरी
जानने की कोशिश भी न की तेरा सूरत-ए-हाल
अब बस यही तमन्ना है
हो जाऊं बेसुध तेरे ज़ख्म भरते-भरते
और मुझे ऐसी नींद आ जाए।
कि वह मुझे छोड़ कर कभी न जाए।

गर्मी की आहट

प्रणय कुमार सिंह
कनिष्ठ अनुवादक
सिकंदराबाद

भारत में जैसे ही बसंत ऋतु की समाप्ति होने लगती है वैसे ही प्रकृति करवट बदलने लगती है. मन में उन पुराने दिनों की भूली-बिसरी यादें सताने लगती हैं. मई-जून महीने की चिलचिलाती धूप शायद ही किसी के मन में न आती हो. यह समूचे भारतवर्ष में पूरी तरह अपनी धूप की प्रज्ज्वलित ज्वाला चहुमुंखी बिखेरती रहती है जिसकी आहट विशेष रूप से उत्तरी भारत के सुदूरपूर्व इलाके में दूर-दूर तक फैलती जाती है. इसका असर लोगों पर ही नहीं पड़ता बल्कि सभी जीव-जन्तुओं एवं पेड़-पोधों पर भी समान रूप से पड़ता है. अत्यधिक तापमान की वजह से प्रकृति की हरियाली पूरी तरह से गायब होने लगती है. हरे पेड-पौधों की पत्तियां सूखने लगती हैं और धीरे-धीरे पत्ते पीले होने लगते हैं. गांव के दूर-दराज में रहने वाले लोगों को भी काफी परेशानियां उठानी पड़ती हैं. गर्मी में अत्यधिक तापमान की वजह से सभी नदी, तालाब, कुएं सूखने लगते हैं, जिससे लोगों का जीवन काफी प्रभावित होता है. किसानों को फसल उगाने के लिए रात-दिन काफी मसक्कत करनी पड़ती है. दिन में धूप की गर्मी तो रात में बिजली की आंख मिचौली शुरू होने लगती है. नतीजा लोग पेड़ों के नीचे ही अपना घर बसा लेते हैं ताकि गर्मी का असर कुछ कम हो.

शहरों की बात करें तो हर जगह दो पहिया, चार पहिया वहनों की धुन सुनाई देती है. इनके लगातार धुएं की वजह से आसपास का पूरा वातारण दूषित हो जाता है, जिससे प्राकृतिक आबोहवा समाप्त होने लगती है. ऊपर से लोग कोविड बीमारी के डर से दो-तीन मास्क भी लगा लेते हैं, जिससे आक्सीजन की जगह कार्बन डाईऑक्साइड का सेवन ज्यादा होने लगता है, जिससे हमारे स्वास्थ्य पर विपरीत असर पड़ता है. रोजमर्रा की जिंदगी जीने वाले कामगारों, मजदूरों को चिलचिलाती धूप में पसीना बहाकर पैसे कमाने पड़ते हैं. पूरे दिनभर काम करने के बाद भी उन्हें आराम नहीं मिलता क्योंकि उनकी चिंता उनके परिवारवालों पर भी रहती है. जैसे ही पसीने से लथपथ होकर वे घर वापस आते हैं, उनकी निगाहें पंखों एवं कूलर पर जा टिकती हैं. वहीं दूसरी तरफ फ्रीज में रखे कोल्ड ड्रिंक, आइसक्रीम एवं रसदार जूस पीने की इच्छा होती है. धूप की आहत जैसे ही कम होती है, शरीर ठंडा पड़ने लगता है. नतीजा सुबह उठते ही सर्दी, जुकाम, शिर में तेज दर्द और बुखार से पीड़ित होने लगते हैं. अस्पताल में लंबी-लंबी लाइनें लगी रहती हैं. डॉक्टर से मिलने तक पूरा दिन बीत जाता है और जैसे ही घर आते हैं, लोगों का हुजूम लगना शुरू होने लगता है. वे मदद करने के बदले ऊपर से ताना मारते हैं और खरी-खोटी भी सुनाने लगते हैं.

सचमुच में गर्मी की आहट हर तरफ सुनाई पड़ती है. यह वही सुनसान महीना है जब लोग घरों में दुबके रहते हैं कहीं भी दूर-दूर तक कोई नजर नहीं आता है. धरती भी इतनी गर्म हो जाती है कि लोगों का नंगे पांव चलना मुश्किल हो जाता है. आखिर, ऐसी जिंदगी जीने की आदत पड़ जाती है.

सभी को चाहे वह अमीर हो, गरीब हो, प्रकृति की गोद में ही रहना है. प्रकृति की आंचल इतना लंबा है कि सभी पेड-पौधे, जीव-जन्तु, पशु-पक्षी उसमें सिमटे हुए हैं.

हम जानते हैं कि मनुष्य ईश्वर द्वारा निर्मित सबसे बुद्धिमान प्राणी है. इसलिए हमें गर्मी के मौसम में हमेशा सकारात्मक सोच रखनी चाहिए. हमें गर्मी के सभी आरामदायक संसाधनों के द्वारा इस मौसम का आनंद लेना चाहिए, हालांकि हमें इसका उपयोग संयमित रूप से करना चाहिए.

प्रेमचंद एवं प्रेम

सूर्यांक गुप्ता
सहायक कार्य प्रबंधक, रायनपाडु

प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध के समाज को दर्शाया है. इस दौरान उन्होंने, उस समय के समाजवादी समाज में व्याप्त कठिनाइयों और मूलत: सर्वहारा वर्ग के ऊपर होनेवाले भेदभाव का व्यापक चित्रण किया है. प्रेम समाज का मूल अंग होता है और किसी भी विपरीत परिस्थिति में इसकी उपस्थिति समाज के जीवित होने का सबूत होती है. प्रेमचंद ने छोटे-छोटे हिस्सों में अपने उपन्यासों के अधिकांश भागों में इसका उल्लेख किया है. इनकी कहानियां मूलत: उत्तर प्रदेश के लखनऊ, कानपुर और इलाहाबाद जिले एवं इसके आस-पास के इलाके का चित्रण करती हैं. अतएव इस जगह में उस दौरान व्याप्त कई कुरीतियां भी प्रेमचंद के लेखन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं. इन उपन्यासों में अंतर्जातीय प्रेम को सजीव रूप से दिखाया गया है तथा इसका उस दौरान के समाज पर पड़ने वाले प्रभाव को भी दिखाया गया है. भारतीय संस्कृति प्रेम पर प्रभाव दिखाती है तथा प्रेम के अलौकिक अंग का विस्तृत विवरण साफ-साफ दिखाई देता है.

प्रेमचंद ने अपने साहित्य में प्रेम के कई अंग दिखाए हैं उनमें से एक उदाहरण है, प्रेमाश्रम में गायत्री देवी का, उनके पति के प्रति प्रेम, जो इस संसार से कई वर्ष पहले ही विदा ले चुके थे. गायत्री देवी का अपने पति के प्रति प्रेम तथा उनकी इच्छाओं का सम्मान उनके लिए अपनी जिंदगी से बढ़कर था. वे पराए पुरुष की तरफ देखना तो छोड़िए, उनके बारे में सोचना भी पसंद नहीं करती थी. गायत्री एक आदर्श पत्नी का उदाहरण के रूप में उस समाज के अनुसार दिख रही थी. उनका पति दुराचारी था तथा यह सब जानते हुए भी वह उसके तह तक नहीं जाना चाहती थी. वही ज्ञानशंकर को देखकर उनके विचार को सुनकर उन्हें अच्छा तो लगता है और वो उनका संग तो चाहती है पर उनसे शारीरिक निकटता उन्हें रास नहीं आती है. वह उनके गुणों की प्रशंसा करती है तथा अवगुणों को जानते हुए भी उसे पुरुषों का विशेषाधिकार समझ कर माफ कर देती है. गायत्री देवी और ज्ञानशंकर के बीच पनप रहे रिश्ते को लेखक ने भिन्न नजरिए से एक दूसरे के परिपेक्ष्य में दिखाया है. यह रिश्ता गायत्री देवी के दृष्टिकोण से राधा और कृष्ण के समान था जिसे समाज के बंधनों से कोई

लेना-देना नहीं था और यह स्वार्थमुक्त था परंतु ज्ञानशंकर की ओर से इसमें लोभ, छल और कपट का गहरा सम्मिश्रण था जिसमें शारीरिक संबंध की बू आती थी. प्रेमचंद ने एक ही उपन्यास के अलग-अलग हिस्सों में प्रेम शब्द का अलग-अलग अर्थ निकाला है तथा उसकी आधुनिकता के साथ कैसा संबंध है उसे दिखाने की कोशिश की है. उन्होंने किसी भी पात्र के साथ छेड़-छाड़ न करते हुए उन्हें खुद का दृष्टिकोण प्रदान किया है एवं उनके चरित्र का निर्णय पाठक पर छोड़ दिया है. प्रेमचंद ने आधुनिकता और परंपरा दोनों का समर्थन न करते हुए उनके विभिन्न पहलुओं को दर्शाया है. प्रेमशंकर, जो कि अमेरिका से कुछ वर्षों बाद पढाई करके वापस आ रहे थे और उनकी धर्मपत्नी के प्रेम के बीच आस्था की दीवार थी. वो एक दूसरे का संग चाहते थे पर समाज की दृष्टि में प्रेमशंकर का धर्म भ्रष्ट हो चुका था तो श्रद्धा उनके पास भी नहीं आ सकती थी. यह प्रेम वस्तुवादी नहीं था तभी जब प्रेमशंकर को गांववालों के लिए बांध बनाने की आवश्यकता हुई तो श्रद्धा ने अपने आभूषण बिना सोचे समझे प्रेमशंकर को भेंट कर दिये. दोनों के बीच गंगातट पर भोर में हुआ संवाद उनकी मानसिक विचलता को प्रकट करता है और उनके बीच दूरी के कारणों को भी स्पष्ट रूप से दिखाता है. लेखक ने ज्वालासिंह जो कि पेशे से कलक्टर थे और उनकी पत्नी के बीच प्रेम का भी एक अलग कोण से चित्रण किया है तथा वस्तुवादिता एवं वस्तुविहीनता का समागम दिखाया है. जिसमें वस्तुवादिता पर वस्तुविहीनता का आधिपत्य हो जाता है. विद्यावती जो कि ज्ञानशंकर की पत्नी थीं, अपने पति के गलतियों का कई जगह उन्हें अहसास कराती है तथा पत्नीधर्म का पालन करती है. इसी क्रम में वह गायत्री को भी आगाह करने उसके घर जाती है तथा असफल होने पर प्राण त्याग देती है. ये उपन्यास एवं कहानियां आध्यात्मिक और अलौकिक प्रेम के रंग को आत्मसात भी किए हुए हैं तथा एक भक्त और भगवान के बीच अनूठा रिश्ता दिखाते हैं. दुखरन सेठ का जब एक मामूली से कारिंदे के द्वारा अपमान होता है और उसे अभद्रता का सामना करना पड़ता है तो वह भगवान की शातिग्राम मूर्ति छिन्न-भिन्न कर देता है और उनके वजूद को तरह - तरह से नकारता है परंतु कहानी के अंत की तरफ जब 'अंत भला तो सब भला' का दृश्य आता है तो उतने ही प्रेम से उन्हें अपनाता है और उनकी शरण को स्वीकार भी करता है.

इसी तरह गोदान उपन्यास में गोबर और झुनिया के प्रेम पर प्रकाश डाला गया है जो जाति बंधन से परे है तथा कई समाज द्वारा गढ़ी गई मर्यादाओं के प्रतिकूल है. झुनिया एक विधवा है जो

समय-समय पर घर के बाहर जाकर दूध दही का पैतृक कारोबार करती है तथा कई केंचुली ओढे हवस के भूखे सांपों का सामना करती है. गोबर उसके उल्टा थोड़ा नादान है और बल पर अधिक बातें करता है. दोनों की गांव तक बातचीत प्रेम के अनोखे भाग जो कि हम समय-समय पर जान देने से दिखाते हैं, को चित्रित करती है. इस वार्तालाप में वे उल्लेखित करते हैं कि जान देने का मतलब 'साथ निभाना' होता है. जान देना दिखाता है कि अब आपने समाज से बंधन तोड़कर उसे किसी के हाथों में दे दिया है और अब आप उसी इंसान का हिस्सा हो, प्रेम द्वार - द्वार सबसे नहीं मिलता और इसकी प्राप्ति एक बंधन में बंधकर ही हो सकती है. इसके लिए आपको अपना सर्वस्व न्योछावर करना पड़ेगा अर्थात सब कुछ खोकर ही इसकी प्राप्ति हो सकती है. इसी तरह सिलिया और मातादीन के प्रेम पर भी वह बदलाव की स्थिति दिखाई गई है जिसमें मातादीन जाति का बंधन तोड़ना चाहते हुए भी उससे भाग नहीं पाता सिलिया जो कि एक छोटी जाति से आती है को छोड़ देता है. परंतु उन दोनों के प्रेम का परिणाम रामू, एक दो वर्षीय अबोध बालक उस दूरी को भरता है और मातादीन घड़ी घडी केवल उसे निहारने होरी के घर आता है. अंत में रामू की मृत्यु, उसके हृदय को चीर छीर कर देती है और वह एक पिता का धर्म निभाकर उसका अंतिम संस्कार करता है. भाइयों के बीच एक अनूठा रिश्ता होता है और वह लाख दूरियों के बाद भी मिट नहीं पाता चाहे लाख ही दीवारें क्यों न खड़ी हों बीच में. होरी यह जानते हुए भी कि उसके भाई हीरा ने जान-बूझकर उसकी गाय को जहर खिलाया है उसको बचाने का हर संभव प्रयास करता है और यहां तक कि अपने बच्चों की कसम खाने को भी तैयार हो जाता है. हीरा के चले जाने तक वह ही उसके खेत और बीवी का ख्याल रखता है. इस क्रम में वह अपनी ही बीवी के ऊपर हाथ उठाता है और उसे भरे समाज में जलील करता है जो उसने अपनी पूरी जिंदगी में नहीं किया था. उसकी प्राणप्रिय गाय का मर जाना, पूरे परिवार और यहां तक पूरे गांव का उसके विपक्ष में खड़ा हो जाना उसे अपने भातृ धर्म से डिगा नहीं पाता है.

प्रेमचंद अपने उपन्यासों के माध्यम से समाज में प्रेम और उसका सकारात्मक प्रभाव सामाजिक बंधनों में और उसकी अनुपस्थिति में दर्शा रहे थे. ये प्रेम के जगह जाति बंधनों को तोड़ता था और कई जगह इसने उम्र की भी सीमा लांघे. यह प्रेम वस्तुवादी भी था और निष्काम और छल कपट रहित भी. इसके कई आयाम थे और हर आयाम का अपना एक महत्व था. ये प्रेम समय और जगह दोनों के हिसाब से बदल रहा था. यदि आप गोदान को देखें तो एक पशु के प्रति और यदि आप

प्रेमाश्रम में ज्ञानशंकर को देखें तो वस्तु के प्रति. अनेक बंधनों को तोड़ते हुए यह जाति से परे था जिसमें गोबर और झुनिया थे एवं मातादीन और सिलिया. प्रेमचंद ने बच्चों के प्रेम का भी खूबसूरत वर्णन किया है तथा इसे छोटी मछली बताकर इसको किसी जाति-पाति के बंधन में नहीं माना है. सिलिया के बच्चे का सहज आकर्षण और उसका बालपन प्रेम के पनपने में सहायता करता है और मातादीन को पुन: सिलिया के करीब लाता है. प्रेम के कई प्रकार और हर प्रकार एक दूसरे से इस तरह से बांधे हुए हैं कि हर डोर एक दूसरे को मजबूती प्रदान कर रही हो. प्रेम प्रेमशंकर का था जो विज्ञान से भरपूर था और एक तरफ पारंपरिक प्रेम श्रद्धा का था. दोनों प्रेम में दृष्टिकोण का फर्क था पर मात्रा का नहीं. दोनों ही सराबोर थे उस प्रेमरूपी सागर में अपने अपने बंधनों के साथ. हर समाज चाहे वह आज का हो या कल का बंधन लगाता है पर उसे एक नए तरीके से पनपने का मौका भी प्रदान करता है. बंधन मानसिक होते हैं और प्रेमचंद ने शायद हर पंक्ति में दिखाने की कोशिश की है लोगों के पास खाने को दो जून की रोटी नहीं थी और तो कर्ज के बोझ तले दबे हुए थे पर उनमें खुशी थी. वे स्वतंत्र थे अपनी उस मिट्टी में, उस जमीन में और उस समाज में. उनके ऊपर बंदिशें थी पर उन बंदिशों में स्वच्छंद उडते थे. प्रेमचंद ने अपने उपन्यासों में प्रेम को बांधा नहीं है और उसे केवल स्त्री और पुरुष के नजरिए से नहीं देखा है, उसमें एक मां की ममता, बच्चे की चंचलता और पशु के प्रति मोह को भी उतना ही स्थान दिया है. यह प्रेम मानव-केंद्रित नहीं था और यह प्रेम विभिन्न पशुओं को दिखाता था और उनका स्पष्टीकरण भी देखा था. इसमें आधुनिकता भी थी और परंपरा भी. प्रेमचंद ने दोनों में से किसी को श्रेष्ठ बताने की कोशिश नहीं की और न ही उसमें नुस्ख निकाले अपितु उन्होंने यह निर्णय पाठकों पर ही छोड़ दिया.

***

मेरा बचपन

पी. कोटेश्वर राव
कार्यालय अधीक्षक, कार्मिक शाखा
रायनपाडु

यादों का भंडार,
साथियों का आगार ।
खेलने कूदने का मन
यही है मेरा बचपन ।।

पढने में था ढीला,
खेलने में था भोला।
सब का मन था पर भला
तभी है भोला भाला ।।

न किसी के मन में था द्वेष,
न कोई नौटंकी का वेश ।
सभी में था अपनापन,
यह ही है मेरा बचपन।।

लड़ते थे दोस्तों से हम,
झगड़ते थे हर चीज पे हम।
मिल जाते थे पर तुरंत हम,
हिल जाते थे भर हंसी मजाक में हम।।

कोयल जैसा गाते थे,
मोर जैसा नाचते थे।
हमने जीवन को जिया है,
इसीलिये अभी भी ज़िंदा है।।

उस समय की यारानी,
अब हो गयी पुरानी।
सभी अपने जीवन में व्यस्त,
अपनी ही दुनिया में मस्त।।

अब न रहा वो बचपन,
न रहा वो दोस्ती।
हर वक्त की लड़ाई,
जीवन से हो गयी जुदाई।।

***

मेरी कलम से.....

प्रिंस कुमार,
तकनीशियन-III
रायनपाडु

मैं कोई बड़ा लेखक नहीं हूं और न ही कोई बड़ा दार्शनिक. लिखने की कला का प्रयोग मैं अपने जीवन में सदा निखारना चाहता हूं. यह मेरी जिज्ञासा तब से शुरू हुई जब मैं सातवीं कक्षा में पढ़ रहा था. उस समय आई फिल्म "नन्हें जैसलमेर" (2007) जो मेरे इस कला को प्रदर्शित करने की प्रेरणा का स्रोत बना. यह फिल्म सबसे युवा लेखक विक्रम जी के द्वारा लिखित पुस्तक "नन्हें जैसलमेर" को चित्रित किया गया है. इन्होंने महज अपनी 21 वर्ष के उम्र में इस पुस्तक को प्रकाशित कराया था. इन्हें साहित्य के क्षेत्र में बुकर पुरस्कार से भी नवाजा गया था.

इन्हीं की प्रेरणा से हमें भी कुछ लिखने की इच्छा हुई. जीवन के बारे में जानने की इच्छा हमेशा बनी रहती है. इनके कुछ पहलू प्रेम भावना, विचार-व्यवहार, रिश्ते, जिज्ञासा, आकांक्षाएं, परिवार, समाज, दोस्त, प्रकृति प्रदत्त अमूल्य धरोहर से प्रेम आदि के बारे में प्रयोगात्मक जानकारी प्राप्त करना ही मेरी बचपन की जिज्ञासा है. इनकी जानकारी सर्वप्रथम मुझे अपने परिवार से ही प्राप्त हुई. परिवार एक ऐसा मंच है जहां से जीवन रूपी गाड़ी का उद्गम बिंदु होते हुए जीवन रूपी गाडी को आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है. परिवार ही वह स्थान है जहां यह तय होता है कि जीवन संसार रूपी मार्ग को किस तरह व्यतीत करेगा. मेरे अनुसार जीवन में मां-बाप के प्यार-दुलार उनकी आवश्यकता की पूर्ति के बीच भी एक सीमा होनी चाहिए. इस सिद्धांत के प्रेक्षण के लिए मैंने दो बच्चों के जीवन का अध्ययन किया. एक बच्चे का जन्म पूर्ण संपन्न परिवार में हुआ था जबकि दूसरे बच्चे का जन्म एक मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था. दोनों की परवरिश एक ही गांव में हुई. संपन्न परिवार वाले बच्चे को मां-बाप के द्वारा प्यार-दुलार जरूरत से ज्यादा दिया जाता थी जबकि मध्यम वर्गीय परिवार वाले के बच्चे को प्यार-दुलार तथा आवश्यकता की पूर्ति जरूरत से थोड़ा कम मिलता था. पहले वाले बच्चे के जीवन में किसी चीज की कमी खली ही नहीं जबकि दूसरे बच्चे के जीवन में थोड़ी कमी झलकती थी. संपन्न परिवार वाले बच्चे पर बाहर घूमना, दोस्त बनाना, गांव में गरीब परिवार के बच्चों के साथ उठना, बैठना, बाहरी वातावरण में जीवन व्यतीत करना आदि पर पाबंदी थी ताकि उसका जीवन स्तर नीचे न गिर जाए जिसके कारण उसका जीवन सारी आवश्यकता की पूर्ति के बावजूद एक चारदीवारी के

अंदर ही सीमित था तथा उसे किसी बाहरी वातावरण का ज्ञान न मिला. प्यार दुलार और आवश्यकता की पूर्ति में कोई कमी नहीं हुई जिसके कारण वह अपने मां-बाप पर ही पूर्ण आश्रित हो गया तथा उसका पूर्ण मानसिक विकास तथा व्यक्तित्व विकास न हो सका. जबकि मध्यम वर्गीय परिवार के बच्चे पर ऐसी कोई पाबंदी नहीं थी. उसको सिर्फ कमी थी तो वह मां-बाप के भरपूर दुलार तथा सभी आवश्यकताओं को पूरा करने की, जिसके कारण वह हमेशा यह सोचता था कि उसकी कमी - मैं अपने परिवार से कैसे दूर करूं. बाहर वातावरण में घूमते हुए दोस्त बनाता सुख-दुख साझा करते समाज की कुरीतियों को दूर करने के लिए सोचता सामाजिक जीवन तथा व्यक्तित्व जीवन के विकास के बारे में हमेशा सोचता रहता था जिसके कारण उसका पूर्ण मानसिक तथा व्यक्तित्व विकास हुआ. कालचक्र बीतता गया दोनों बच्चे किशोरावस्था से युवावस्था में आ गए. पहला बच्चा अपने मां बाप पर ही आश्रित है. समाज से उसको कोई लेना-देना ही नहीं है जबकि दूसरा बच्चा स्वयं अपने पैर पर खड़ा हो जाता है अपने परिवार का भरण पोषण स्वयं करता है. अपने गरीब दोस्त को संभालता है, दुखी व्यक्ति की मदद करता है और समाज में कुरीतियों को दूर करने का प्रयत्न करता है. वह आत्मनिर्भर हो जाता है. जब वे दोनों किशोरावस्था से प्रौढ़ावस्था में आते हैं तो उस समय प्रथम बच्चा को जीवन व्यतीत करना बहुत कठिन हो जाता है उसे अपना जीवन यापन करने के लिए इधर-उधर भटकना पड़ता है जीवन उसको बोझ की भांति लगने लगती है क्योंकि वह हमेशा मां-बाप पर ही आश्रित रहा. समय ऐसा हो जाता है कि मां बाप की भी अवस्था ढल जाती है और वे भी अपने बच्चों पर आश्रित हो जाते हैं उस समय वो बच्चा जीवन से लड़ने लगता है, उस समय उसका जीवन बिना पतवार के नाव की भांति हो जाता है जिसकी कोई मकसद ही न हो. वह अब जीवन जी नहीं रहा था जबकि वह जीवन काट रहा था. इधर वह बच्चा है, जो मध्यम वर्गीय परिवार से हैं जो आत्मनिर्भर है. परिवार, समाज के कल्याण का काम कर रहा है उसका जीवन सुखमय व्यतीत हो रहा है. वह जीवन के हर पहलू को खुशी से जी रहा है. इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि मां-बाप को भी बच्चों को प्यार दुलार तथा उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति एक सीमा तक करनी चाहिए. बच्चों को ज्यादा कंफर्ट जोन में नहीं रखना चाहिए. न्यूटन के गति का नियम, जीवन पर भी लागू होता है; प्रथम नियम कहता है कि कोई भी वस्तु उसी अवस्था में रहना चाहती है जिस अवस्था में वह रहती है जब तक कि उस पर कोई बाह्य बल कार्य न करें.

जीवन के विषय में भी मेरा ऐसा ही अनुभव है हम जिस अवस्था में है उसी अवस्था में रहना चाहते हैं इसके लिए बाह्य बल प्रेरणा स्रोत कहानियां, लेख, माता-पिता, गुरु आदि द्वारा दी गई शिक्षा इत्यादि के माध्यम से हम अपने जीवन की अवस्था में परिवर्तन करते हैं. रासायनिक शास्त्र के अनुसार उत्प्रेरक जिस प्रकार रासायनिक अभिक्रिया को घटा या बढ़ा सकता है ठीक उसी प्रकार हमारे जीवन में सकारात्मक सोच तथा नकारात्मक सोच दो प्रकार के उत्प्रेरक की तरह कार्य करते हैं, जो हमारे जीवन स्तर को बढ़ा या घटा सकता है जब मैं पढ़ता था तो मेरे गुरुजी बोलते थे कि हमेशा सकारात्मक व्यक्ति के पास रहो जिससे तुम्हारा जीवन भी सकारात्मक हो जाएगा और तुम खुश रह पाओगे. जब मैं वैवाहिक जीवन में आया तो देखा कि जिंदगी सकारात्मक और नकारात्मक दो पहिए पर चलने वाला साधन है जहां मैंने देखा कि जीवन चरित्र सकारात्मक विचारों से नहीं चल सकती इसके लिए हमें नकारात्मक विचारों का अध्ययन करते हुए सकारात्मक विचार को अपने जीवन में लाना होगा कि नकारात्मक विचार उसके सामने शिथिल पड़ जाए और हम अपने जीवन में सफल हो जाए और दूसरों को भी सफल बनाएं. जीवन में मेरे पापा द्वारा दी गई प्रेरणा - जब हम छोटे थे उस समय हम अपने बड़े या छोटे भाई बहन से किसी कारण से झगड़ा कर लेते या किसी चीज को पाने का जिद करते या स्कूल जाने को मन नहीं करता तब हम लोगों को अपने पापा जी द्वारा अच्छी तरह से पिटाई या डांट खानी पडती थी. हम लोगों का मन बहुत दुःखी हो जाता था और हम लोग उदास हो जाते थे. जब पापा जी का मन शांत हो जाता तो हम लोगों को बुलाकर अपने पास बिठाते थे और दो चीजों की ओर इशारा कर, उसका उदाहरण देकर हम लोगों को समझाते थे. 1. आम की वृक्ष की ओर और 2. कंटीली लता की ओर हमेशा वे बोलते थे कि जीवन में आम वृक्ष की तरह बनो जिसे किसी पर आश्रित होना नहीं पड़ता है वह स्वयं परिवेश के अनुसार अपनी ऊंचाई को प्राप्त करता है, फल लगने पर स्वयं झुक भी जाता है, आंधी, तूफान, वर्षा आदि आने पर भी अविचल अडिग बनकर खड़ा रहता है तथा वह दूसरों को शुद्ध वायु, फल, छाया तथा मृत होने पर लकड़ी प्रदान करता है, अर्थात वह अपना पूरा जीवन परोपकार के लिए समर्पित कर देता है.

जबकि लता, उसको स्वयं ऊपर उठने के लिए किसी की मदद की आवश्यकता होती है अर्थात वह शुरू दौर से ही किसी पर आश्रित हो जाता है. सूख जाने पर कांटे बिखेरता है जो कभी दूसरे को चुभन कर देती है, जिससे लोगों को वह क्लेश पहुंचाती है.

फिर वे प्रश्न पूछते थे कि तुम लोग क्या बनना पसंद करोगे ? तो हम लोग खुशी से बोल उठते थे. आम की तरह वृक्ष बनना पसंद करेंगे, तब वे बोल उठते थे कि जीवन में आम के वृक्ष के जैसा परोपकारी बनना होगा, दूसरों की मदद करनी होगी. ज्ञानवान होने पर लोगों के खुशी के लिए स्वयं को झुकना पड़ेगा. यहां तक कि अपने जीवन में ऐसा काम कर के जाएं कि मृत होने पर भी लोग आपको याद करें.

मेरे पापा जी हमेशा बोला करते हैं कि जीवन में अभिभावक या गुरु को एक कुम्हार के भांति होना चाहिए. जिस तरह कुम्हार एक अच्छी मिट्टी का बर्तन बनाने के लिए सबसे पहले मिट्टी की पहचान करता है, फिर साफ करता है, तब उसे चाक पर उतारता है और एक अच्छा ढांचा प्रदान करता है. उसके बाद उसे धूप में सुखाता है, फिर उसे अच्छी तरह से परीक्षण करता है और यदि उसके आकार में त्रुटि निकलती है तो अंदर की ओर सुहार देकर ऊपर से पीटता (ठोकता) है, जिससे उसका आकार भी सही हो जाए तथा वह टूटे भी नहीं. यहां तक कि उस बर्तन को सख्त या मजबूती प्रदान करने के लिए उस बर्तन को आग से तपाता है जिससे वह सुंदर, सख्त तथा आकर्षक बन जाता है.

ठीक उसी प्रकार हमारा जीवन भी ऐसे ही अनुसरण करता है. माता-पिता, अभिभावक तथा गुरु को अपने बच्चे या शिष्य की पहचान करनी चाहिए कि उसकी अभिरुचि किस क्षेत्र में है उसके बाद उसके प्रति मोह को त्याग कर हर पहलू को ध्यान में रखते हुए एक सफल इंसान बनाने का प्रयास करना चाहिए जिससे उसका जीवन सुख और शांति से व्यतीत हो सके.

<u>जीवन में रिश्ते पर किया गया मेरा परीक्षण:</u>

एक बार मैं अपने खेतों में विचरण कर रहा था तभी मेरी नजर मेड के किनारे एक पक्षी के बच्चे की ओर गया. उसके पंख अभी नहीं आए थे, वह सही ढंग से उड़ नहीं पा रहा था. वहां कोई दूसरा पक्षी भी नजर नहीं आ रहा था मुझे लगा शायद वह प्यासा हो. मुझे उस पर दया आ गई. मैं उसे पकड़ कर अपने घर लाया. उसे पानी पिलाया तब वह शांत होकर बैठ गया. उस समय, मैं अपनी मां से बोला कि मां, मैं इसे पालूंगा तो मां बोली कि हम लोगों के बीच नहीं जी पाएगी. कुत्ता या बिल्ली उसे मार देगी. मैं बोला हम लोग इसका संरक्षण करेंगे. तब मैंने एक कार्टून का पिंजरा

बनाया, उसीमें हम उसे दाना-पानी देते रहे फिर हम क्या देखते हैं कि उसका विकास बहुत कम हो रहा है तब मैंने सोचा कि इसे दिन में स्वतंत्र छोड़ देते हैं और रात में उसे संरक्षण के लिए पिंजरे में बंद कर देंगे. समय बीतता गया, पक्षी बड़ा हो गया और वह थोड़ा-थोड़ा उड़ने लगा दिनभर वह हमारे आंगन में तथा घर के आस-पास उड़ती कभी-कभी हमारे सर पर भी आकर बैठ जाता था. हमारे परिवार के सदस्य की भांति व्यवहार करने लगी थी. हम लोगों के मनोरंजन का साधन भी बन गई थी. जब कभी हम लोगों के सामने नजर न आती थी तो हम लोग उसे खोजना प्रारंभ कर देते थे जल्द न मिलने पर हमारा मन उदास हो जाता था. मन में एक बेचैनी सी महसूस होने लगती थी कभी-कभी मैं नाराज हो जाता था तो सोचता कि अब आएगी तो उसे स्वतंत्र नहीं छोड़ेंगे उसे पिंजरे में बंद कर देंगे. लेकिन जब आ जाती थी तो खुशी का ठिकाना नहीं रहता था हम उसे नहीं बंद करते. एक दिन की बात है किसी कारण उसे सुबह में किसी ने दाना नहीं दिया जिससे वह उदास हो गया. उस रोज हम लोग उसकी बहुत प्रतीक्षा किए पर वह नहीं आया. मेरे साथ उसका इतना लगाव हो गया था कि उसके चले जाने पर ऐसा प्रतीत हो रहा था कि मैं भी शहर छोड़ कर कहीं चला जाऊं. कुछ दिनों तक मैं अच्छे ढंग से खाना भी नहीं खा सका था. उसकी यादें हमेशा सताती रहती थी.

इससे मुझे यह एहसास हुआ कि रिश्ता मानव जीवन की संबंध की एक कड़ी है, जिसके अभाव में जीवन संभव नहीं है. जिससे प्यार, एहसास तथा एक दूसरे के बीच सहयोगात्मक विचार तथा एक दूसरे के प्रति भरोसा तथा कुछ पाने की इच्छा होती है. रिश्ता एक भरोसा नामक बंधन से चलनेवाली मनोवृत्ति है. इसे जीवन में अटूट विश्वास की कड़ी में बांध कर इसे स्वतंत्र छोड़ देनी चाहिए, इस प्रकार के रिश्ते हमारे जीवन भर साथ देती है, लेकिन विश्वास की कड़ी अगर डगमगाई तो रिश्ते भी डगमगाने लगते हैं.

इसका एहसास तब हुआ जब मैं शाम को अपने बाग में घूम रहा था कि अचानक तीन माह बाद मेरी वह पक्षी मेरे सिर पर आकर बैठ जाती है. मैंने उसे प्यार से सहलाकर पुन: छोड़ दिया. वह सामने के वृक्ष पर जाकर बैठ जाती है और मेरी तरफ देखकर अपनी मधुर आवाज से मुझे प्रसन्न करना चाहती है.

इससे मुझे जीवन में यह सीख मिली कि रिश्ते को जबर्दस्ती बांधकर नहीं निभाया जा सकता जबकि उसे विश्वास रूपी कड़ी से जोड़कर स्वतंत्र विचारानुसार चलाया जा सकता है ताकि जीवन में दोनों पहलु सुखमय हो तथा प्रसन्नता से अपना जीवन व्यतीत कर सके.

जीवन में वफादारी पर किया गया मेरा परीक्षण:

इस परीक्षण में मैंने पाया कि जीवन में किसी के प्रति जैसा व्यवहार करेंगे उसका परिणाम भी मुझे वैसे ही मिलेगा. जब मैं तृतीय या चतुर्थ वर्ग में पढ़ता था, उस समय मेरे यहां एक कुत्ता पाला गया था. उसके लिए हमने समय पर भोजन, पानी तथा सोने की भी व्यवस्था की थी. उसे कभी बांधकर नहीं रखा था. धीरे-धीरे वह बड़ा हो रहा था तथा वह हम लोगों के लिए मनोरंजन का साधन भी बन गया था. हम लोगों के साथ उसका इतना लगाव हो गया था कि वह हम लोगों का साथ कभी नहीं छोड़ता था. ठंडी के मौसम में सुबह जब हम लोग अपने खेत की ओर घूमने जाते थे वो भी हम लोगों के पीछे-पीछे घूमने चला आता था. ठंडी के मौसम में ओस से आच्छादित गेहूं की खेतों में दौड़ने में बहुत मजा आता था. वह भी मेरे साथ खेतों में दौडता, छलांग मारता था, हम लोग आनंद से प्रफुल्लित हो उठते थे. मेरे गांव से, मेरा स्कूल दो किलोमीटर दूरी पर था. वह हम लोगों के साथ स्कूल चला आता था. हमारी कक्षा के गेट पर हमारी प्रतीक्षा करता रहता था जब हमारे स्कूल में मध्यावकाश होता तो हम लोग उसे भी अपने लंच बक्स से खाना खिलाते थे और बोतल से पानी पिलाते थे. कभी-कभी वह हमारी कक्षा के अंदर चला आता था. सभी बच्चे डर जाते थे लेकिन वह किसी को कुछ नहीं करता था. हम उसके सर को सहला देते थे और बोलते थे- जाओ, बाहर बैठो तो वह बाहर चला जाता था और फिर कक्षा के गेट के पास बैठकर मेरा इंतजार करता था. कभी-कभी मैंने ऐसा देखा कि गुरू जी मुझे किसी कारणवश पीटते तो वह देखता था जैसे ही गुरू जी स्कूल के बाहर नजर आते तो वह उन पर भौंकता और काटने के लिए दौडता था. गुरू जी मुझसे बोलते थे कि कुत्ते को अपने घर पर छोड़कर आऊं. कभी-कभी वह अपने आप दौड़कर हमारे स्कूल चला आता था. हमारे स्कूल के दरबान उसे अंदर आने नहीं देते थे तो वहीं बैठकर मेरा इंतजार करता. वह हमेशा हम लोगों को खुश देखना चाहता था.

ठीक इसी प्रकार जीवन में भी हमें अपने माता-पिता, भाई, गुरु तथा अपनी जिम्मेदारी के प्रति वफादार होना चाहिए. अपने कर्म तथा किसी के स्नेह के प्रति पूर्ण वफादारी के साथ पालन करना चाहिए, भले ही आप कैसी भी परिस्थिति में क्यों न हो.

हमारे जीवन में कोई भी व्यक्ति ने भले ही क्षणिक मदद क्यों न की हो चाहे धन से, समय से, ज्ञान से या प्रभाव से उसे कभी नहीं भूलना चाहिए. समय मिले तो उन्हें भी हमें तन, मन तथा धन से जरूर मदद करनी चाहिए.

जिंदगी में मुझे एक लाइन हमेशा प्रेरित करती है ..... वह है

"Sympathy is better than gold."

अर्थात "पैसे की कीमत चुकाई जा सकती है पर सहानुभूति की नहीं."

<u>जीवन में भावनात्मक प्रेम (दोस्त) पर किया गया परीक्षण:</u>

मेरे अनुसार इस जगत में ऐसा कोई भी प्राणी नहीं है जिसे अपने जीवन में भावनात्मक प्रेम न हुआ हो. जीवन में सबसे प्रगाढ प्रेम भावनात्मक प्रेम होता है जहां पर उसे दूसरे से किसी भी चीज को पाने की इच्छा नहीं होती है और न होता है उसके प्रति कोई लालच, सिर्फ होता है कि उसके साथ अपनी भावनाओं को साझा करना. इस भावनात्मक प्रेम में प्राणी अपने से ज्यादा ख्याल जिससे वह भावनात्मक प्रेम करता है उसका रखता है. इसके परीक्षण के लिए मैंने तीन व्यक्तियों का अध्ययन किया.

(1) एक छोटे बच्चे का एक गुडिये के प्रति भावनात्मक प्रेम. मैंने उसे कई तरह के खिलौने देने का प्रयत्न किया पर उसने कोई खिलौना स्वीकार नहीं किया सिवाय उस गुडिया के. जब भी वह ज्यादा रोने लगती तब उसके सामने जैसे ही उस गुडिया को लाया जाता वह देखकर शांत हो जाती. जब वह खाना नहीं खाती तब उसके सामने उस गुडिए को लाया जाता तो भोजन करना या दूध पीना शुरू कर देती. उसे गुडिया दिखाकर दूर फेंक दिया जाता या किसी को दे दिया जाता तो वह जोर जोर से रोने लगती, भले ही वह गुडिया उसके लिए कुछ न कर रही हो. अर्थात उस छोटे बच्चे का उस गुडिया के प्रति भावनात्मक लगाव या प्रेम हो चुका रहता है.

कभी-कभी हम लोग यह देखते हैं कि कोई व्यक्ति किसी जगह पर रोज अकेला बैठता है तथा वृक्ष या किसी चीज की ओर ध्यान कर सोचता है या मन ही मन बात करता है, जिससे उसके मन को शांति मिलती है. अर्थात वह व्यक्ति को उस जगह या वृक्ष से भावनात्मक प्रेम करता है. इससे मानसिक तनाव या दुख साझा कर आत्मा को संतोष प्राप्त होता है और उसे जीवन जीने की उम्मीद जागृत हो जाती है. कभी-कभी आपने देखा होगा कि किसी बूढे को किसी छोटे बच्चे से प्रेम हो जाता

है जैसे दादा जी को अपने दो साल के पोते से प्रेम, अपने जीवन के सारे सुख-दुख उससे साझा करते हैं तथा वे पोते का बहुत ख्याल रखते हैं. अर्थात् पोता उसका ख्याल रखे या न रखें फिर भी उनके बीच भावनात्मक प्रेम हो जाता है. अगर कुछ समय के लिए बच्चे को उस बूढे से अलग कर दिया जाता है तो देखा जाता है कि वह बूढा उदास और मायूस होकर बैठा रहता है मानो कि उसके जीवन से कुछ खो गया हो. वह हमेशा उसी के ख्यालों में डूबा रहता है. भले ही वह बालक उस बूढे की कोई मदद करे या न करे पर बूढे के लिए वह सब कुछ है. ऐसा होता है भावनात्मक प्रेम. मेरे अध्ययन के अनुसार सबसे अधिक भावनात्मक प्रेम से जुडती है तो वो होती है मां, अपने संतान के प्रति. मैंने देखा है कि मां जब अत्यधिक किसी बात या समस्या से दुखित हो जाती है या अत्यधिक प्रसन्न हो जाती है तो अपनी मनोभावना अपने गोद में पल रही बच्चे से साझा कर अपने मन को संतोष दिलाती है. मां के भावनात्मक प्रेम में इतनी शक्ति होती है कि उसका संतान किसी भी परिस्थिति में हो चाहे वह सुख में हो या दुख में, उसका आभास उसे हो जाता है. अर्थात् भावनात्मक प्रेम हमारे जीवन की यह दशा है जिसके कारण हमारे मन की शांति, संतोष जीवन रूपी गाड़ी को आगे बढने के ले दिशा प्रदान करती है. मेरे अनुसार भावनात्मक प्रेम की भी एक सीमा होनी चाहिए ताकि अगर किसी कारणवश हमसे दूर भी चला जाता है तो हम अपने को संभाल सके. इस परिस्थिति में हमारे हृदय को बहुत बड़ा क्लेश पहुंचता है क्योंकि भावनात्मक प्रेम जीवन से कभी समाप्त नहीं होता. परिस्थिति के अनुसार उसे भुला दिया जाता है. लेकिन वह मानसिक पटल से मिट तो जाती है पर दिल में सदा के लिए स्माहित हो जाती है.

मैंने जब सारे पहलुओं का निष्कर्ष निकाला तो मैंने पाया कि जीवन देखने में जितना आसान है, उसे जीने में उतना ही कठिन है. पर इन सारी कठिनाइयों को हम दूर कर सकते हैं और अपना जीवन खुशहाल बना सकते हैं. इसके लिए हमें अपने आपको परिस्थिति के अनुकूल ढालना होगा तथा अपने कर्म के बल पर परिस्थिति को अपने अनुसार परिवर्तित करना होगा.

जिंदगी

पैडिराजु. पी
तकनीशियन, बे-5
रायनपाडु

है जिंदगी जीने के लिए
अपनाओ तजुर्बा अपने आप
तन-मन से न करो कोई पाप
होते हैं जिंदगी में छांव और धूप!

होते हैं जिंदगी में उतार-चढाव
न दिखाओ ऊंच-नीच का भाव
करो सबका आदर-स्म्मान
मिलेगा तभी आपको भी सम्मान!

रखो याद हमेशा जिंदगानी की
रहो साथ हमेशा इनसानी की
रखो सदा अपनापन सबसे
रहे सदा सुख-संतोष से!!

है यह नाटक जीवन रूपी
लगे रहे जीवन भर विश्वास रूपी
डटे रहे जिंदगी में कुछ पाने की
लगे रहो सदा विकास अपनाने की!

बढ़े चले हर पल बिना रुके,
खड़े रहे हर पल कुछ पाने के,
रहे पाने सद्गति अपने आप
करे न कभी पाप अपने आप!.

दृष्टिकोण

योगेश दीपराज भस्मे
कनिष्ठ अनुवादक, गुंटूर मंडल

वह छुट्टी का दिन था. हर दिन की भाग दौड़ से राहत पाने का एक दिन. सप्ताह के छह दिन काम करने के बाद रविवार को जो फुर्सत मिलती है, उसका तो मजा ही कुछ और है. अपनी मर्जी से ऊठो. आराम से चाय पिओ. फिर घंटों तक न्यूज पेपर पढ़ो. किसी तरह की भाग दौड़ नहीं. ऐसे ही आराम से मैं न्यूज पेपर पढ़ ही रहा था कि डोर बेल बजी. मेरी पत्नि राधा रसोईघर में अपने काम में व्यस्त थी, इसीलिए उन्होंने मुझे कहा कि कामवाली बाई उर्मिला आई होगी, दरवाजा खोल दो.

मैंने जैसे ही दरवाजा खोला, सामने मेरे कॉलेज का दोस्त विशाल खड़ा था. मैंने कहा, अरे विशाल आओ. आज सुबह- सुबह कैसे आना हुआ? उसने कहां इधर से गुजर रहा था, सोचा तुमसे मिलता चलु. मैंने राधा को हम दोनों के लिए चाय बनाने के लिए कहां. विशाल कहने के लिए कॉलेज का मित्र था. लेकिन बहुत ही पकाऊ इन्सान था. सभी दोस्त उसे टालते थे. वह हमेशा कुछ न कुछ शिकायत करता रहता था. खुश रहना तो उसे आता ही नहीं था. भगवान की कृपा से सबकुछ तो था ही उसके पास, पर और ज्यादा पाने की चाहत में हमेशा दुखी रहता था और आसपास के माहौल को भी उदास कर देता था.

मैंने पूछा अरे विशाल, क्या हाल चाल है? सब ठीक है न? बस ! मौका मिलते ही उसने शिकायत करना शुरू कर दिया. कहने लगा कुछ भी ठीक नहीं, सब गड़बड़ है. दसवी कक्षा का रिजल्ट आया है, बेटे को बानबे प्रतिशत अंक मिले हैं. उसने थोड़ी ज्यादा मेहनत की होती तो और भी ज्यादा अंक मिल सकते थे. उसके लिए मैंने क्या नहीं किया? किताबें, ट्यूशन, इंटरनेट सारी सुविधाएं तो दी ही थी. बस आराम से बैठ कर पढ़ना ही था. लेकिन इसे कौन समझाए? मैंने कहा, अरे भाई बानबे प्रतिशत कम होते हैं क्या? बच्चे नेक ड़ी मेहनत की, अच्छे ही अंक प्राप्त किए हैं और तुम हो कि उसे प्रोत्साहित करने के बजाए डाट रहे हो. खुद भी नाराज हो रहे हो. हमें कभी इतने अंक मिले थे क्या? विशाल ने कहा, हमारा जमाना कुछ और था. मैंने कहा, अरे जमाना चाहे जो हो, तुम्हारा लड़का मेहनती है, होशियार है, अच्छे अंक प्राप्त किए हैं, अब खुश रहो. तुमको तो शिकायत करने के बजाय मिठाई लेकर आना चाहिए था. तो ऐसे ही है हमारे कॉलेज ग्रुप के मित्र विशाल. इनका नाम ही विशाल है लेकिन दिल बहुत संकुचित है.

हमारी बातें चल ही रही थीं कि कामवाली बाई उर्मिला आ गई. मेरी पत्नी ने उसे पूछा, आज इतनी देर क्यों हुई? उसने कहा, शर्मा जी के यहां मेहमान आए हैं, इसलिए काम ज्यादा था. तिवारी जी के घर भी कल पूजा थी, इसीलिए वहां भी काम ज्यादा था. राधा ने कहा - ठीक है, ठीक है! कल के बर्तन धोने है और फिर झाड़ू पोछा लगाकर जाना. यह उर्मिला हमारे अपार्टमेंट में सबके घर काम करती है. वह बहुत इमानदार है. दिखने में सावली, पर हसमुख है. हमेशा खुश रहती है. काम करते समय गुनगुनाती भी है. उसकी आवाज मीठी है. अपार्टमेंट में सब के घर में झाड़ू पोछा लगाना, बर्तन

धोना, कपड़े धोना आदि काम करती है. किसी के काम को लेकर शिकायत नहीं, सभी से अच्छा बर्ताव करती है, वह इमानदार भी है इसीलिए सभी लोग उसी से काम करवाना पसंद करते हैं.

हमारे कॉलनी में गणेशोत्सव बड़े धूमधाम से मनाया जाता है. सभी मिलकर विभिन्न सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन करते हैं. भगवान गणेश जी की मूर्ति की बड़े भक्तिभाव से स्थापना की जाती है. आकर्षक पेंडाल सजाया जाता है और तब कॉलनी की सभी महिलाओं को उर्मिला की याद आती है. क्योंकि वह बहुत ही सुंदर रंगोली निकालती है. महिलाएं उर्मिला को रंगोली निकालने के लिए बिनती करती है. बदले में पैसे भी देती हैं. लोग रंगोली की बहुत तारीफ भी करते हैं. उर्मिला गाना बहुत मीठा गाती है. इसीलिए सारी महिलाएं उर्मिला को भजन गाने के लिए अनुरोध करती हैं. फिर उर्मिला भी महिला मंडली के भजन संध्या के कार्यक्रम में अपनी मीठी आवाज में मधुर भक्तिगीत गाती है. इस तरह उर्मिला का सहयोग पाकर महिलाएं भी खुश हो जाती हैं.

बातों- बातों में विशाल ने कहा कि आजकल बच्चों की पढ़ाई पर खर्च ज्यादा होने की वजह से अपने लिए पैसा खर्च करने से पहले दस बार सोचना पड़ता है. देखो न अभी मुझे नया मोबाईल लेना था पर आगे बच्चों की पढ़ाई के लिए खर्चा लगने वाला है. इन बातों को सोच कर अभी तक मोबाईल नहीं ले पाया. मैने कहा, भाई पिछले साल ही तो तूने नया मोबाईल खरीदा! इस साल फिर से नया मोबाइल क्यों चाहिए? तो उसने कहा ऑफिस के दोस्त ने एडवांस वर्जन वाला मोबाईल खरीदा. अब मैं सीनियर हूं तो मेरे पास भी एडवांस मोबाईल होना चाहिए. मैंने कहा, अरे भाई हम मोबाईल में ऐसा क्या ही करते हैं. यूट्यूब देखते हैं, फेसबुक और वाट्सऐप चलाते हैं. कॉल करके बात करते हैं. और ये सारे काम हमारे मोबाईल में आसानी से हो जाते हैं. यही काम नये मोबाईल में करने के लिए कौन पच्चीस हजार खर्चे करे? लेकिन नहीं, उसे तो एडवांस मोबाईल ही चाहिए, सब को दिखाने के लिए. चाय पीते-पीते उसने नया मोबाईल खरीद नहीं पाने का रोना रोया. बाद में अपने घर चला गया. मैंने भी चैन की सांस ली.

दूसरे दिन से मैं भी अपने ऑफिस के काम में व्यस्त हो गया. एक-एक करके दिन बीत रहे थे. फिर से रविवार छुट्टी का दिन आ गया. सुबह उर्मिला काम पर आते ही राधा से सोमवार को छुट्टी लेने की बात करने लगी. राधा को गुस्सा आ गया. उसने कहा सोमवार, सप्ताह का पहला दिन, इस दिन कितनी भाग-दौड रहती है. तुम्हें छुट्टी लेनी ही है तो शनिवार या रविवार को क्यों नहीं लेती. ऐसा कौन-सा जरूरी काम है जो छुट्टी लेने की आवश्यकता है? वह बोली कि बच्चे के स्कूल में कल पैरेट्स टीचर मीटिंग है. वहाँ तो कंपलसरी जाना ही है. राधा बोली कि तुम्हारे पति को भेजो मीटिंग के लिए. तुम्हें जाने की क्या जरूरत है? उर्मिला ने कहा कि उन्हें नहीं भेज सकती. चार साल पहले हमारी शादी टूट चुकी है. इसलिए ये जिम्मेदारियां मुझे ही निभानी है. जाना तो मुझे ही है. यह बात सुनकर हम दोनों को बहुत बुरा लगा. मैंने कहा इतना सब कुछ हुआ, फिर भी कभी बताया नहीं. तुम इतनी कठिन परिस्थितियों से गुजर रही हो और आज भी काफी संघर्ष करना पड़ रहा होगा. सिंगल पैरेंट होना कोई मजाक नहीं! तुम्हें देखकर कभी लगा ही नहीं कि तुम्हें इतने कठिनाइयों का सामना करना पड़ा होगा. राधा ने उर्मिला से पूछा कि ऐसा क्या हुआ जो रिश्ता टूटने की नौबत आन पड़ी. तब उर्मिला ने बताया

कि पति की नशे की लत के कारण हमरा घर बर्बाद हुआ. उसका पति आटो चलाता था. गलत लोगों की संगत में उसे शराब और गांजा पीने की लत लग गयी. उर्मिला ने बताया कि पहले तो काम पर जाते भी थे. बाद में दिनभर नशे में रहने के कारण काम पर जाना ही बंद कर दिया. जब पैसे की किल्लत होने लगी तो घर से ही पैसे चुराना शुरू कर दिया. कई बार मुझसे पैसे छीन लिया करते थे. उनपर पैसे खर्च करके नशामुक्ति केंद्र भेजा. लेकिन दोस्तों की संगत में आते ही फिर नशा शुरू कर दिया. उन्हें घर-परिवार, बच्चे किसी से कोई वास्ता नहीं था. उन्हें तो बस 24 घंटे नशे में ही रहने में आनंद आता था. हर रोज के झगड़े और शोर शराबे के कारण मैं तंग आ गयी थी. पति के सुधरने के कोई आसार नज़र नहीं आ रहे थे. बच्चों के भविष्य की चिंता सताने लगी थी. ऐसे में रोज-रोज की झंझट से छुटकारा पाने का निश्चय किया और पति से तलाक ले लिया. बच्चे को अच्छा जीवन देने के लिए अकेले ही संघर्ष करने का विकल्प चुन लिया और अब तो बस अपने बच्चों को एक अच्छा नागरिक बनाना यही जीवन का मकसद है. मेरे बटे को भी मेरी परेशानियों का अहसास है. इसलिए वह भी बहुत मेहनत कर के पढ़ रहा है. हमेशा अच्छे अंक प्राप्त करके पास हो रहा है. बेटी भी बड़ी हो रही है. उसे भी पढ़ाना है और अपने पैरों पर खड़ा करना है, ताकि अगर बेटी को मेरी ही तरह किसी समस्या का सामना करना पडे तो कम से कम वह सक्षम तो रहे. अपने पैरों पर खड़ी हो सके और किसी भी परिस्थिति का सामना करने की हिम्मत और आत्मविश्वास उसमें हो. हमने भी उर्मिला को बच्चे की शिक्षा में कुछ भी सहायता चाहिए होगी तो निसंकोच पूछने के लिए कहा और हर संभव मदद करने का आश्वासन दिया.

बहरहाल मेरा जन्मदिन पास आ रहा था. इस बार मैंने कॉलेज के दोस्तों के साथ पार्टी मनाने की योजना बनाई थी. इस संबंध में दोस्तों से फोन पर बात भी की थी. इन कॉलेज के दोस्तों में से विशाल भी एक था. इसीलिए उसे भी पार्टी के बारे में बताना ही था. वरना बाद में पार्टी के बारे में पता चलता तो वह नाराज़ हो जाता. तो मैंने विशाल को फोन मिलाया और उसे पार्टी के बारे में बताया. लेकिन उसने पार्टी में आने से साफ मना कर दिया. वह कहने लगा कि वह आजकल बहुत तनाव में है. इतनी परेशानियों में पार्टी में आने का बिल्कुल मन नहीं है. शेयर मार्केट नीचे गिर गया है. उसका बहुत नुकसान हुआ है और कोरोना माहामारी के चलते जमीन के दाम भी नीचे गिर गए हैं. उसके प्लॉट की कीमत घट गई है. कहीं कोई प्राफिट नज़र नहीं आ रहा है. मैंने कहा भाई शेयर मार्केट नीचे गिर गया है तो फिसे से उपर चढ़ जाएगा. ये कोई नयी बात तो है नहीं. लाखों लोगों ने शेयर मार्केट में पैसा लगा रखा है. तुम तो ऐसे बता रहे हो कि केवल तुम्हारा ही नुकसान हुआ है. रही बात जमीन की तो इस कोरोना माहामारी से उबरने के बाद हालात फिर से बदलेंगे ही. जमीन के दाम फिर आसमान छूने लगेंगे. जिस अनुपात में जनसंख्या बढ़ रही है उसी अनुपात में जमीन के दाम भी बढ़ेंगे ही. आखिर सभी को अपने सपनों का घर बनाने के लिए जमीन तो चाहिए ही. इस समय थोड़ा सब्र रखने की जरूरत है. लेकिन वह मेरी बात समझने को तैयार ही नहीं था. पार्टी में शामिल होने से मना कर रहा था. अंत में मैंने कहा कि कम से कम अपने तनाव को दूर करने के लिए ही सही, पार्टी में जरूर आना. दोस्तों के पास शिकायतें तो हमेशा ही करते रहते हो कभी-कभी उनके जन्मदिन की खुशियों में भी शामिल हो जाया करो.

छुट्टी का ही दिन होने की वजह से कोई खास काम नहीं था. फुर्सत होने के कारण मेरे दिमाग में तरह तरह के विचार आने लगे. मैं सोचने लगा कि एक तरफ कामवाली बाई उर्मिला है. उर्मिला के जीवन में काफी संघर्ष है. तलाक के बाद उसे अकेले घर की सभी जिम्मेदारियां निभानी पड़ रही हैं. बच्चे की शिक्षा, घर का खर्च, बेटी की शिक्षा और शादी आदि काम उसे निपटाने हैं. इन कठिन परिस्थितियों में भी न तो वह कभी शिकायत करती है न ही उसके चेहरे पर तनाव नज़र आता है. वह तो बस दिन रात संघर्ष करती रहती है. खुद भी खुश रहती है और अपने आस-पास के माहौल को भी खुश रखती है. इस तरह कठिन परिस्थितियों का सामना करना उसने किसी स्ट्रेस मैनेजमेंट की क्लास में जाकर नहीं सीखा. न ही सकारात्मकता पर लिखी गई किताबें पढ़ी. वह तो बस कठिनाइयों से लड-लढड कर सीख गई. दूसरी तरफ उच्च शिक्षा प्राप्त सरकारी अफ़सर विशाल है. उसके माता-पिता काफी सुख सुविधाएं और संपत्ति छोड़ कर गए. फिर भी वह हमेशा नाराज़ रहता है और तरह- तरह की शिकायतें करता रहता है. आसपास के माहौल को भी नकारात्मक कर देता है. इसी आदत की वज़ह से कोई दोस्त उसके साथ समय व्यतीत करना नहीं चाहता. इतना पढ़ा लिखा होने के बाद भी यह बात उसे समझ में नहीं आती. इस तरह इन्सानों की दुनिया तरह तरह के लोगों का जमावडा है. हर किसी की अपनी सोच होती है. हर किसी की अलग अलग समस्याएं हैं और उनसे निपटने के अलग अलग तरीके. कुछ लोग प्रतिदिन कड़ा संघर्ष कर जीवन यापन करते हैं, तो कुछ लोग हर परिस्थिति में नकारात्मक पहलुओं को सोच सोच कर निराश होते रहते हैं. एक ओर सकारात्मकता और मोटिवेशन पर किताबें पढ़ना तो बहुत आसान है. लेकिन उन किताबों में दिए गए ज्ञान और सिद्धान्तों को अपने जीवन में लागू करना और उसके अनुसार जीवन व्यतित करना बहुत मुश्किल है. तो दूसरी ओर कम पढ़े लिखे लोग जिन्हें न किताबें पढ़ने का समय होता है न उसमें रूचि होती है. लेकिन वे अपने प्रतिदिन के संघर्ष से अपने जीवन में धीरे धीरे ही सही निरंतर आगे बढ़ते रहते हैं. समस्याओं का सामना करने का तरीका ही व्यक्ति के व्यक्तित्व को पूरी तह बदल कर रख देता है. इस तरह हर किसी का जीवन के प्रति एक अलग नज़रिया होता है.

श्री शैलम देवस्थानम

अमित कुमार
टीएम-II/दोनकोंडा
गुंटूर मंडल

मुझे पुनः श्री शैलम मल्लिकार्जुन भगवान के चरणों में मत्था टेकने का शुभ अवसर प्राप्त हुआ जिनके दर्शन मात्र से ही समस्त दुखों व पापों का नाश हो जाता है. पुराण में ऐसी महिमा का बखान है कि दो हजार बार गंगा में डुबकी लगाने, लाखों वर्ष काशी में सेवा करने या लाखों के दान से जो पुण्य की प्राप्ति नहीं होती, वह इनके दर्शन मात्र संभव हो पाता है. शैव मतानुसार शिव अति सूक्ष्म होने के कारण केवल आत्मा रूपी दर्शन कराती भौतिक दर्शन के लिए ज्योतिर्लिंग रूप धारण किए हुए हैं, जनन व इस सृष्टि के आरंभकर्ता शिव ही हैं. आगम शास्त्र के अनुसार 84 कलियुग में 64 रूप में वर्णन किया गया है. परंतु समस्त भारतवर्ष की अलग-अलग जगहों में मुख्य रूप से 12 ज्योतिर्लिंग विराजमान हैं. सोमनाथ के बाद इसी की महिमा की जाती है. मेरे कार्य क्षेत्र गुंड्लकम्मा रेलवे स्टेशन से लगभग 118 कि.मी. की दूरी पर भौगोलिक रूप से समुन्नत ऊंचे-नीचे पहाडों के माथे पर हरे-भरे पेड़ - पौधे, औषधियों से सुशोभित श्री शैल महाक्षेत्र आन्ध्र प्रदेश के कर्नूल जिला, आत्मकूरू में नल्लामला अरण्य पर्वतों के बीच पतालगंगा नाम से उत्तर दिशा में प्रवाहित कृष्णा नदी के दाईं ओर विराजमान हैं, जिसकी समुद्र तट से उंचाई 487 मी. यानी 1500 फुट है. पौराणिक कथा के अनुसार त्रेतायुग में श्रीराम ने वनवास के समय माता जानकी के साथ सहस्त्र लिंग को प्रतिष्ठित किया था. द्रौपदी समेत पांडव बंधुओं ने भी यहां लिंग की स्थापना व पूजा की थी. इसके अलावा भी कई राजाओं की गाथा जुड़ी है. सच तो यही है कि यहां का मनोरम दृश्य मन को छू जाता है. मैंने अपने रेल सहकर्मी मित्रों के साथ निजी वाहन के द्वारा विहारी कांवरिया गीतों में झूमते वादियों को चूमते हुए बाबा नगरी की यात्रा की, जिसे शब्दों से बयां नहीं कर सकता हूँ. मजा आ गया सच में ! नेक काम में देरी न करें, आप सब भी मन बना ले और एक बार श्री शैलम देवस्थानम की यात्रा जरूर करें.

जय भोलेनाथ.

बुढ़िया दादी

पूजा कुमारी साव
पत्नी श्री सतीश कुमार महतो
कनिष्ठ अनुवादक/सिवदू कारखाना मेट्टुगुडा

चारों ओर भाग-दौड वाली जिंदगी में कौन किसे देखता है? ऐसे में कोई घर पहुँच रहा था तो किसी को घर पहुँचने की जल्दी थी, औरतें, बच्चे, बूढ़े, सबको ट्रेन में चढ़ने की जल्दी थी शाम ढलने को था स्कूल कॉलेज सबकी छुट्टी हो गयी थी, रेलवे स्टेशन के पास आकर जब मैंने देखा तो एक बुढ़िया दादी 'घिसट-घिसट कर' चल रही थी। उसमें वैसे न शक्ति थी न ताकत, पर ट्रेन में चढ़ने की अपूर्व इच्छाशक्ति और जीजिविषा थी उसमें. एकाएक मैंने देखा कि चारों ओर शिक्षकगण, अन्य नौकरीपेशे, महिलाएं, स्कूल के बच्चे, दैनिक सामान विक्रेता, साथ ही कुछ ग्रामीण लोग स्टेशन पर ट्रेन आने के इंतजार में थे। गर्मी भी काफी थी। सबको जल्दबाजी थी परन्तु उस दिन भी ट्रेन प्रत्येक दिन की भाँति देर से ही आयी थी और जल्दी ही छूटने को थी। मैं अपने आसपास के लोगों को देख रही थी और अपने दोस्तों के साथ बातचीत करते हुए ट्रेन पर चढ़ने ही वाली थी कि एकाएक मैं देखती हूँ कि लेडिस बोगी में हर एक औरत, लड़की चढ़ी जा रही है और वह बूढ़ी दादी जिसका जिक्र मैंने पहले किया था वह भी चढ़ना चाह रही है पर हर एक व्यक्ति उसे ढकेलता, धकियाता हुआ आगे बढ़ रहा था. सबके मुंह में एक ही बात थी "दूर बाब, चापवेऊ ना, चापतेऊ देबे ना, एरा ना सोत्ती, माइरी..." (मतलब दूर बाबा, न तो चढ़ेंगी, न ही चढ़ने देंगी, ये लोग भी न...) कुछ लोग कह रहे थें 'उम्र तो देखो, चढ़ नहीं सकती फिर भी..., कुछ का कहना था "जोदि ना चापते पारबे, ताऊ चोले आसे केनो, के जाने, बाबा रे बाबा, आमादेर के जालिए दिलो" (अर्थात चढ़ नहीं सकती फिर भी चली आती है, क्यों क्या जाने, बाप रे बाप, हम लोगों को जला दी है.) मैंने किसी एक को भी ऐसा नहीं पाया जो उसे चढ़ाकर स्वयं चढ़े. सारे दृश्य को देख ही रही थी कि गाड़ी का हॉर्न बजा। मैं बची रह गयी और वह बुढ़िया दादी। तभी ड्राइवर ने बाहर की ओर झाँका और मेरी नज़र उसपर पड़ी। मैंने उन्हें देखा तो मुझे देख रहे थे और आँखों से इशारा कर रहे थे कि तुम आराम से चढ़ो और मैं तब बुढ़िया दादी को पकड़ कर ट्रेन पर चढ़ाने की कोशिश कर रही थी। मन में बहुत सारे प्रश्न थे। हमारा समाज ऐसा ही है। आज लोग इतना व्यस्त हो गए हैं कि आस-पास हमारे घर के सदस्यों से कोई मिलता है तो उसकी मदद के बजाय हम उन्हें सुना देते हैं खासकर वृद्धों को आखिर क्यों?

मैंने संभालकर उसे चढ़ाया फिर, स्वयं ट्रेन में चढ़ते ही उस वृद्ध स्त्री का हाथ मेरे सिर पर पाया. उसके द्वारा कहे गये ये वाक्य आज भी मेरे कानों में गूंजती है 'सूखे थाक मां,भोगोवान तोर मोंगोल कोरूक। केऊ आमाके चापालो ना तूइयो जोदि ना चापातिस आमि ओखानेई रोये जेताम'. मैं उस स्टेशन से घर तक की लगभग चालीस किमी की दूरी तय की और मन ही मन सोचती रही कैसा यह हमारा शिक्षित सभ्य समाज है? जहाँ आज इतनी व्यस्तता, इतनी निर्ममता है कि कोई किसी की मदद को आगे नहीं बढ़ता वो भी एक लाचार जीर्ण-शीर्ण, वृद्ध स्त्री के लिए फिर हमारा पढ़ना-लिखना किस काम का?

स्वामी विवेकानन्द की बातें भी मन में चल रही थी- "यदि शिक्षित बनकर हम किसी के काम नहीं आ पाए, किसी को शिक्षित न बना सकें तो हमारा पढ़ना, शिक्षित होना किसी काम का नहीं।"

मैं इंसान न होता

सतीश कुमार महतो
कनिष्ठ अनुवादक/सिवदू/कारखाना/मेट्टुगुडा

काश मैं इंसान न होता
बाकी सब कुछ होता
पर इंसान न होता
पशु होता, पक्षी होता
पेड़ होता, पौधा होता
नदी होता, सागर होता
मिट्टी होता, पत्थर होता
कुछ भी क्यों न होता
पर इंसान न होता ।

क्योंकि इंसान होकर भी
मशीन हूँ, कोल्हू का बैल हूँ
हर पल तृष्णाओं और
इच्छाओं से बेचैन हूँ।
अब न कुछ अपना है।
सब कुछ जैसे एक सपना है।

माँ

दीपक कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक
राजभाषा विभाग, गुंतकल

घुटनों के बल घुटुरुन चलते,
न जाने कब पैरों पर खड़ा हुआ,
तेरी ममता की छाँव तले,
जाने कब मैं बड़ा हुआ,

जीवन के हर मोड़ पर,
तूने मुझे संभाला माँ,
जितनी भी उलझनें थी जीवन में,
तूने उन्हें सुलझाया माँ,

जीवन पथ में जब भी मुझे मिली निराशा,
तूने ही तो आशा की ज्योति जलाई माँ,
निराशा में आशा का,
पीड़ा में धैर्य का पाठ,
तूने मुझे पढ़ाया माँ,

आज मैं जो कुछ भी हूँ माँ,
तेरे आशीष का है ये फल,
मुझ जैसे अभागे को अल्प ही सही ,
मिला तेरा प्रगाढ़ प्यार माँ,

आज भी लगता तू है यहीं कहीं माँ,
देख रही अपने लाल को,
बन जाते सारे बिगड़े काम,
बस तेरे ही स्मरण से माँ,

यू ही अपना आशीष सदैव,
मुझ पर बनाए रखना माँ,
मेघ बन यूं ही स्नेह की अमृत धार
मुझ पर सदैव बरसाना माँ.

****

ट्रैकमैन का जीवन

नरेश कुमार महावर
तकनीशियन II, मैसन
वरि.से.इंजि/का/वाटर वर्कस/गुंतकल

साहब यूं ही नहीं कहलाता कोई ट्रैकमैन

एक ट्रैकमैन का जीवन अथक परिश्रम व रेलवे ट्रैक के तापमान में तपकर होता है तैयार

सर्दी, गर्मी, बरसात, पहाड़, जंगल, कांटेदार, पथरीली राहें

या फिर हो मौसम की मार

अडिग रहता भूधर सा वह अपने कर्मपथ पर

साहब यूं ही नहीं कहलाता कोई ट्रैकमैन

चल पड़ता है लिए हथौड़ा, सब्बल, पीठ बैग, लालटेन

न रहती परवाह उसे चाहे तप्त गर्मी हो या फिर तुषार पाला

दिवस हो या फिर रात्रि का गश्त

निरंतर करता है वह पटरी की निगरानी

क्योंकि पता है उसे अपनी जिम्मेदारी

साहब यूं ही नही कहलाता कोई ट्रैकमैन

तप्त धूप में हाथों में लिए सब्बल से करता है वह

ट्रैक की मरम्मत

नहीं परवाह उसे चाहे हाथों में हो जाए फफोले

यात्रियों की सुगम यात्रा व सुरक्षा हेतु

करता तत्परता से अपना काम

साहब यूं ही नहीं कहलाता कोई ट्रैकमैन

कहीं न हो जाए कोई चूक

जिसकी भरनी पड जाए अपूरणीय क्षति

अपनी जान हथेली पर लेकर

चलते हैं कर्मपथ पर ये निरंतर

साहब यूं ही नहीं कहलाता कोई ट्रैकमैन

दोस्ती

ऋषिकेश मीना
वरिष्ठ लिपिक, वरि. मं. वा प्र. कार्यालय
गुंतकल मंडल

दोस्तों से मिला तो पता चला,
जिंदगी तो वहीं थीं जहां ये कम्बख्त थे।
शामों में भी रौनक लौटी वरना तो,
सुबह-शाम सिर्फ एक वक्त ही थे।
कुछ अजनबी से थे वो अजनबी ही रहे,
कुछ हर मौके पे थे, कुछ मौकापरस्त थे।
आज तकलीफें और परेशानियां भी हैं,
मगर दोस्तों के साथ थे तो बड़े मस्त थे।
आज कितना भी कमा ले वह कम ही रहेगा,
क्यों कि वो ही सारी दौलत, ताज और तख्त थे।
वक्त मिले तो बात कर लिया करो यारो,
ना सोचो कि कौन सही और कौन गलत थे।

हिमालय की पुकार

रोबिन कुमार
कार्यालय अधीक्षक
वरिष्ठ मंडल कार्मिक अधिकारी कार्यालय
गुंतकल

हिमालय कह रहा है, जमाना बदल रहा है,
भारत की धरती पे दुश्मन बोल रहा है,
उत्तर का मैं प्रहरी, दक्षिण में हिन्द,
पूरब में है बंगाल की खाड़ी, पश्चिम में अरब,
जागो-जागो भारत वासी तुम क्यों सो रहे हो।

हिमालय कह रहा है, जमाना बदल रहा है,
कश्मीर हो या डोकलाम, नेपाल हो या गलवान,
फना के मंजर में चुप क्यों है हिन्दुस्तान,
सावधान हो वीर सपूतों, मेरा मन खौल रहा है।

हिमालय कह रहा है, जमाना बदल रहा है,
मैं तेरी ढ़ाल हूँ, तू मेरा विश्वास है,
रग-रग में गंगा – यमुना, मेरी आखिरी साँस है।
मंजिल तेरी दूर नहीं जब तक यह दीवार खड़ा है।

हिमालय कह रहा है, जमाना बदल रहा है,
कभी आर्यभट्ट कभी कलाम , ये हैं सच्चे राष्ट्र के महान,
वतन पे मिटने वालों, मेरा शत-शत बार प्रणाम,
ब्रह्मोस, त्रिशूल, अग्नि से डिजीटल दुनिया डोल रहा है।

हिमालय कह रहा है, जमाना बदल रहा है।
भारत की धरती पे दुश्मन बोल रहा है.

मेरी द्वारिका नगरी की यात्रा

ज्ञान रंजन
मेल एक्स्प्रेस ट्रेन मैनेजर, तिरुपति
गुंतकल मंडल

द्वारिका रेलवे स्टेशन पर पहुँचने के बाद ऑटोवाले के व्यवहार ने मुझे अचंभित कर दिया. ऑटो पर बैठते ही ऑटो वाले ने हमलोगों से कहा कि जोर से बोलिये.. द्वारिकाधीश की जय और प्रभु श्री कृष्ण आपके मन की सारी मुरादे पूरी करे. द्वारिकाधीश मंदिर से कुछ दूरी पर हमने होटल लिया. नित्य क्रिया से निवृत होकर हमलोग द्वारिकाधीश मंदिर पहुँचे. मंदिर की विशालता, भक्तों के प्रभु श्रीकृष्णा के प्रति आस्था, राधे - कृष्ण के जय जयकारों से गुंजित भक्तिमय माहौल ह्रदय में स्पंदन उत्पन्न कर रहा था. हमने मंदिर प्रांगण में करीब 01 घंटे बिताया. हम वक़्त निकालकर शंकराचार्य द्वारा स्थापित मठ भी गए. मंदिर के सामने मिठाई दुकानों में दूध से बने मिठाइयों की अपनी विशेषता थी. हमलोगों ने दोपहर में गुजराती भोजन का आनंद लिया. उसके बाद सपरिवार टैक्सी लेकर रूक्मणी मंदिर गए. हमें जीवन में पहली बार प्रभु श्री कृष्ण की धर्मपत्नी रूक्मणी देवी मंदिर जाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ. वहाँ से हमने गोपिका के तालाब की ओर रुख किया. तालाब को देखने के बाद प्रभु श्री कृष्ण से संबंधित स्थानों को देखने की लालसा बढ़ी. उसके बाद हमारा अगला पड़ाव नागेश्वर ज्योतिर्लिंग था. नागेश्वर ज्योतिर्लिंग का दर्शन करना हमारे लिए अनोखा अनुभव था. जिस विषय के बारे में किताबों में पढ़ा था. आज उन्हें साक्षात देखा. हमने ज्योतिर्लिंग का दर्शन करने के बाद बेट द्वारिका के लिए निकल पड़े. सफ़र का रोमांच बढ़ते जा रहा था . समुद्र के किनारे टैक्सी को छोड़ हमलोग पानी के जहाज में बैठकर बेट द्वारिका के लिए निकल पड़े . रास्ते में पानी के जहाज के ऊपर धवल पंक्षियों के झुंड उड़ रहे थे. लोग उन्हें मूंगफली और तरह - तरह के बीज खाने के लिए दे रहे थे. समुद्र के रास्ते करीब आधे घंटे की यात्रा हमारे जीवन के लिए अलौकिक रही. बेट द्वारिका, जो कि एक द्वीप है, इसके चारों ओर अरब सागर है. बेट द्वारिका में स्थित प्रभु श्री कृष्ण के भव्य मंदिर गए और दर्शन किए. प्रभु श्री कृष्ण मथुरा नगरी को छोड़ कर बेट द्वारिका में ही बस गए थे और वहीं से अपना राजपाट चलाते थे. मंदिर की विशालता और अनोखी कहानियों को जानकर हमलोग बहुत खुश हुए. प्रभु श्री कृष्ण द्वारा परम मित्र सुदामा को तीन मुट्ठी चावल देने वाले स्थान को भी देखा. कहा जाता है कि मीराबाई ने जीवन के अंतिम पड़ाव बेट द्वारिका में ही बिताया था और यहीं पर अपने प्राण त्याग दिया था. करीब दो घंटे हम बेट द्वारिका में रहे. आज के परिपेक्ष्य में बेट द्वारिका पर अवैध कब्ज़ा कर लिया गया है. अहमदाबाद हाई कोर्ट के निर्णय से अवैध निर्माण को तोड़ा जा रहा है. भारत सरकार के द्वारा सिगनेचर ब्रिज बनाया जा रहा है, जो कि ओखा को बेट द्वारिका से जोड़ेगा. हमलोग पानी के जहाज से वापस बेट द्वारिका से लौट आए और ज्योतिर्लिंग सोमनाथ मंदिर के दर्शन हेतु निकल पड़े.

वर्ष के दौरान प्रधान कार्यालय, दक्षिण मध्य रेलवे की राजभाषा संबंधी गतिविधियां

संसदीय राजभाषा की दूसरी उप समिति द्वारा निरीक्षण

दि.17.06.2022 को सिकंदराबाद स्टेशन का

दि.18.06.2022 को लालागुडा कारखाना का

दि.25.08.2022 को रेल सुरक्षा बल प्रशिक्षण केंद्र, मौलाअली का

दि.25.08.2022 को सिकंदराबाद मंडल कार्यालय का

दि.21.08.2023 को विजयवाडा मंडल कार्यालय का

दि.21.08.2023 को हैदराबाद मंडल कार्यालय का

दि.21.08.2023 को रायनपाडु कारखाना का

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन

दि.28.06.2023, दि.15.03.2023, दि.16.12.2022, दि.29.09.2022

दक्षिण मध्य रेलवे पर राजभाषा के प्रयोग-प्रसार के क्षेत्र में हो रही प्रगति की समीक्षा करने के लिए क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों का आयोजन महाप्रबंधक, दक्षिण मध्य रेलवे की अध्यक्षता में आयोजित की गई. सभी प्रमुख विभागाध्यक्षों, मंडल रेल प्रबंधकों तथा मुख्य कारखाना प्रबंधकों ने इन बैठकों में भाग लिया.

हिंदी गृह पत्रिका 'रेल सुधा' का विमोचन

क्षेत्रीय राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक में इस रेलवे की हिंदी गृह ई-पत्रिका 'रेल सुधा' का विमोचन किया गया.

हिंदी पखवाडा का आयोजन

दक्षिण मध्य रेलवे के मुख्यालय में 14 सितंबर से 29 सितंबर, 2022 तक हिंदी पखवाडा मनाया गया. माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी की अध्यक्षता में सूरत, गुजरात में 14-15 सितंबर, 2022 को आयोजित हिंदी दिवस एवं दूसरे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन में इस रेलवे के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) तथा राजभाषा अधिकारी उपस्थित रहे. हिंदी पखवाडा के दौरान इस रेलवे के प्रधान कार्यालय सहित सभी मंडलों तथा कारखानों में विभिन्न प्रतियोगिताओं व कार्यक्रमों का आयोजन किया गया.

पुरस्कार वितरण

हिंदी में अधिकाधिक व प्रशंसनीय कार्य करनेवाले 07 अधिकारियों तथा 10 कर्मचारियों को महाप्रबंधक व्यक्तिगत नकद पुरस्कार योजना के अंतर्गत महाप्रबंधक महोदय के कर कमलों से पुरस्कार प्रदान किए गए.

हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

हिंदी पखवाडा के दौरान प्रधान कार्यालय स्तर पर दि.19.09.2022 को हिंदी निबंध प्रतियोगिता, दि.20.09.2022 को टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिता, दि.21.09.2022 को हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन किया गया.

हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन

दि.23.09.2022 को क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी पुस्तक समीक्षा प्रतियोगिता का आयोजन किया गया. इसमें हिंदी के महान कवि कबीरदास के साहित्य पर समीक्षा प्रस्तुत की गई. इस प्रतियोगिता में प्रधान कार्यालय, निर्माण संगठन, क्षेत्रीय रेल प्रशिक्षण संस्थान, सिकंदराबाद मंडल, विजयवाडा मंडल, गुतंकल मंडल, नांदेड मंडल, लालागुडा कारखाना, रायनपाडु कारखाना की टीमों ने भाग लिया.

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

प्रधान कार्यालय के विभिन्न विभागों में कार्यरत कर्मचारियों के लिए दि.22.09.2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन

क्षेत्रीय हिंदी नाटक प्रतियोगिता का आयोजन 11 और 12 सितंबर, 2023 को किया गया. इस प्रतियोगिता में कुल छः नाटकों का मंचन किया गया. रंगमंच से जुडे जानी-मानी हस्तियों को इस प्रतियोगिता के निर्णायकों के रूप में आमंत्रित किया गया था.

सिकंदराबाद मंडल द्वारा मंचित नाटक
'शुभ मुहूर्त'

विजयवाडा मंडल द्वारा मंचित नाटक
'सर्प नीति'

गुंतकल मंडल द्वारा मंचित नाटक
'हम रक्षक रेलवे के'

लालागडा कारखाना द्वारा मंचित नाटक
'आज का परिवार'

नांदेड मंडल द्वारा मंचित नाटक

हैदराबाद मंडल द्वारा मंचित नाटक

‘हमारी भाषा, हमारी पहचान’	‘कल हो न हो’

इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान विजयवाडा मंडल द्वारा मंचित नाटक ‘सर्प नीति’ को, द्वितीय स्थान सिकंदराबाद मंडल के नाटक ‘शुभ मुहूर्त’ को तथा तृतीय स्थान हैदराबाद मंडल द्वारा मंचित नाटक ‘कल हो न हो’ को प्राप्त हुआ. इनके अलावा रेलवे बोर्ड द्वारा निर्धारित विभिन्न वर्ग, जैसे कि सर्वश्रेष्ठ अभिनेता/अभिनेत्री, सर्वश्रेष्ठ सहायक अभिनेता/अभिनेत्री, सर्वश्रेष्ठ बाल कलाकार, सर्वश्रेष्ठ निर्देशन, सर्वश्रेष्ठ स्क्रिप्ट, संगीतकार, रूप-सज्जा, मंच-सज्जा, वेश-भूषा, प्रकाश परिकल्पना आदि के लिए पुरस्कार प्रदान किए गए.

क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन

क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी निबंध तथा टिप्पण व प्रारूप लेखन प्रतियोगिताओं का आयोजन दि.26.07.2023 को किया गया, जिनमें प्रधान कार्यालय सहित सभी मंडलों व कारखानों के क्रमशः 28 तथा 23 कर्मचारियों ने भाग लिया.

क्षेत्रीय स्तर पर हिंदी वाक् प्रतियोगिता का आयोजन दि.27.07.2023 को किया गया, जिसमें प्रधान कार्यालय सहित सभी मंडलों व कारखानों के 22 कर्मचारियों ने भाग लिया.

प्रधान कार्यालय स्तर पर दि.10.07.2023 और दि.11.07.2023 को हिंदी निबंध, टिप्पण व प्रारूप लेखन और हिंदी वाक् प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें विभिन्न विभागों के क्रमशः 13, 15 तथा 14 कर्मचारियों ने भाग लिया.

राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन

संसदीय राजभाषा समिति द्वारा किए गए निरीक्षण के दौरान समिति को दिए गए आश्वासनों के अनुपालन में प्रमुख मुख्य सुरक्षा आयुक्त की अध्यक्षता में दि.28.10.2022 को रेल सुरक्षा बल प्रशिक्षण केंद्र, मौलाअली में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की प्रथम बैठक का आयोजन किया गया.

हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन

मुख्यालय के वाणिज्य तथा लेखा विभाग के कर्मचारियों के लिए दि.30.05.2022 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया, जिसमें राजभाषा नीति, नियम विषय पर कक्षा ली गई तथा सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग एवं ई-ऑफिस में हिंदी में काम करने से संबंधी जानकारी दी गई.

प्रधान कार्यालय में कार्यरत विभिन्न विभागों के कर्मचारियों के लिए दि.23.01.2023 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

राजभाषा संगठन की समीक्षा बैठक का आयोजन

मुख्य राजभाषा अधिकारी एवं प्रमुख मुख्य कार्मिक अधिकारी श्री राजीव किशोर की अध्यक्षता में राजभाषा संगठन की समीक्षा बैठक का आयोजन दि.11.01.2023 को किया गया.

उप महाप्रबंधक (राजभाषा) की अध्यक्षता में दि.27.02.2023 को इस रेलवे के राजभाषा संगठन के अधिकारियों व अनुवादकों की एक बैठक आयोजित की गई.

अनुवाद कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम

इस रेलवे में नियुक्त नए कनिष्ठ अनुवादकों के लिए प्रधान कार्यालय में दि.15.02.2023 से दि.17.02.2023 तक अनुवाद कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया. इसमें प्रधान कार्यालय, सिकंदराबाद मंडल, हैदराबाद मंडल, निर्माण संगठन, लालागुडा कारखाना, इरिसेट के कनिष्ठ अनुवादकों ने भाग लिया.

कुमारी शेक शमा
नवीं कक्षा, केंद्रीय विद्यालय
पुत्री श्री शेक खाजा
रसायन व धातुविज्ञान

ललिता सायन्ना
कार्यालय अधीक्षक
प्रमुयांजी/का/सिकंदराबाद

Scanned with CamScanner

बी.ज्ञानिता
10वीं कक्षा
सुपुत्री श्रीमती पी.पावनी
कनिष्ठ अनुवादक, विजयवाडा

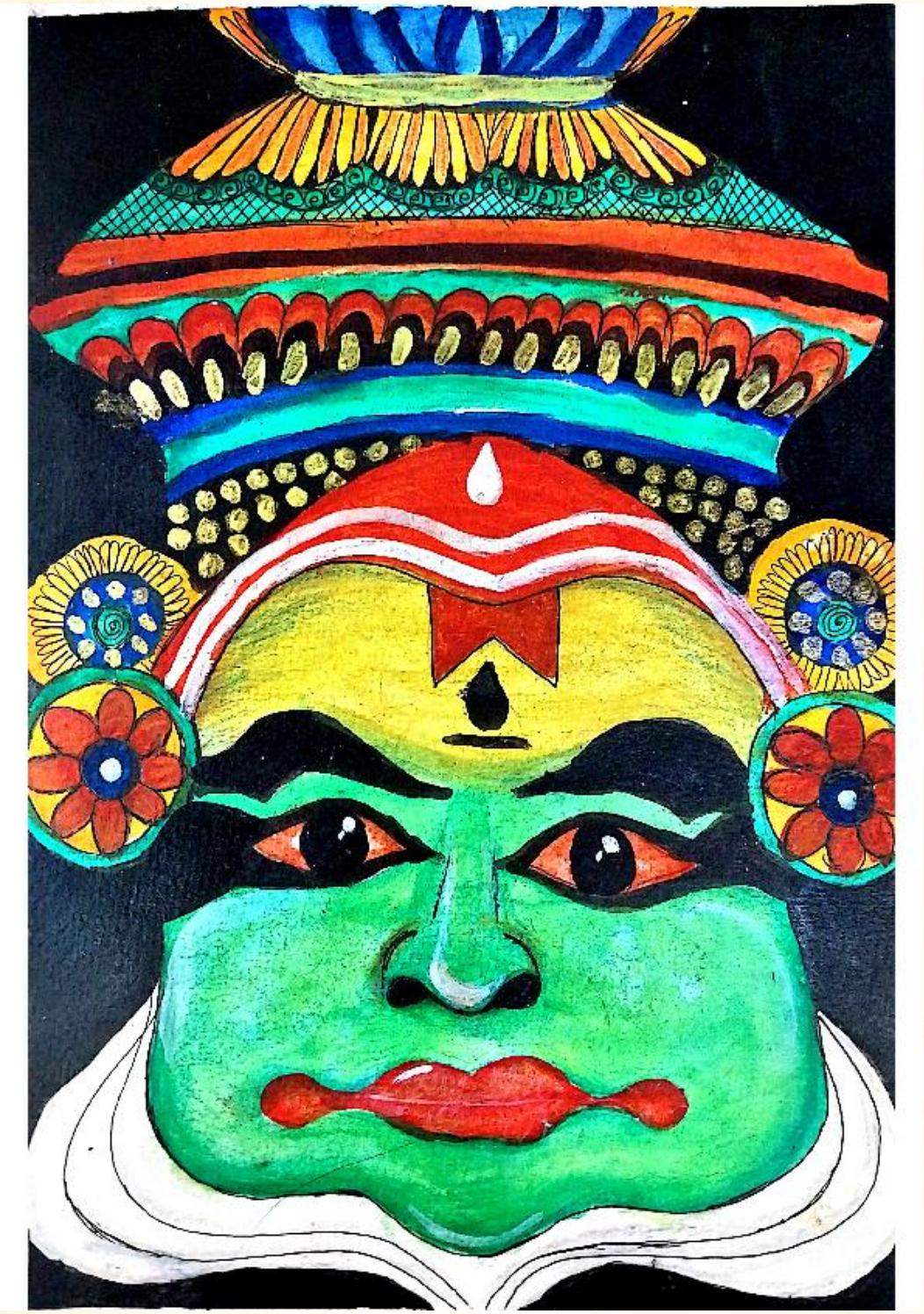

अनन्या
5वीं कक्षा
सुपुत्री श्री अखिलेश कुमार
स्टेशन अधीक्षक, विजयवाडा

अरुण कुमार
तकनीशियन-III
ट्रैकमशीन
गुंतकल

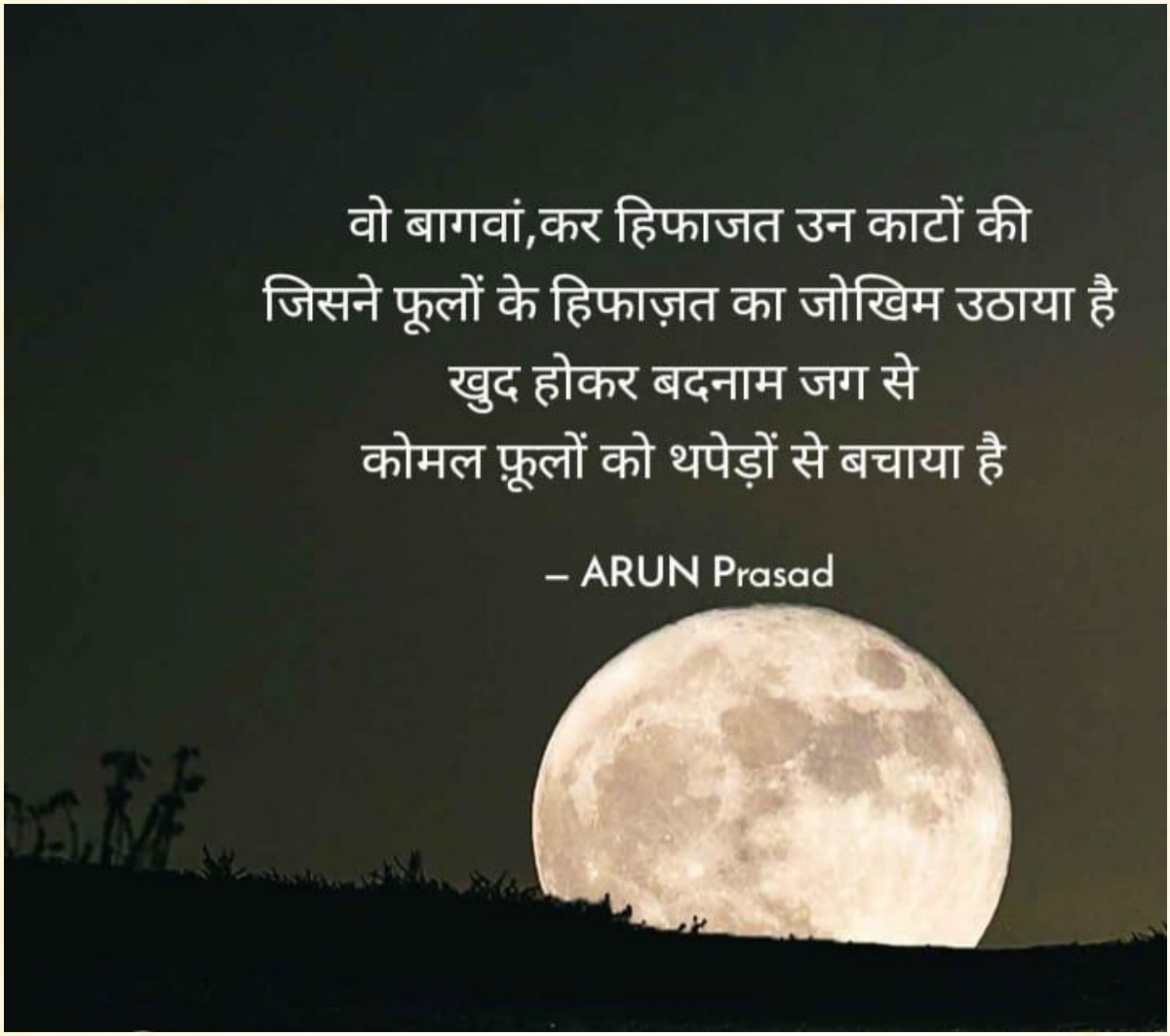

प्रथम स्थान प्राप्त नाटक 'सर्प नीति' की टीम

द्वितीय स्थान प्राप्त नाटक 'शुभ मुहूर्त' की टीम

तृतीय स्थान प्राप्त नाटक 'कल हो न हो' की टीम